



अखिल भारतीय राठी कार्यरथ संगठन, दिल्ली



स्मारिका विजया मिलन 2021



CHAITANYA PROJECTS
CONSULTANCY PRIVATE LIMITED
(CPCPL)

Defined by... Conception, Design & Planning

WHAT WE DO : We deliver high end solution with proven quality in transportation and infrastructure sector.



REACH US !

C-5, 2nd Floor, R.K.Tower, Sector-4,
Vaishali, Ghaziabad -201012

Phone: +91-120-4326474 ; 09818860992

E-mail: chaitanya.projects@gmail.com



**DR. RAJIV
SINHA**

GASTRO CLINIC

With High Tech Equipments and
Ultimate Care



**THE PREMIER GASTROENTEROLOGY CLINIC IN THIS REGION OF
THE STATE.**



**HIGH TECH
BUILDING**



**ULTIMATE
CARE**



**HELP
CENTRE**

BESIDE DURGA BARI, MASAKCHAK NEAR MANIK SARKAR CHOWK, BHAGALAPUR

Highlights : Souvenir 2021

- Executice Body
- Editorial
- Messages
- Durga Mandir
- Lifetime members
- Contributor list
- Memory and Sad demise
- Articles
- Achievement / Appreciation / Meritorious students
- Foundation day special
- Vrat-Tyohar

पत्रिका मे प्रकाशित विचार लेखकों के निजी हैं।
इनका संपादक या संस्था से सहमत होना जरुरी नहीं।
लेखों के प्रकाशन/संकलन मे पूरी सावधानी बरती गई है,
फिर भी अशुद्धि/त्रुटि के लिए संपादक समिति जिम्मेदार नहीं है।
धन्यवाद।

संपादक :

आशीष कुमार सिन्हा
sinhaashish1973@gmail.com

मार्गदर्शन एवं सहयोग :

प्रवीण कुमार घोष
pravinghosh@gmail.com
प्रभात कुमार घोष
prabhatghosh@gmail.com



Executive Body Member 2019-2021



Ajit Kumar Das



Nihar Ranjan



Abhinandan
Kumar Sinha



Nirupam Kumar
Sinha



Manas Kumar
Mitra



Sumit Das



Sadhan Kumar
Das



Punit Sinha



Pravin Kumar Das



Ashish Kumar
Sinha



Prafulla Kumar
Sinha



Amit Kumar Das



Sanjay Kumar
Sinha



Som Ranjan



Saurabh Ghosh



Naveen Kumar
Mitra



Tushar Kant
Ghosh



Prabhat Kumar
Ghosh



Amit Kumar Sinha



Sudesh Kumar
Ghosh



Uttam Kumar Das



Chandan Das



Manoj Kumar
Sinha



Pradeep Kumar



Snehendu Ghosh
Verma



Sujeet Kumar Das
Sinha



Sanjay Kumar
Sinha (Late)



Kaushal Kumar
Ghosh



Amarendra Kumar



Sumit Kumar



Amreshwar Prasad
Das



Ashok Ghosh

AKHIL BHARTIYA RADHI KAYASTHA SANGATHAN, NEW DELHI

EXECUTIVE MEMBERS 2019-2021

Name Of Members	Post	Mobile No.	Present Address	Permanent Address	
1	Ajit Kumar Das	President	9350214515	Chhatarpur	Kasba, Banka
2	Nihar Ranjan	General Secretary	9968062186	Dhaulakuan	Bhuriya, Bhagalpur
3	Abhinandan Kumar Sinha	Treasurer	9971295833	Mehrauli	Rupsa, Banka
4	Nirupam Kumar Sinha	Vice President	9310570751	Noida Extension	Rupsa, Banka
5	Manas Kumar Mitra	Vice President	9811114326	Lajpatnagar	Lakhanpur, Bhagalpur
6	Sumit Das	Vice President	9310015115	Munirka Vihar	Manoharpur, Bhagalpur
7	Sadhan Kumar Das	Vice President	9910108978	Noida Extension	Dumrahma, Banka
8	Punit Sinha	Joint Secretary	9650923023	Govindpuramm	Orai Jankipur, Banka
9	Pravin Kumar Das	Joint Secretary	8130298190	Vasundhra	Sujapur, Bhagalpur
10	Ashish Kumar Sinha	Joint Secretary	9911032813	Narela	Ranikitta, Banka
11	Prafulla Kumar Sinha	Joint Secretary	9899704052	Mayur Vihar	Mohanganj, Monghyr
12	Amit Kumar Das	Executive Member	9313515114	Munirka Vihar	Manoharpur, Bhagalpur
13	Sanjay Kumar Sinha	Executive Member	9818860992	Vaishali	Sujapur, Bhagalpur
14	Som Ranjan	Executive Member	9313009668	Kaushambi	Jagatpur, Banka
15	Saurabh Ghosh	Executive Member	9868531823	Uttam Nagar	Chara Badgaon, Banka
16	Naveen Kumar Mitra	Executive Member	9312277498	Ganeshnagar	Kunouni, Banka
17	Tushar Kant Ghosh	Executive Member	9871042633	Uttam Nagar	Lakhanpur, Bhagalpur
18	Prabhat Kumar Ghosh	Executive Member	9891237180	Pratap Vihar	Saidapur, Godda
19	Amit Kumar Sinha	Executive Member	9582820100	Gurgaon	Lakhanpur, Bhagalpur
20	Sudesh Kumar Ghosh	Executive Member	9990384135	Janakpuri	Lakhanpur, Begusarai
21	Uttam Kumar Das	Executive Member	8510013908	Faridabad	Pipra, Monghyr
22	Chandan Das	Executive Member	7082000372	Narela	Mukheria, Bhagalpur
23	Manoj Kumar Sinha	Executive Member	9213092233	Dwarka	Manoharpur, Bhagalpur
24	Ppradeep Kumar	Executive Member	9654287784	Indrapuram	Singhnan, Banka
25	Snehendu Ghosh Verma	Executive Member	9999966968	Dwarka	Bihpur, Bhagalpur
26	Sujeet Kumar Das	Executive Member	8588804152	Noida	Jagatpur, Banka
27	Sanjay Kumar Sinha (Late)	Executive Member	9953999734	Faridabad	Manoharpur, Bhagalpur
28	Kaushal Kumar Sinha	Executive Member	8800836966	Mehrauli	Laxmipur, Banka
29	Amarendra Kumar Ghosh	Executive Member	9871003459	Mahavir Enclave	Bagrus, Begusarai
30	Sumit Kumar	Executive Member	8859500377	Noida Extension	Jagatpur, Banka
31	Amreshwar Prasad Das	Executive Member	9654111272	Faridabad	Pipra, Monghyr
32	Ashok Ghosh	Executive Member	9643353568	Indrapuram	Laxmipur, Banka



सम्पादकीय



आशीष कुमार सिन्हा
संपादक, स्मार्टिका विजयामिलन
अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली

हमारी शारीरिक भाषा अविलम्ब हमें यह संकेत दे देती है कि हम किसी कार्य को करने के लिये विवश हैं या उत्साहित। यदि विवश हैं तो हमारी सफलता संदेहास्पद हो जाती है या यूँ कहें कि एक बहुत बड़े प्रश्नचिह्न के दायरे में आ जाती है, किन्तु यदि हम उत्साहित हैं तो हमारी सफलता शत-प्रतिशत सुनिश्चित हो जाती है। उत्साह हमारी सफलता के रास्ते में आने वाली तमाम बाधाओं से लड़ने के लिए हमें आन्तरिक ऊर्जा प्रदान करता है। यही उत्साह हमें कठिन परिश्रम करने हेतु प्रेरित भी करता है और सफलता की उस कूँजी का निर्माण भी करता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, उत्साहसंपूर्ण उमंग का नाम उत्साह है।

उत्साह वस्तुतः कई मनोवृत्तियों से मिलकर बना है — उमंग, साहस, जोश, हौसला, संकल्प आदि। उत्साह को आलस्य के ठीक विपरीत माना जाता है। आलसी व्यक्ति जैसे अपने साथ अपने परिवार को भी पतन की ओर ले जाता है, उत्साही मानव अपना और अपने परिवार दोनों का मार्ग प्रशस्त करता है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि उत्साह हमारी शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की थकान का शत्रु है।

दूसरी तरफ़ विवशता हमारे उत्साह के क्षीण होने का प्रमाण है। अब सवाल यह भी उठता है कि हमारी विवशता का मूल कारण है क्या? यदि हम पूरी सूक्ष्मता व गहराई से इसका आकलन करें तो हम पायेंगे कि हम स्वयं ही अपनी विवशता के लिये जिम्मेदार हैं। दूसरों पर लौंछन लगाना अपनी कमियों को छुपाने का सहज तरीका है। इस संदर्भ में महाकवि डा. कुँअर बेचौन का कहना है—

दुनिया की ठोकड़ों से तो बचकर निकल गये
पाँवों को अपनी मोच ने चलने नहीं दिया।

यहाँ तक कि हमारी शारीरिक अस्वस्थता भी हमारे उत्साह को चुनौती नहीं दे सकता। हमारी मूर्छा या बेहोशी ही हमें इससे विमुख कर सकती है, किन्तु वह भी तबतक जबतक हम मुर्छित या अचेतावस्था में हैं।

यह मुंशी प्रेमचंद का लेखन के प्रति अटूट उत्साह ही था जिसने उनसे लिखवाया—

षजिस दिन मैं नहीं लिखूँ मुझे भोजन करने का अधिकार नहीं है।

कँपकँपाती ठंड, आग बरसाती धूप, या मूसलाधार बारिश उत्साह से लवरेज़ व्यक्ति को अपने कर्म-पथ से विचलित नहीं कर सकती। हम यदा-कदा ही अपने काम पर विलम्ब से पहुँचते हैं।

उत्साह हमें समयनिष्ठ बनाता है और फिर हम शनैरु शनैरु कर्तव्यनिष्ठ होते चले जाते हैं। यह व्यक्ति को सम्पूर्णता की तरफ़ ले जाता है।

जब पारिवारिक दायित्व का निर्वहन बिना उत्साह के सम्भव नहीं तो सामाजिक दायित्व का कैसे संभव है।

हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि अपने संगठन की नींव डाली जा चुकी है, आधारशिला रख दी गयी है

हम उन समस्त महानुभावों का हृदय-तल से आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने संगठन की स्थापना की और भावी पीढ़ियों को समाज-सेवा का अवसर दिया।

संगठन को अब कुछ और उत्साहित नौजवानों की आवश्यकता है। हमें उन्हें सामने लाने के लिए प्रयासरत रहना पड़ेगा।

इसी आशा और विश्वास के साथ कि हमारे सभी सपनें साकार हों, संगठन के सभी उद्देश्यों की पूर्ति हो, हम अपने समाज के असहाय और निर्धन लोगों के लिये एक समाधान बनकर आगे आएँ, अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

"Nothing great was ever achieved without enthusiasm"
-Ralph Waldo Emerson

दिशा-निर्देशन



प्रोफेसर निताय चन्द्र दास
राढ़ी बान्धव समिति
राँची (झारखंड)

समाज के प्रगति के लिए युवाओं का उत्साहित रहना आवश्यक

कोई भी संगठन जब अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पूरी तत्परता के साथ गतिशील होता है तो उसे कई प्रकार की समस्याओं से दो-चार होना ही पड़ता है। इनमें से कुछ समस्याएँ तो चुटकियों में सुलझ जाती हैं, कुछ आपस में मिल-बैठकर सलाह-परामर्श के पश्चात हल हो जाती हैं किन्तु कुछ गुत्थियाँ इतनी जटिल होती हैं कि हम सुलझा पाने में असमर्थ होते हैं। ऐसे में हमें समाज के कुछ अनुभवी बुद्धिजीवी वर्ग के दिशानिर्देशन की आवश्यकता पड़ती है।

1. हरेक महकमे में 20 से 30 प्रतिशत लोग ही अपने दायित्व को समझते हैं। बाँकी लोगों को कैसे प्रेरित किया जाय?
2. समाज के कुछ धनाढ्य लोगों का समयदान और अर्थदान से दूर रहने के क्या कारण हो सकते हैं?
3. समाजोपयोगी कार्य हेतु पर्याप्त धन राशि की उगाही के कुछ अचूक उपाय बतायें।
4. समाज के नाम आपका संदेश।

इसी क्रम में हमने हमारे राढ़ी समाज के सम्मानित, प्रबुद्ध व जानकार व्यक्ति श्री माधव चंद्र सिन्हा के समक्ष उपर्युक्त प्रश्न रखे और उनका विचार जानना चाहा –

दूसरे प्रश्न के उत्तर में वो कहते हैं कि समाज के धनी लोग शहर में बस गयेद्य उनको राजी करने के लिये हमें कुछ प्रभावी व्यक्तियों को लेकर उनके पास जाना चाहिए और उनसे यह कहना चाहिए कि समाज के एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते उन्हें भी अपना समयदान और अर्थदान देना चाहिए ताकि समाज के विकास में उनका भी योगदान हो।

पहले प्रश्न के जवाब में उन्होंने कहा कि हमें समर्पित कार्यकर्ताओं के चयन पर बल देना होगा। उच्च पदों पर कार्यरत युवाओं का संगठन में शामिल होना आवश्यक। युवा ध्वजवाहक की भूमिका निभाते हैं। वो ठान लें तो औरो को प्रेरित करना संभव।

धनराशि की उगाही के जवाब में वो बोले कि चंदाउगाही के उद्देश्यों को लोगों को अच्छी तरह समझाना होगाद्य कार्यो की एक सूची बनानी पड़ेगी द्य गाँव समाज के कुछ लोगों को साथ रखना होगा।

समाज को संदेश देते हुए उन्होंने पढ़े-लिखे लोगों की उदासीनता पर चिंता जतायी। एकजुटता के महत्व पर बल दिया और कठिन परिश्रम के साथ आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया। यह भी कहा कि युवाओं का उत्साहित रहना बहुत आवश्यक।

Welfare schemes need to be introduced

I am extremely pleased with your interest for collecting views of seniors of our Uttar Rarhi Samaj Community. This is the right way for doing things on collective endeavours. As you are aware I have been writing posts on Rarhi Samaj Facebook Group especially for their past/ present and of course for future.

Ideas which I have shared with our community members are almost the same for which you have asked in the questionnaire. It is okay to repeat the same for future course of action. Responsibility as you know is of various diversity an individual has to perform. In the instant case I take it for the Rarhi Samaj right from the grassroot



level to the elites. If you don't mind, I wish to go to our forefathers who used to take full responsibility for family/ community members irrespective of their residences. In fact, it was their "Universal family feeling".

In our old days our forefathers either in the village/ town/ metro or even in the abroad they used to keep keen interest in the well-being of our community members. We have to retain that standard of responsibility in our mind. I know for sure it is not possible for everybody to attain such standard. Still, I feel that each one of us has to take care of another unfortunate but disadvantaged members of our community. For this massive awareness programmes have to be initiated in different centres. In this exercise office bearers of different samitis have to move right from the metro to villages. In this regard I have been advocating for the formation of APEX body for uniform approach across the country. In each village /town/ metro or mohalla where we have 10 families and above should have one Samiti at least. Apex body/ village, town, metro, mohalla wise samitis should be formed and same may be kept functional.

As of now we highly appreciate the efforts of RKs that we have achieved all-round development especially education/ earning and our share in jobs in various sectors even the abroad after abolition of Zamindari (turning point for Rks). Majority of us have comfortable financial position. In fact, we are in position to contribute for development of the community. Although I realise that it is difficult to get handsome contribution from the elites/ rich community members. We have to devise and add some attractive features in our schemes. We can easily formulate satisfactory programmes for all. For that Samiti has to be functional and transparent for our members.

Before going for funds, we have to make attractive schemes with P&I and members should be convinced with cost and contribution. Once members are satisfied with the scheme we can be hopeful of getting contribution. Samiti has to be clean not only in statement but also in deeds. Bank a/c, audit and their report have to be presented for public scrutiny. If samitis are honest in their dealings we can expect better support from our members either physically or financially. Getting financial support from community members is two-way schemes definitely not a single point. We have to show details of our future programmes for the betterment of community members.

In fact, we have to launch welfare schemes for different categories of disadvantaged members. Help may be financial and also physical. Once welfare schemes are finalised, we can go to the members for finance. For different schemes we can go for only one set of annual contribution linked with annual income of members. Once we get contribution the same may be distributed into various heads like – Land & building-30 per cent/ Cultural including Vijaya Milan-40 per cent/ Welfare-20 per cent / administrative expenses-10 per cent. One-time annual contribution should be enough to take care of various schemes. Members would not be burdened for finance for several times.

If our schemes are attractive to take care of needy members, our other members too would be willing to participate with the samitis venture. Welfare schemes may be of two parts either free or refundable with zero interest. I will highly appreciate community members if they can spare their valuable time for the society and help /participate in various schemes for the support of their needy and disadvantaged members of the community. Thank you and good wishes.

Shri Pramod Chandra Sinha
Village- Lakshmpur (Amarpur/ Banka)
Present Address-Ramjankipath/ North of Kalimandir/ Hanumannagar/ Patna- 800020.

सामाजिक उत्थान के लिए प्रेरणा और सहयोग की आवश्यकता



कर्नल मणिमोहन घोष (रिटायर्ड)
तेघड़ा लखनपुर (बेगूसराय)

हमारे समाज के अत्यन्त सम्मानित हस्तियों में एक, परम आदरणीय कर्नल मणिमोहन घोष इस प्रश्न पर कि हर महकमे में 20-30 प्रतिशत लोग ही अपने दायित्व को समझते हैं, अपना विचार देते हुए कहते हैं कि परिवार के बड़े-बूढ़ों को बच्चों को इस संबंध के महत्व के बारे में समझाने की आवश्यकता है और उन्हें राढ़ी समाज के नियमों के प्रति जाग्रत करने की भी आवश्यकता है । बड़ों को चाहिए कि सामाजिक दायित्व निर्वहन करने वाले कुछ व्यक्तियों के उदाहरण भी उनके समक्ष रखें आगे वो कहते हैं कि सामाजिक उत्थान में जो लोग पहले से लगे हैं, औरों को भी प्रेरित करने का प्रयास करते रहें ।

इस प्रश्न पर कि समाज के धनाड्य लोग अर्थदान या समयदान में रूचि नहीं दिखाते, कर्नल घोष हमारा मार्गदर्शन करते हुए कहते हैं कि नैतिक मूल्यों का ह्रास इसका पहला कारण है । उनका एक मात्र उद्देश्य रह गया है अधिक से अधिक धन कमाना उनका आय का कुछ भाग समाजोपयोगी कार्य में भी दानस्वरूप जाना चाहिए, इसे वो महत्व नहीं देते ।

लोगों में विश्वास के अभाव को भी वो एक प्रमुख कारण मानते हैं । दान राशि का उपयोग उसी कार्य के लिये हो रहा है कि नहीं जिसके लिए अपेक्षित है व इसे भी वो कारण मानते हैं कि सफल व धनाड्य लोगों के पास समयभाव होता है, उनका ध्यान इस तरफ जाता भी नहीं व एकल परिवार को भी इसका एक कारण बताते हुए उनका कहना है कि लोगों में जिम्मेदारी लेने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है । कुछ तो सामाजिक कार्य कलापों के महत्व को ही नहीं समझ पाते ।

धन उगाही के प्रश्न पर अपना मंतव्य देते हुए कर्नल घोष कहते हैं कि कार्यक्रम की पूरी जानकारी और उद्देश्य दानकर्ताओं को अच्छी तरह समझ आना चाहिए । समाज के उच्च पदस्थ व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित कर उनसे आर्थिक सहयोग हेतु आग्रह करना चाहिए । वो एक सुझाव ये भी देते हैं कि संस्था एन. जी. ओ. का गठन करे जिससे फंडिंग में सहायता मिल सके और अन्त में वो कहते हैं कि हमें विदेशों में कार्यरत लोगों की भी एक सूची बनाने की आवश्यकता है और उनसे बात करके, अपने उद्देश्यों को भली-भाँति समझाकर उनसे आर्थिक मदद ली जा सकती है ।

कर्नल मणिमोहन घोष (रिटायर्ड)
तेघड़ा लखनपुर (बेगूसराय)

Come forward and contribute generously: A message to 'Kayasth Samaj'

Indian citizens, who are above 20, are busy with their livelihood. They have no extra time to think other activities. They are always in search of some source from where means of earnings can be achieved. Out of them, 20 to 30 per cent people are able to understand both the principles, viz., (i) Source of earning and (ii) helping the needy persons, involved in social activities, contribute physically, financially and mentally. Uttar Radhi Kayasth Samaj has already started an institution to help our siblings in all regards. However, Samaj needs sufficient funds to perform such noble works. But do not worry. Keep our patience. We have to wait patiently. A building or fort cannot be built in one day as there is an old adage 'Rome was not built in a day'. It may take quite some time to inspire our brothers and sisters for their contributions for the noble causes.

Elder citizens of our Kayasth Samaj have taken the responsibility to look after their kith and kins only as it is their sole duty and responsibility, because they may not find extra time to think the responsibility of other needy persons. However, our effort should be continued to inspire them to have the responsibilities of those persons who are in need of them. For this purpose, our association must have complete list of individuals of Kayasth family, who are either in a job or in business. We should keep their WhatsApp number. We must send them message fortnightly about the aim and goal of association in near future and enquire their health, family activities etc. Our effort should be made in such a way that they will be forced to made up their mind towards the welfare of the association. Continuous process of contact is the best way of turning their desire and wish to think how to contribute their effort so that our association will develop in future.

Percentage of rich and emeritus people of our society may not be aware of these activities borne by Kayasth Samaj. This may be due to lack of awareness. We have to put our effort extensively. One to one contact is requiring to attract such rich person. Our association has to perform more activities to attract and impress those rich people. What activity, we have performed so far? We are organising Bijoya Milan, where some entertainment programme is arranged, Doctor's view on Corona (only this year), distribution of scholarship to few students and yoga practices. These activities are not enough to attract their mind in regard of association's performance. Wait for one day, when such people will certainly come forward to share the responsibility of the association. The days are not very far. However, we have to arrange more and more charity programme for our society.

Open a separate WhatsApp group for Kayasth Samaj. Try to included as many as our

people in this group. Select a charity project with consultation of senior and educated people from all corner of Kayasth Samaj. There are number of Kayasth association at various centre. Bhagalpur and Patna are popular of them, Contact and consult the President and Secretary of those areas regarding the selection of charity project. Calculate the amount spent for that project. Circulate the detail information about the project. Finally, make a request to contribute as much as possible for the project. Advertise the name of contributors/ donors each and every day till the entire project amount is collected for this noble scheme. This way, go on advertising new projects of benevolent. However, take care that project should be meant for the upliftment of the members of our Samaj only.

It's a pleasure that members of our Kayasth family are getting more and more educated day by day. Consequently, they are getting better opportunity to serve at different places and at different position in India. There are very good number of Engineers, Doctors and other professional members in our Samaj. However, we have a few number of our people in civil services. This can be achieved with your aid, help, cooperation and responsibility. I have served at various places, like Assam, Kerala, Delhi, Goa and Gujarat. I have one good experience of Gujarat that is of a system of community help, which spreads throughout India and abroad. I feel helping attitude of Gujaratis specially to their community are more dominating in the state compared to other parts of India. This is one of the reasons that Gujarat is the most prosperous state in our country in all regards. Their Samaj (community) helps all needy persons in their education, business, marriages etc. activity by providing financial assistance not one time but several times. Our Kayasth family is also in need of such organised Samaj, where Samaj could help the needy people. This is only possible if Samaj have some sufficient funds.

Akhil Bhartiya Radhi Kayasth Sangathan, Delhi has begun this mighty task since last few years in form of get together during Vijaya Milan, Doctor's advice during Corona and distribution of scholarship (to those meritorious students who have passed 12 board examinations, students who have lost either of the parents during Corona) etc. The Sangathan has to start more and more such projects for the Samaj in near future. But all these programmes need money. There is a proverb "बूढ़ बूढ़ से घड़ा भरता है". For the fulfillment of this aim, goal and purpose, it is my humble request from all of you to give your financial assistance in raising of such funds for our Samaj. Come forward and donate generously as much you can?

Professor Dilip Kumar Ghosh

Fellow of Royal Statistical Society (UK), Fellow of Gujarat Science Academy
UGC Basic Science Research Faculty Fellow, Adjunct Professor
Retired Professor and Head, Dep. of Statistics, Saurashtra University, Rajkot, Gujarat

संदेरा

समाज में मेधावी बच्चों को छात्रवृत्ति अ. भा. रा. का. सं. दिल्ली का सराहनीय कदम

मुझे अत्यन्त खुशी है कि यह पत्रिका हमारे राढ़ी समाज, दिल्ली के द्वारा प्रकाशित की जा रही है, जिसमें हम जैसे वरिष्ठगण के विचारों को भी समाहित किया जा रहा है।

आज विजयादशमी के सुअवसर पर अपने समाज हेतु सफलता एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ व आशीर्वाद देता हूँ। हमारे समाज में उन्नति के लिये अनेक कार्य हुए, जिसमें अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली के द्वारा यह पहल – समाज में मेधावी बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान करना बहुत सराहनीय है।

इसी तरीके से हमारे समाज के लोगों से यह अनुरोध है कि समाज में इस महामारी से पीड़ित प्रत्येक गाँव या शहर के अनाथ बच्चे, युवा, बूढ़े और विधवा की एक सूची बनाई जाए और राज्य सरकार या केन्द्र सरकार से मदद की गुहार लगाई जाय। निजी तौर पर भी सहयोग की कोशिश की जानी चाहिए।

दूसरा सुझाव यह देना चाहूँगा कि हमारे समाज में जो भी चिकित्सक हैं उनका सम्पर्क एवं फोटो स्मारिका में प्रकाशित किया जाय, जिससे समाज के लोग लाभान्वित हो सकें।

यह सर्वविदित है कि – फूलों की सुगंध केवल वायु की दिशा में फैलती है, लेकिन एक व्यक्ति की अच्छाई हर दिशा में फैलती है।

शुभ विजया!
जय माँ!!
जय हिन्द!!!

प्रोफेसर निताय चन्द्र दास
राढ़ी बान्धव समिति
राँची (झारखंड)

शुभकामना संदेश

अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन, नयी दिल्ली उत्तरोत्तर अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर गतिमान है । ई-विजयामिलन समारोह के माध्यम से देश -विदेश में फैले हुए समस्त कुटुम्बजनों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास और सांस्कृतिक कार्यक्रम के द्वारा नवोदित व उत्साहित बाल- कलाकारों की रचनात्मकता को प्रोत्साहन देने की कोशिश निस्संदेह सराहनीय है ।

संगठन के समस्त समर्पित कार्यकर्ताओं को मैं हृदय-तल से साधुवाद देता हूँ कि वे अपनी एकजुटता, सजगता एवं कार्यकुशलता का परिचय देते हुए दिनानुदिन पतन की ओर अग्रसर हो रहे अपने नैतिक मूल्यों को संजोने- सँवारने और जीवंत बनाए रखने का उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं ।

विजयामिलन की इस आनंदमयी बेला में संगठन के चरमोत्कर्ष पर पहुँचने की शुभाकांक्षा ।

भवदीय
अमित कुमार घोष
संयुक्त सचिव, भारत सरकार

शुभकामना संदेश

विजयादशमी के पावन अवसर पर अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन के सभी गणमान्य सदस्यों एवं उनके परिवारजनों को अशेष शुभकामनाएँ। साल भर की लंबी प्रतीक्षा के उपरांत यह एक ऐसा अवसर आता है जब हम सब सारे दुःख दर्द भूल कर माँ की शरण में आ जाते हैं और हममें उनकी कृपा से नई ऊर्जा का संचार हो जाता है एवं नई चेतना जागृत हो जाती है। आगामी वर्ष हम सब के लिए मंगलमय हो एवं सुख शांति समृद्धि लाए। सबकी मनवांछित इच्छाओं की पूर्ति हो, यही ईश्वर से प्रार्थना है। आशा है कोरोना वैश्विक महामारी से हमें जल्द ही मुक्ति मिलेगी एवं अगले वर्ष हम दुर्गापूजा से जुड़े खुशियों के पल मिलजुल कर उत्सवी माहौल में मनाएंगे।

शुभकामनाएँ



डॉ. आलोक रंजन घोष

डॉ. वृन्द का सन्देश

दुर्गा पूजा और दशहरा के शुभ अवसर पर समाज के सभी लोगों का हार्दिक अभिनंदन! चिकित्सक होने के नाते एक अनुरोध स्वस्थ जीवन शैली, उचित आहार, और नियमित व्यायाम कर स्वस्थ और खुशहाल रहें! माँ भगवती की कृपा आप सभी लोगों पर बनी रहे!

Dr- Ajay Ghosh
Jamtara, Dumka (Jharkhand)

विजया मिलन तो आयोजित ही किया जाता है एक दूसरे से मिलने जुलने के लिए। गहरा प्यार और अपनापन एक से दूसरे को जोड़ने में उत्प्रेरक का कार्य करता है। हम सभी तो **biologically** और संस्कार से एक दूसरे से बँधे ही हुए हैं। अतः

विजयदशमी के अवसर पर अपने समाज को सबसे अच्छा यही संदेश दे सकते हैं —

- लोगों को गुण दोष पर न बाटें, बल्कि उनकी जरूरतों के अनुसार।
- जो भी स्थिति हो स्वीकार करना शुरू करें, औरों से उम्मीद करना बंद करें।
- अपने समाज के लोगों को ऊपर उठाने में अपनी ऊर्जा अवश्य लगाएँ।
- मदद करने के लिए ये अपेक्षा न रखें कि सामने वाले ने जरूरत क्यों न जताई।
- दयालु बनें।
- शुभ विजय

डा. राजीव सिन्हा
जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, भागलपुर

यह बहुत हर्ष की बात है कि अखिल भारतीय राठी कायस्थ संगठन, दिल्ली द्वारा वार्षिक पत्रिका (स्मारिका) प्रकाशित की जा रही है। इसके सफल प्रकाशन की अग्रिम बधाई संगठन के सभी पदाधिकारियों को देना चाहता हूँ। मैं आशावान हूँ कि यह पत्रिका हमारे समाज के सभी सदस्यों के लिये काफी लाभकारी सिद्ध होगी। कोरोना काल में इस संगठन द्वारा जिस तरह सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञों को जोड़कर कोरोना एवं अन्य विषयों पर समाज के लोगों को जो जानकारी उपलब्ध कराई गई एवं सबों का मनोबल बढ़ाए रखने का कार्य किया गया, इसके लिए सभी पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। संगठन द्वारा और जिन कार्यों को हाथ में लिया गया है, स्वागत के योग्य है।

मैं अपनी ओर से आयुष्मान कार्डधारी सदस्यों को सूचित करना चाहूँगा कि तिलकामाँझी के आयुष्मान भारत योजना के तहत सर्जरी तथा हड्डी रोगों का मुफ्त इलाज करने में मुझे बहुत खुशी होगी।

अंत में इस संगठन के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

डॉ. जयप्रकाश सिन्हा
जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, भागलपुर

AROGYA MANCH proved its worth by providing very-very useful information over the last few months that helped families overcome their anxiety, confusion and also sent across the solution which was user friendly, affordable and time-tested during crisis. It is said that if one can work better during emergency, he/ she will work even better routinely.

The vistas of knowledge and experience shared by our experts benefitted our society significantly.

If we go by the definition of health by World Health Organization (WHO) which defines health as:

“Health is a state of physical, mental, social and spiritual well-being and not merely the absence of disease or deformity.”

Therefore, we should take utmost care to maintain our mental health by expressing our problems, talking, keeping happiness level at its zenith.

By socialising we can improve our communication and finally it will pay rich dividends.

Spiritually we should always try to improve upon by basic principle...keeping ourselves happy, feel that we are the part and parcel of param pita paramatma..and God has given infinite power within us that needs to be activated.

AHAM BRAHMASHMI. LET’S INDULGE OURSELVES IN SAADHNA, SEVA AND SANKIRTAN TO REACH TO A LEVEL...NAR SE NARAYAN KI YATRA.

Our life should have the purpose to know ‘who we are.’ Let’s discover ourselves. Success, happiness, peace, bliss and prosperity is our birth right, lets claim it from the universe.

I wish you all the best that God can bless a good, pious, happy and divine soul.
Jai Ma Durge.

Dr. Pranay Dutta
Kolkata

अध्यक्ष सन्देश

अखिल भारतीय राड़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली के दो साल (2019–2021) का कार्यकाल समाप्त होने के दौरान लोक हित को ध्यान में रखते हुए यथासंभव, यथाशक्ति जो कुछ कर पाया वह आप सभी के समक्ष है। जिस तरह के समाज की परिकल्पना हमारे जेहन में थी कि समाज के हर उस पहलू को छूकर गुजर जाऊं, जो हर एक की पसंद होती, और एक अच्छे समाज का प्रतिबिंब होता। उस तरह के समाज को बनाने के लिए वक्त बहुत कम था। अगर हमारे पास वक्त होता, तो समाज को एक ऐसे स्थान पर खड़ा पाते जिसे देखकर आप सभी गौरवान्वित महसूस करते Covid-19 उसकी एक वजह थी, और दूसरी वजह समाज के सहयोग की कमी महसूस की गई। उम्मीद करता हूं, नई कार्यकारिणी समिति के सभी लोग मिलकर एक उज्ज्वल एवं निर्मल रूपी समाज का निर्माण करेंगे जो बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय का मूल मंत्र हो।

अजीत कुमार दास

अध्यक्ष

अखिल भारतीय राड़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली



अजीत कुमार दास

अध्यक्ष

अखिल भारतीय राड़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली

संदेश - अपनों से अपनी बातें

विजया मिलन का सुअवसर। हम सब अपने-अपने घर परिवार के साथ में भगवती का पूजन कर अपने-अपने काम पर आये। आप सबको विजयामिलन की बहुत शुभकामनायें। अपनी माटी को सर से लागाने के बाद अपने बड़ो को सादर विजया प्रणाम करते हैं और अपने समय को सादर विजया नमस्कार। छोटी को बहुत बहुत विजया आशीर्वाद। अपनी पूज्य माता जी श्रीमती प्रतिभा सुंदरी घोष व पूज्य पिताजी श्री बनमाली चंद्र घोष का चरण बंदन के साथ अपने बड़ो का बारम्बार वंदन। साथ है सभी तो आनंद ही आनंद। आये अपनों से अपनी कुछ बातें। आपाधापी के इस जीवन में आपसे सुकून से कुछ बातें।

गतिशील समय के साथ गतिविधियों के माध्यम से संगठन की गतिशीलता। इसे गतिमान बनाये रखने में अपने स्वजनों का सहयोग, स्नेह व सहभागिता। कभी पथ सहज सा होता तो कभी कंटाकीर्ण भी। विगत दो वर्षों में प्रकृति जैसे कुपित सी हो गयी। बिभीषिका के इस दौर में कई परिवार पर जैसे कहर बन टूटा प्रकृति का आक्रोश। किसी ने पुत्र, किसी ने पिता, किसी बच्चे ने मां, किसी ने काका, किसी ने काकी वृ बस खोया ही है। हम संगठन की ओर से उन तमाम लोगों का जो इहलोक त्याग कर ब्रह्मलोक प्रस्थान कर गये हृदय से नमन करते हैं, श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। किसी को नौकरी छूटने का दर्द, किसी को पढाई छूटने की परेशानी। आर्थिक तंगी अलग से। ऐसे ही समय में अपने और अपनों का साथ का महत्व समझा जाती है ये घटनायें।

अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली ने इस भीषण परिस्थिति ने आशा का दामन नहीं छोड़ा। आप सबके साथ से कुछ कुछ प्रयोग कर संगठन को निरंतरता प्रदान करने की भरसक कोशिश रही। दिसंबर, 2020 में हमसब अन्य शहरों में बैठे अपने स्वजनों से बातें की और सुखद परिणाम पूर्णिया में नये सिरे से संगठन खड़ा होकर समाज को आगे ले जाने के लिये सक्रिय।

2021 में जहाँ एक ओर महामारी का कहर दूसरी ओर आपलोगों की सेवा व संकल्प अपनों के लिये कुछ करने की। अपने-अपने स्तर से लोगों ने समाज की सेवा की और अपना हाथ बढ़ाया। बाहर निकलना जब खतरे से खाली नहीं था तब भी लोगो ने अपना कर्तव्य पथ पर दृढ़ता से सामना किया परेशानियों का। पर अपनों के साथ रहे।

जीवंतता बनी रहे, परम्परायें व सांस्कृतिक विरासत को सहेजने के प्रयास के तहत संगठन ने कई प्रयोग किये। उन्हें यूं कहा जा सकता है।

देदीप्यमान हो हमारी पूर्वजों के विरासतें, सुंदर परम्पराओं का हो विस्तार।

हमसे जगमग हो चहुँओर और ले प्रेरणा कार्यो से सुखी रहे संसार।

हमने इसको ध्यान में रखकर 'गुंजन' कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों की प्रतिभाओं को जानने का प्रयास किया। साथ है हमारे समाज से जो सैन्य अधिकारी हैं, उनका एक मंच पर आना, उनका जुड़ाव हमें एक उत्साह दे गया। विवेकानंद जंयती, नेताजी सुभाष जंयती के माध्यम से अपने समाज के महानायकों को याद किया। इस अवसर पर समाज के प्रबुद्ध जनों का एक साथ आना, उनके द्वारा अनुभवो का साझा करना समाज को दिशा दे जाता है। जननी व जन्मभूमि सदैव वंदनीय। कार्यक्रम 'सृजन' के माध्यम से एक प्रयास इन्हें सम्मान देने के लिये। समाज की महिलाओं के सम्मान का। उनका समाज के प्रति जाग्रत विचार जो हमारे समाज के उन्नयन के लिये मंत्र। आरोग्य संवाद एक अदभुत समन्वय अपनों के साथ। इसके माध्यम से विभिन्न शहरों में रह रहे चिकित्सक वृंद का अपने स्वजनों से संवाद। कोविड की विभीषिका में यह संवाद कितना उपयोगी रहा इसे हम सब महसूस कर सकते हैं। युवा, विद्यार्थी, शोधार्थी का एक प्लेटफार्म पर "उत्कर्ष" जो पर्यावरण दिवस का संदेश लेकर एक साथ आना ना केवल सुखद रहा बल्कि उनको समाज व राष्ट्र के प्रति एक नवीन जिम्मेवारी को लेकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे जाता है। इस तरह के आयोजन में अपने बड़ो, समाज के अपने तो उच्च पदस्थ हैं उनसे रुबरु हुये। उनके विचारों को जान पाये। बड़ो का अनुभव व युवा का उत्साह समाज में नवीन परिवर्तन का वाहक होता है। और आने वाले समय में इसे और सुदृढ़ रूप में इसे पायेंगे।

विभिन्न माध्यम से जुड़कर हम संगठन को हर ढंग से सुदृढ़ करेंगे। आर्थिक सुदृढ़ता हो और सामाजिक गतिविधियां दोनों ही आपको हर ढंग से मजबूती देगी। कई कार्य है जो करने हैं। विश्वास है आपकी सहभागिता होगी और हम आपकी सहायता से समाज को एक पहचान दिलाने और अपने लोगों को साथ लेकर भरसक प्रयास करेंगे और सफल होंगे।

चाहेंगे कि जितने भी गाँव हैं अपने लोग अपने-अपने गाँव का सर्वेक्षण करें यह पता लगायें कि कितने ऐसे परिवार हैं जिनके बच्चों को उचित शिक्षा में बाधा आ रही है। वैसे परिवार को चिह्नित करें और संगठन साथ खड़ा हो। शिक्षा, स्वास्थ्य आदि ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ बहुत काम करने की जरूरत है। आये हम सब इसे पूरा करने का संकल्प लें। हर ऐसे जगहों पर अपना संगठन हो, आपसी समन्वय हो। बढ़े फिर साथ। संगठन जहाँ दायित्व लेने की बात हो, पद जिम्मेवारी निभाने के लिये हो हम सबका सम्मिलित प्रयास हो। संगठन आगे और उसको आगे करने के लिये हम सब जैसे मां दुर्गा का मेढ़ उठाने के लिये आगे आते हैं, उसके पीछे होकर साथ हों। एक दायित्व मिला, उसके निर्वहन में आप सबों के साथ का आनंद। कार्यपथ है, जीवनपथ है। इस दौरान बहुत बातों में अरुचि होगी। अन्यथा न लेगें।

विराम देते है लेखनी को भी, बातों को भी। अपने संगठन के पद के दायित्व को भी। विश्वास है आने वाले दिनों में हम अपने संगठन को अभिनव प्रयोगों से और सम्मिलित प्रयास से एक नई ऊंचाई देंगे। आप सबों को अंतर्मन से धन्यवाद जिसने सेवा का अवसर दिया और पूरा करने की कोशिश रही।

सादर नमस्कार



निहार रंजन

महासचिव

अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन, दिल्ली

ग्राम : भुड़िया, भागलपुर, वर्तमान : दिल्ली छावनी

MESSAGE FROM TREASURER

Respected all,

Vijaya Pranam,



First of all, I would like to thank you all for your sincere and active support on behalf of Executive Body 2019-21 which is completing its tenure on 31st October. Special mention to donors and those who contributed financially to the society, as we all know financial strength is very much required to run a society. From their cordial support we are able to provide scholarship to 19 meritorious students this time (due to this epidemic, many families suffered due to huge loss, lost their earning members and still they are fighting to get rid-off issues, so this time Scholarship Committee added one more criteria for the students who lost their earning member/parent due to this epidemic “Covid-19” along with “Means cum Merit Scholarship Program”).

I would also appeal members to contribute beyond their annual subscription at any point of time in the year at your convenience. Let me tell you that your small contribution may go for really big cause. (Account details are given at the last page of this souvenir).

We wish to continue to grow and strengthen the RK Society; our each monthly meet is a thoughtful step towards success of our vision; we wish to expand our scholarships; engage in programs to safeguard and protect cultural heritage; in the hour of need stand by them with moral and financial support.

We dream to have “Radhi Bhawan” in the national capital region where we can facilitate people of our society and run all our programs. We are also pushing for “Group Health Insurance” cover to our members where family including elderly members covered at nominal contribution. We have not accomplished the census of “Radhi Villages” and to list down those families and their relevant details for better understanding and planning. We also request more and more people to join ABRKS and add all those who are interested to join the vision and mission of ours. We call all capable RK society members to extend their support, so that we can serve the under privileged of our very own society.

-Abhinandan Kumar Sinha

Native : Rupsa, Banka

Mobile : 9971295833

e-mail : abhinandan2009@gmail.com

दुर्गा माँ प्रतिमा और मंदिर



Belaganj, Purnea



Bhawanandpur



Bhuria



Champanagar, Bhagalpur



Champanagar



Chandpur, Katihar

दुर्गा माँ प्रतिमा और मंदिर



Chorhar (Kharik)



Dhauni, Tarapur



Dumrama



Jhauwa Kothi, Bhagalpur



Kairi (Shyam Bazar) Dhanway



Kasba, Banka

दुर्गा माँ प्रतिमा और मंदिर



Khaira



Kunouni



Kunouni-Palanhar



Lakhanpur, Begusarai



Lakhanpur, Begusarai2



Manoharpur, Bhagalpur

दुर्गा माँ प्रतिमा और मंदिर



Mohanganj, Tarapur



Mukheria



Orai-Jankipur



Orlaha, Purnea



Pathakdih



Pipra

दुर्गा माँ प्रतिमा और मंदिर



Rampur Dih Dariyapur



Rani Diyara, Bhagalpur



Ranikitta



Rupsa, Banka



Singhnan



Tagepur



Champanagar



Belaganj, Purnea

LIFETIME MEMBERS LIST (ABRKS)

Sr. No.	RK ID	Member's Name	Present Location	Ancestral Village
1.	RK00001	Lal Bahadur Sinha	Gurugram	Rajapur, Banka
2.	RK00003	Jaideo Kumar Sinha	Indirapuram	Sujapur, Bhagalpur
3.	RK00004	Ajit Kumar Das	Chhatarpur	Kasba, Banka
4.	RK00005	Pravin Kumar Ghosh	Indirapuram	Saidapur, Godda
5.	RK00009	Sanjay Kumar Sinha	Vaishali	Sujapur, Bhagalpur
6.	RK00011	Nirupam Kumar Sinha	Noida Extension	Rupsa, Banka
7.	RK00018	Manish Kumar Dutta	Indirapuram	Singhnan, Banka
8.	RK00020	Chitranjan Kumar Das	Vaishali	Mukheria, Bhagalpur
9.	RK00023	Ashok Kumar Ghosh	Indirapuram	Laxmipur, Banka
10.	RK00042	Ranjay Kumar Sinha	Rohini	Sujapur, Bhagalpur
11.	RK00050	Abhay Kumar	Gurugram	Rampur, Katihar
12.	RK00056	Kumar Brishketu	Faridabad	Laxmipur, Banka
13.	RK00076	Prashant Kumar Das	Crossing Republic	Jagatpur, Banka
14.	RK00094	Animesh Kumar	I P Extension	Lakhanpur, Begusarai
15.	RK00111	Ashish Chandra Sinha	Rajkot	Lakhanpur, Bhagalpur
16.	RK00112	Prem Chandra Sinha	Ludhiana	Lakhanpur, Bhagalpur
17.	RK00113	Manik Chand Das	Noida	Jagatpur, Banka
18.	RK00195	Subhash Chandra Das	Ranchi	Chara Bargaon, Bhagalpur
19.	RK00216	Jitendra Kumar Das	Ghaziabad	Manoharpur, Bhagalpur
20.	RK00315	Pradeep Kumar	Indirapuram	Singhnan, Banka
21.	RK00325	Kanchan Kumar Sinha	Noida Extension	Sujapur, Bhagalpur
22.	RK00347	Sadhan Kumar Das	Noida Extension	Dumramah, Banka
23.	RK00380	Amit Kumar Das	Munirka Vihar	Manoharpur, Bhagalpur
24.	RK00413	Shyam Sankar Sinha	Gurugram	Kasba, Banka

Akhil Bhartiya Radhi Kayastha Sangathan

List of Contributors for Vijaya Milan-2020

Sr. No.	RK ID	Member's Name	Ancestral Village	Contribution Amount
1	RK00465	Amal Kant Sinha	Bounsi	1000
2	RK00028	Amrendra Kumar Ghosh	Bugrus	500
3	RK00004	Ajit Kumar Das	Kasba	3000
4	RK00014	Ganesh Kumar Das	Bounsi	1600
5	RK00415	Nihar Ranjan	Bhuriya	2500
6	RK00022	Late Prashant Kumar Mazumdar	Pathakdih	600
7	RK00003	Jaideo Kumar Sinha	Sujapur	5100
8	RK00005	Pravin Kumar Ghosh	Saidpur	500
9	RK00007	Amreshwar Prasad Das	Pipra	2000
10	RK00329	Parmendra Kumar Sinha	Kasba	1600
11	RK00235	Prafulla Kumar Sinha	Tarapur	500
12		Rahul Ghosh (S/o Late Ranjan Ghosh)	Milki	600

Akhil Bhartiya Radhi Kayastha Sangathan

List of Contributors for Corpus fund & Society welfare

RK ID	Name	Current Place	Native	Amount
RK00042	Ranjay Kumar Sinha	Rohini	Sujapur, Bhagalpur	11682
RK00039	Snehendu Ghosh Verma	Dwarka	Bihpur	2100
RK00005	Pravin Kumar Ghosh	Indirapuram	Saidapur, Godda	500

ABRKS Society contributed Rs. 10000 to a Delhi based family form corpus fund.

MEANS CUM MERIT SCHOLARSHIP BY ABRKS FOR BOARD STUDENT

With the help of overwhelming response and support by DONORS of our society ABRKS, in their 2nd Year, is pleased to serve the Needy Meritorious Class X and XII students passed out in 2021. Students whose Parents or Guardians passed away due to COVID 19 have been considered for Special Assistance.

List of Donor/Contributors for Means Cum Merit Scholarship-2021

Sr.No.	RK ID	Name	Place	Amount
1	RK00050	Abhay Kumar	Delhi	15000
2	RK00038	Anant Kant Ghosh	Delhi	500
3	RK00186	Bikash Krishna	Indrapuram	5000
4	RK00017	Anand Mohan Ghosh	Delhi	5000
5	RK00468	Rupa Das	Noida	5000
6	RK00400	Dr. Priti Ranjan	Indrapuram	5000
7		Jeewan Kumar Mitra	Ranchi	10000
8	RK00470	Satyam Vivek	Dwarka	5001
9		Dr. Rakesh Kumar Sinha (S/o Ramni Mohan Sinha, Bhagalpur)	Mumbai	20000
10		Kavita Sinha	Mumbai	2500
11		Ratna Ghosh (W/o Dr. Shyam Lal Anand, Bhagalpur)	Delhi	5000
12	RK00205	Ashish Kumar Sinha	Narela. Delhi	1500
13		Dr. Shantnu Ghosh	Bhagalpur	15000
14	RK00268	Praveer Kumar Mitra	Delhi	20000
15		Mr. Rakesh (S/o Ram Kripal Singh, Tarar)	Thailand	5000
16		SatyaJi & Moon (D. & S.in Law/o Ashok Ghosh)	Netherland (Holland)	10000
17		R. K. Sinha (Rtd.Col)	Gujrat	15000
18	RK00009	Sanjay Kumar Sinha (Bunty)	Indrapuram	10000
19		Shilpa Verma & Mohit Kumar (D. & S/o Pradeep Kumar)	Indrapuram	20000
20		Ashish Kumar	Chandigarh	5000
21	RK00014	Ganesh Kumar Das	Dwarka	20000
22		Dr. Dilip Ghosh	Rajkot	15000
23		Gautam Roy & Anamika Roy	Delhi	30000
24		Rajiv Kumar (Rtd. Major)	Bangalore	6000
25		Shankar Mohan Ghosh	Bhagalpur	10000
26	RK00329	Parmendra Kumar Sinha	Faridabad	2000
27		Ajay Kumar (B/o Abhay Kumar)	Katihar	5000
28	RK00463	Raman Kumar Das (Akela)	Noida	1000
29		Shantnu Kumar Sinha (F/o Avni Kumar Sinha)	Bangalore	10001
30		Durga Shankar Sinha (Pintu)	Deoghar	5000
31		Uma Shankar Sinha (Laltu)	Nagpur	5000
32		Dr. Nitin Ghosh	Bhagalpur	10011
33	RK00415	Nihar Ranjan	Delhi	5000
34	RK00413	Shyam Sankar Sinha	Kasba, Banka	5000
35		Neelam Das	Bangalore	1001
36		Ashish Kumar Ghosh	Mayurvihar	5000
37	RK00004	Ajit Kumar Das	Delhi	2001
38		Malay Ghosh	Vishakhapatnam	1001
39		Alok Kumar (Commodore) (Younger Brother Abhay Kumar)	Pune	10000
40		Shreya (D/o Abhay Kumar)	Delhi	15000
41		Shavitri Ghosh (W/o Late Pramode Chandra Ghosh)	Indrapuram	5000
42	RK00042	Ranjay Kumar Sinha	Rohini	5000
		Previous year balance		20000
Total				372516

List of Awardees Scholarship 2021

Sr. No	Candidate Name	Category/Class
1	Divyanshu Ghosh	Covid 19
2	Ashi Sinha	Covid 19
3	Abhaya Tanu	12th
4	Samiksha Sristi	12th
5	Sawani Kumari (Jointly with Mahi Kumari)	12th
6	Priyanshu Ranjan Das	12th
7	Aayushi	12th
8	Ritesh Kumar Sinha	12th
9	Dipali Kumari	12th
10	Preyas Babul	10th
11	Akanksha Kumari	10th
12	Abhilasha	10th
13	Mahi	10th
14	Honey Kumari	10th
15	Pragya Das	10th
16	Sushmita Kumari	10th
17	Niti Ghosh	10th
18	Shubham Dass	10th
19	Mahi Kumari	10th

(Scholarship shall be disbursed as Lump sum amount on one time basis.)

Efforts of *TEAM SCHOLARSHIP 2021*, Secretary and President (ABRKS) for Fund raising, generating awareness amongst applicants and Finalization of eligible wining students are highly appreciated.

TEAM SCHOLARSHIP

1. Abhay Kumar
2. Pradeep Kumar
3. Amrendra Ghosh
4. Animesh Kumar
5. Pravin Kumar Ghosh
6. Ganesh Das
7. Ranjay Kumar Sinha
8. Raman Kumar Das
9. Leelakant Das
10. Abhinandan Kumar Sinha

Messages from Donor

In memory of my parents--

Late Dr Sunil Kumar Ghosh & Late Smt Shobhana Ghosh

by

Dr. Santanu Kumar Ghosh

Associate professor Dept of Respiratory Medicine
Jl medical college, Bhagalpur



**Late Shri Nand Kishore Roy and
Smt. Shobha Rani Roy**
Year of Demise : 2021

*In memory of the one we love,
may your brightness always shine
down from above.*

*Scholarship contribution:
Gautam Kumar Roy and Anamika Roy*



Late Smt. Shobha Ghosh
(W/o Sh. Badal Chandra Ghosh, Village-Tagepur)
Date of Demise : 31th July 2019

*We owe you our life. We promise
to love you for the rest of our life.
Your love and dedication have shaped
us into the person we are today.
We love you Maa.*

From : Your Loved Ones



Late Bibhuti Bhushan Ghosh
F/o Dilip Kumar Ghosh,
Bhuriya, Bhagalpur

*Late Pankaj Bala Ghosh (Dadi Ma)
Late Bibhuti Bhushan Ghosh (Dadu)*

*By
Shweta and Swati (USA)
(D/o Professor D. K. Ghosh)*



*Late Sh Bijay Kumar Das
S/o Late Sh Yogendra Narayan Das.
(Sabalpur-Bankā)*

*In fond memory of my father to meritorious Male child.
Scholarship Fund contributed by:-
Ganesh Kumar Das (Son) Aayush Kumar (Grandson)*



*Late Sh Brahmadeo Pd. Sinha.
S/o Late Sh Mahender Narayan Sinha
(Pipra -Munger).*

*In fond memory of my father to Meritorious Female child.
Scholarship Fund contributed by :-
Mrs Chanda Das (Daughter) & Rajeev Sinha (Son).*



*In the holy name of my late beloved mother
Late Laxmi Mitra, Barari, Rarhi Tola, Bhagalpur.
Life is chiefly service. Contributions for the noble cause without selfish
motive is highly appreciated. I extend heartiest thanks to ABRKS for
providing such platform and noble opportunities for contribution
which will definitely help society in its inclusive growth
and a sense of brotherhood for all.*

Praveer Kumar Mitra



*In the loving Memory of
Late shri Pashupatinath Sinha
F/o Col. Rajiv Kumar Sinha
Scholarship Fund contributed by :-
Karan and Kirtiman Sinha
Children of Col. Rajiv Kumar Sinha*



In the memory of late
Abinash Chandra Ghosh

(our beloved father)

Co-founder of Radhi Kayasth Bandhav
Samaj, Katihar (1960s - 70s)

A meritorious student who lost his parents in early childhood and was raised by immediate family. He was a hard working, dedicated and a self made man who served immediate family members, the society and the nation throughout his life.

Late A.C. Ghosh
(1929 - 1990)
Rampur, Katihar

Scholarship Fund Contributed by
Ajay, Abhay, Alok Kumar (Sons)
Kalpana (Daughter)



**“THE MAIN HOPE OF A
NATION LIES IN THE
PROPER EDUCATION OF
THE YOUTH”**

A small contribution for the betterment
of our future generation to help them
and make their dreams come true.

From: Dr. R.K. Sinha & Smriti Sinha
(Son of Chabbi Sinha & Ramani Mohan Sinha)
(Daughter of Chitralkha Ghosh & A.K. Ghosh)

"If you think you can or you think you can't either way you right."
- Henry Ford.



Shreya Kumar

The above quote has always inspired me and it gives me immense pleasure to share it with you.

What it has taught me is that in the ups and downs of life, having a positive mindset is key.

Focus on what you can control and accept what's out of your control.

Let's view both success and failure as learning opportunities for becoming better everyday.

All the best for the future.



Late Sanjay Kumar Sinha



Late Prashant Mazumdar

AKHIL BHARTIYA RADHI KAYASTHA SANGATHAN, DELHI

*Pays tribute to those who are not with us
now and played active roles in their times.*

AKHIL BHARTIYA RADHI KAYASTHA SANGATHAN, NEW DELHI

Sad Demise, Year 2020-2021

Demise	Current Place	Native Place	Date	Details	
1	Meena Sinha	Noida Extension	Pipra	10-Nov-20	W/o Sachin Prasad Sinha
2	Rudraneshwar Prasad Das (Buti)	Ganga Vihar, Bhagalpur	Dhouni	14-Nov-20	
3	Pramod Chandra Sinha (Cheto)	Bhagalpur	Lakhanpur	14-Nov-20	F/o Dr Ranjan Kumar Sinha
4	Amit Kumar Das (Dablu)	Uttam Nagar, Delhi	Bihpur	15-Nov-20	S/o Prakash Chandra Das
5	Shailendra Chandra Sinha (Solen)	Banka	Kasba	17-Nov-20	
6	Asit Kumar Das (Raja)	Bhagalpur	Sujapur	17-Nov-20	S/o Late Sudhir Chandra Das
7	Ambuj Ghosh	Bhagalpur	Khaira	19-Nov-20	W/o Ram Narayan sinha
8	Sambhu Nath Dutta	Bounsi	Bounsi	20-Nov-20	Mama/o Nihar Ranjan
9	Bandana Bharti	Gurugram	Manjhiyara	22-Nov-20	W/o Sanjay Kumar Dutta
10	Rekha Sinha	Dwarka, New Delhi	Rupsa	23-Nov-20	W/o Late Chhotu Ranjan Sinha
11	Nimai Chandra Sinha	Pakur, Jharkhand	Lakhanpur	27-Nov-20	B/o Ganesh Chandra Sinha
12	Meenu Verma	Delhi	Narayanpur	29-Nov-20	W/o Ajit Kumar Verma
13	Namita Choudhary	Bhagalpur	Ranidiyara	30-Nov-20	M/o Ranjit Kumar Choudhary
14	Anil Chandra Ghosh (Aspa-tali)	Bhagalpur	Saidapur	30-Nov-20	
15	Charu Das	Bhikhanpur G N 12	Bihpur	2-Dec-20	W/o Ashok Kumar Das
16	Hitesh Ghosh	Karnataka	Lakdi Koyla	3-Dec-20	S/o Nandan Ghosh
17		Saraiyahat	Saraiyahat	6-Dec-20	W/o Late Subodh Dutta
18	Samir Majumdar (Makko)	Monghyr	Pathakdih	8-Dec-20	S/o Dwijendra Majumdar
19	Sudhir Ghosh	Jamalpur		14-Dec-20	Mama/o Punam Das
20	Lipika Dutta	Dumka	lthari	21-Dec-20	W/o Bimal Kumar Dutta
21	Laxmi Sinha	Varanasi	Chara Bargram	21-Dec-20	W/o Govind Narayan Sinha
22	Manik Chandra Das (Tunu)	Noida	Jagatpur	23-Dec-20	F/o Utpal Das
23	Anand Mitra	Ahmedabad	Barari	24-Dec-20	H/o Priti Mitra
24	Niroj Kumar Sinha (Bulbul)	Deoghar	Jagatpur	28-Dec-20	F/o Aminesh Kumar
25	Mahendra Shankar Sinha	Bhikhanpur G N 2	Pathakdih	29-Dec-20	S/o Late Amarendra Narayan Sinha
26	Anju Ghosh	Singhnan	Singhnan	29-Dec-20	W/o Late Saligram Ghosh
27	Charu Bala Ghosh	Bhagalpur	Laxmipur	4-Jan-21	W/o Late Bhola Nath Ghosh
28	Abinash Chandra Das	Patna	Ranikitta	5-Jan-21	
29	Keshav Ghosh	Bhagalpur	Singhnan	8-Jan-21	
30	Pritam Kumar Ghosh (Gokul)	Kolkata	Lakhanpur	10-Jan-21	B/o Pranab (Kanhaiya)

31	Siyaram Ghosh	Patna	Teghra Lakhanpur	13-Jan-21	
32	Subhash Chandra Das	Jagatpur	Jagatpur	14-Jan-21	
33	kailash Chandra Ghosh	Deoghar	Jagdishpur	14-Jan-21	F/o Bipul & Bishnu Ghosh
34	Santosh Kumar Das	Ghaziabad	Panjwara	17-Jan-21	B/o Manioj Kumar Das
35	Mandip Kumar	America		19-Jan-21	Son IL/o Gouri Shankar Dutta
36	Geeta Rani Das	Tagepur	Tagepur	19-Jan-21	
37	Nibha Rani Das	Ganga Vihar, Bhagalpur	Dhouni	20-Jan-21	W/o Late Rudranesh Prasad Das
38	Khagendra Nath Sinha		Barari	20-Jan-21	S/o Sarat Chandra Sinha
39	Indrajeet Ghosh	Noida Extension	Mahiyama	21-Jan-21	B/o Anand Chandra Ghosh (Manik)
40	Deepa Das	Noida	Lakhanpur	29-Jan-21	W/o Prakash Chandra
41	Nutan Das	Muzaffarpur	Sabalpur	31-Jan-21	W/o Bhradev Verma
42	Radha Sinha	Bokaro	Jagatpur	6-Feb-21	W/o Parmanand Sinha
43	Gopal Krishna Ghosh	Pathakdih	Pathakdih	16-Feb-21	S/o Late Shital Prasad Ghosh
44	Rakhal Chandra Sinha	Kalyan, Mumbai	Bounsi	20-Feb-21	
45	Budheswar Chandra Ghosh (Budhesh)	Purnea	Mohanganj	20-Feb-21	
46	Pawan Ghosh	Ishakchak	Dih Daryapur	27-Feb-21	
47	Keshav Mitra	Babutola, Banka		3-Mar-21	B/o Kanhaiya Mitra
48	Rekha Das	Burhanath	Khaira	7-Mar-21	M/o Animesh Das
49	Arundhati Sinha	Anandbag, Bhagalpur	Ranikitta	15-Mar-21	W/o Late Amarendra Chandra Sinha
50	Dhurjhati Kumar Das (Manik)	Lalu Chak	Pathakdih	16-Mar-21	
51	Sangeet Kumar Das	Gaya	Khaira	1-Apr-21	
52	Bimal Kumar Das			3-Apr-21	
53	Niranjan Kumar Ghosh	Katihar	Teghra Lakhanpur	5-Apr-21	B/o Chitranjan Ghosh
54	Nitya Nand Sinha	Dumka	Banka	10-Apr-21	
55	Dewesh Sinha	Bhagalpur	Manoharpur	10-Apr-21	B/o Late Sanjay Kumar Sinha
56	Nimai Chandra Ghosh	Ranchi	Chorhar	10-Apr-21	B/o Nitya Nand Ghosh
57	Animesh Ghosh	Lucknow	Karharia, Banka	10-Apr-21	S/o Manoj Ghosh
58	Joli Rani Ghosh	Khanjarpur	Bhattachak	10-Apr-21	M/o Ashish Kumar Ghosh
59	Sanjeev Ghosh	Dumka		11-Apr-21	S/o Kamleswari Prasad Ghosh
60	Hira Choudhary	Ranchi	Ranidiyara	12-Apr-21	W/o Late Banmali Choudhary
61	Samir			13-Apr-21	
62	Shailendra Sinha	Orai Jankipur		13-Apr-21	
63		Baniyadih		13-Apr-21	W/o Vijay
64	Bam Chandra Sinha	Tilkamanjhi	Rajapur	13-Apr-21	F/o Pravin Sinha
65	Bipul Kumar Dutt	Kolkata	Dhoura Rajpur	13-Apr-21	S/o Late Baleswar Prasad Dutt

66	Archana Ghosh	Jamalpur	Assi	13-Apr-21	W/o Ratan Kumar Ghosh
67	Bhupendra Chandra Das		Tana Bihpur	14-Apr-21	S/o Late Harimohan Das
68	Ajay Sinha	Patna	Baniyadih	15-Apr-21	F/o Rajat sinha
69	Nitu Ghosh	Prayagraj		15-Apr-21	Kaki/o Sanjeev Kumar Ghosh
70	Gouri Das	Bhikhanpur	Chara Bargram	19-Apr-21	Kaki/o Shubhash Chandra Das
71	Anjani Kumar Das (Guddu)	Khanjarpur	Barari	19-Apr-21	S/o Late Murli Mohan das
72	Bijay Kumar Sinha	Madhepura	Mohanganj	20-Apr-21	F/o Sanjay, Jay and Jayant
73	Ajay Kumar Mitra	Bokaro	Mukheriya	22-Apr-21	
74	Shobha Rani Roy	Noida	Tarar	22-Apr-21	W/o Nand Kishore Roy
75	Shushila Ghosh	Patna	Orai Jankipur	24-Apr-21	W/o Late Rabindra Chandra Ghosh
76	Arun Sinha	Patna	Bhawanipur Milki	25-Apr-21	
77	Kumar Ghosh	Khanjarpur	Tagepur	25-Apr-21	S/o Late Ramesh Chandra Ghosh
78	Himanshu Ghosh	Deoghar	Orai Jankipur	25-Apr-21	
79	Asha	Godda	Ramnagar	25-Apr-21	
80	Sandeep Kumar Sinha	Delhi	Bhawanandpur	26-Apr-21	S/o Late Shivnandan Prasad Sinha
81	Rakjeev Ranjan Das	Patna	Mukheriya	26-Apr-21	
82	Durga Prasad Dutta	Bhagalpur	Singhnan	26-Apr-21	S/o Late Bipin Chandra Dutta
83			Begamsarai	26-Apr-21	W/o Ranjit Kumar Sinha
84	Chitrnanjan Das	Uttam Nagar, Delhi	Dumramah	26-Apr-21	S/o Late Satish Chandra Das
85		Khagaul	Ithari	27-Apr-21	S/o Ranjit Ghosh
86	Ratnamal Dutta	Dhanbad	Kushmaha	27-Apr-21	W/o Shri Prakash Dutta
87	Usha Das	Bhagalpur	Lakhanpur	27-Apr-21	M/o Abhay Kumar Das
88	Indu Dutta	Patna	Manjhiyara	27-Apr-21	
89	Rabindra Chandra Ghosh	Patna	Orai Jankipur	28-Apr-21	F/o Anant Kumar Ghosh
90	Ranjit Ghosh	Khagaul	Ithari	28-Apr-21	
91	Munmun	Banka	Kasba	28-Apr-21	S/o Late Shailendra Chandra Sinha (Solen)
92	Uttam Dutta	Bhagalpur	Kushmaha	29-Apr-21	
93	Gudul	Banka	Kasba	29-Apr-21	S/o Late Balram Chandra Sinha
94		Bhikhanpur	Dih Daryapur	29-Apr-21	M/o Dr Asim Kumar Das
95	Sunil Kumar Ghosh	Bhagalpur	Mahiyama	1-May-21	
96	Sanjay Kumar Sinha	Faridabad	Manoharpur	2-May-21	
97	Nitya Nand Sinha	Banka	Kasba	3-May-21	S/o Late Jagdish Chandra Sinha
98	Pratibha	Orai Jankipur	Orai Jankipur	4-May-21	M/o Bimal
99	Shushant Kumar Sinha (Jhantu)	Purnea	Dumramah	4-May-21	

100	Mritunjay Kumar Das	Ranchi	Chara Bargram	6-May-21	S/o Late Kist Kumar Das
101	Ram Chandra Ghosh	Bhagalpur	Banka	6-May-21	
102	Pursottam Das	Surkhikal	Khaira	7-May-21	
103	Sanjay Kumar Das	Bhikhanpur G N 1	Khaira	8-May-21	S/o Late Sudha Babu
104		Laxmipur	Laxmipur	8-May-21	W/o Bhagwan
105	Laxmi Mitra	Barari	Barari	8-May-21	M/o Praveer Kumar Mitra
106	Vijay Kumar Das	Tilkamanjhi	Lakhanpur	9-May-21	
107	Pradip Kumar Ghosh	Sanhoula	Mahiyama	9-May-21	
108	Geeta Rani Ghosh	Khanjarpur	Tagepur	11-May-21	W/o Late Murli Dhar Ghosh
109	Kamal Kishor Sinha	Kolkata	Sujapur	12-May-21	B/o Manoj Kumar Sinha
110	Paras Kant	Ghaziabad	Jagatpur	13-May-21	S/o Prashant Kumar Das
111	Gopal Chandra Sinha	Purnea	Dumramah	13-May-21	S/o Late Shushant Kumar Sinha (Jhantu)
112	Gopal Chandra Das	Katihar	Mukheriya	14-May-21	S/o Ladli Mohan Das
113	Archana Rani Das (Munni)	Mumbai	Manoharpur	15-May-21	W/o Late Shankar Kumar Das
114	Vibha Rani Sinha	Bhagalpur	Jagdishpur	18-May-21	W/o Late Subodh Chandra Sinha
115	Chhabi Das	Surkhikal	Dih Daryapur	18-May-21	W/o Devbrat Das (Bansi)
116	Geeta Majumdar	Rohini, New Delhi	Bhuriya	22-May-21	W/o Late Pasupati Majumdar
117	Praveen Kumar (Rajesh)	Rohini, New Delhi	Mahiyama	22-May-21	S/o Late Kailash Bhushan Sinha
118	Umesh Chandra Das	Begusarai	Dhouni	22-May-21	S/o Late Bhola Nath Das
119	Anant Prasad Sinha	Mohanganj	Mohanganj	28-May-21	
120	Shaikhar Ghosh	Ratanpura	Ratanpura	8-Jun-21	
121	Manas Kumar Dutta	Bhagalpur	Dhouri	15-Jun-21	S/o Late Arun Chandra Dutta
122	Mrigendra Chandra Ghosh	Bhagalpur	Lakhanpur	17-Jun-21	
123	Sitaram Das	Bhagalpur	Mukheriya	19-Jun-21	F/o Chitranjan Das (Murli)
124	Niranjan Dutta	Gurugram	Dhouni	23-Jun-21	F/o Anmol Dutta
125	Subodh Chandra Ghosh	Darbhanga	Ratanpura	29-Jun-21	
126	Sindhu Bala Das	Bounsi	Bounsi	4-Jul-21	W/o Late Samesh Chandra Das
127	Namita Ghosh	Pathakdih	Pathakdih	5-Jul-21	W/o Gopal Krishna Ghosh
128	Nimai Chandra Ghosh	Jamshedpur	Chara Bargram	13-Jul-21	S/o Late Ram Chandra Ghosh
129		Karhariya, Banka	Karharia, Banka	23-Jul-21	M/o Sujit Kumar Ghosh (Sintu)
130	Rita Ghosh (Chhabi)	Mundichak	Khaira	24-Jul-21	W/o Late Subodh Chandra Ghosh
131	Nand Kishor Roy	Tilkamanjhi	Tarar	28-Jul-21	F/o Gautam Roy
132	Pulin Chandra Ghosh	Monghyr	Tarar	2-Aug-21	B/o Gopal Chandra Ghosh
133	Khema Das	Barari	Barari	12-Aug-21	M/o Gopesh Chandra Das
134	Priti Sinha			17-Aug-21	
135	Prashant Kumar Majumdar	Uttam Nagar, Delhi	Pathakdih	19-Aug-21	S/o Late Brajendra Kumar Mazumdar

136	Gauri Shankar Das	Jaipur		28-Aug-21	
137	Sobha Rani Das	Kisanganj	Chopra, Purnea	5-Sep-21	W/o Manoranjan Das
138	Sambhu Nath Das	Jiromile, Bhagalpur	Dih Daryapur	6-Sep-21	
139	Arjun Kumar Das	Dhebar Gate, Bhagalpur	Chara Bargram	11-Sep-21	S/o Late Yogendra Narayan Das
140	Niroj Kumar Ghosh	Banglore	Singhnan	12-Sep-21	S/o Late Mahavir Prasad Ghosh
141	Chitranajan Kumar Ghosh (Chhatu)	Bhagalpur	Chara Bargram	13-Sep-21	F/o Manav & Manas
142	Mohan Das	Patna	Narayanpur	14-Sep-21	
143	Amulya Kumar Sinha (Fakir)	Manharpur	Manharpur	19-Sep-21	F/o Sanjay Sinha
144	Rudhir Chandra Sinha	Banka	Rupsa	2-Oct-21	F/o Raja, Pintu
145	Ashwani Kumar Sinha	Kolkata	Ranikitta	10-Oct-21	F/o Anunay & Akash Sinha
146	Madhu Rani Sinha	Dande, Banka	Dande, Banka	11-Oct-21	W/o Late Ganesh Chandra Sinha
147	Binod Kumar Sinha	Bounsi	Bounsi	11-Oct-21	S/o Late Sitaram Sinha
148	Charu Chandra Sinha	Orai Jankipur	Orai Jankipur	13-Oct-21	Uncle/o Punit Kumar Sinha
149	Shyam choudhary	Bhagalpur	Ranidiyara		B/o Bhagwati Choudhary



“ ॐ शान्ति । भगवान् दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करें ”

आंगिका बाल कविता

अंकुर जी

वर्षा होलै, धरती भिंगलै
माँटी खूब झुरमुरोँ होलै
निकलोँ—निकलोँ, आवोँ—आवोँ
मत शरमावोँ अंकुर जी ।
धरती बहुत दिन सन्यासी
छै, छैलोँ छै बहुत उदासी
सुखी केँ अँकड़ी गेलोँ छै
खटिया, मचिया, पौआ—पासी ।
अब निसंठ धरती में थोड़ोँ
थोड़ोँ नमी सरसता ऐलै
ताँ भी झट निकली केँ आवोँ
जिया जुड़ावोँ अंकुर जी ।

तोहरोँ खूब बलैया लेताँ
तोरा छोड़ी कभी नै जैताँ
बच्चा सब तेँ तोहरा आपनोँ
बीच पावी काफी हरसैताँ ।
हाथ बढ़ावै छौँ तोहरा दिश
तहूँ बढ़ावोँ अंकुर जी
बहुते हरियाली छै सबसेँ
नैन लड़ावोँ अंकुर जी ।
स्व. डॉ० श्यामसुन्दर घोष
ऋतंबरा, गोड्डा (झारखण्ड)

गुरेश मोहन घोष सरल की 3 कविताएँ

बिजली—बिल

कहलियै—जीबू! जरा लालटेन जराबें त ।
बिजली के बिल अइलो छै, पढ़बै ।

भट्टा

जीबू पुछलकै—बाबा!
ई भट्टा पर एत्ते पिपरी कैन्हें छै?
कहलियै—जाबे दें,
ई कोनो चीनी डीलर के भट्टा होतै ।

अहिंसा

कहलियै—जीबू की करै छै?
कहलकै—मांसो से पिपरी चुनै छियै ।
कहलियै—कैन्हें?
कहलकै—कत्तेनी जीबो के हत्या होय जैतै ।

— स्व. गुरेश मोहन घोष 'सरल'
ओरई, जानकीपुर

बूढ़ा-बूढ़ी

आभीं तोहरो उमर की होलों
तुतली-तुतली बोली होलों
बच्चा जेना बोले छै बोली
ओन्हें तों बोले लागले ।

पोता-पोती हँसे लागलों
तोहरा देखी किलके लागलों
व्हील चेरर दौड़ावै छौ
मोन खूब लागे लागलों ।

हम्मं बेरासी तोहे तेहत्तर
तोहरा सभें बूढ़ी कहै छौं
हमरा जवान कहै छै सब
दाँतो तोहरा नंहियें रहलौं
बूढ़ा-बूढ़ी हस्सो बोलो
जीवन के गुत्थी खोलो ।

— स्व. रविन्द्र चन्द्र घोष
ओरई, जानकीपुर

“एक यात्रा”

(१)
जब भूख मिटती ही नहीं,
रीतिरिवाज टिकतीं नहीं,
सब ही विपरीत हो जाते,
बुरा से बुरा होते ये सभी ।

(२)
दृष्टि जब बिगड़ जाती है,
पेट कुतिया बन जाती है,
सर्वत्र ही पत्तलें चटतीं हैं,
—पेट-भरु सम निसंग भी,
सभी जन नहीं हो पाते हैं ।

(३)
—प्रयास कर पेट-भरु बन,
—कर निरुसंग भजन मनन,
सूरत कैसी भी क्यों ना हो,
सदा उसका कर रह दमन ।

(४)
अतुलित हो यदि धन-धान्य,
सबके सब हो जाते अमान्य,
—प्रचुर धन देता सन्तोष नहीं,
रे मनुज! कब होगा सद-ज्ञान,

(५)
उतना ही करले धन उपार्जन,
परिवार का हो भरण-पोषण,
अतिथि देवादिका हो स्वागत,
साधु-संत का नित हो सम्मान ।

(६)
बिनु सत्संग विवेक नहीं होई,
प्रभुकृपा बिनु सुलभ न सोई,
—यही है जीवन धन सर्वोत्तम,
चाहे तो पा सकता सब कोई ।

(७)
जब चाह पूर्णतरु मिटजाती हैं,
सभी चिंताएँ भी भागजाती हैं,
तब मन उन्मुक्त निस्पृह होकर,
—कहता वह मानव प्रेमाभूत में
उसे 'महानिर्वाण' नहीं चाहिए ।



राय बहादूर सिन्हा
(कबिराय)
बोधगया

FROM HEART FOR HEART - ATTACK THE HEART ATTACK



Prof. (Dr.) Jeewan Kumar Mitra
Lakhanpur, Tarapur (Bihar)

Recently the whole world faced a global pandemic and still it is going on. After 1917 Spanish Flu, this COVID-19 was a big threat and challenge for mankind. We were getting set for nuclear, genetic engineering, nano particle, stem therapy and nature pushed us down to basic lockdown, physical distancing, mask, sanitisation and our immunity came to our rescue. Many lives were lost and are being lost even now. Mortality, morbidity and disability are continuing. Average life span has been reduced on average by 2.5 years.

We can divide all causes of mortality and morbidity in two broad headings-one is Communicable Diseases (CD) and second as Non-Communicable Diseases (NCD). CD has been preventable and treatable by awareness, researches, understanding, vaccination etc. to large extent especially by developed countries.

Heart health for every one is a fundamental human right. Heart disease is spreading as an epidemic. Occurring in young age about 20 per cent cases at about 40-50 years.

In our country, CVD occurs 10 years earlier as compared to developed countries. In India, risk of coronary artery disease three-four (3-4) times more common than USA, six (6) times more than China, 20 times more than Japan.

This level of rise in heart disease and stroke is a combination of modifiable and non-modifiable risk factors. By finding out the level of risk one can take simple but significant step towards preventing one's life.

Hypertension (raised BP), diabetes, obesity, level and abnormalities of cholesterol, smoking, lack of physical activity, alcohol, lifestyle, stress, air pollution, unhealthy food are important risk factors for heart disease. Heart disease and stroke can be better prevented by regular exercise, no smoking and a healthier diet, low in salt and fat, rich in fibre, fresh vegetables and fruits.

High sodium and fat intake are putting our kids at risk. Fast food, junk food, cola culture, lack of physical activity, childhood obesity all are contributing factors. Nearly one in three adults over the age of 25 will have blood pressure-one of the biggest risk factors for heart disease. There is a vast public misperception and disproportional lack of attention

paid to people's risk of heart disease.

By adopting suitable lifestyle changes and reducing the risk, the picture really can change for better. It is never too early and never too late to start taking care of one's heart. We should try to create heart healthy environment.

International Senior Citizen Day is celebrated on October 1 every year. United Nation General Assembly on December 14, 1990 designated October 1 as the International Day of Older Persons. All regions will see an increase in the size of older population between 2019 and 2050. The largest increase is projected to occur in Eastern and South Eastern Asia. The theme for 2020 is “Digital Equity for All Ages”. International Senior Citizen Day is celebrated to raise awareness about issues affecting the elderly and to appreciate the contribution that older people make to society.

Covid-19 made people afraid to attend routine and emergency appointment and became isolated from friends, family, relatives. Lack of contact increases the mental strain and stress and also there was reduction of physical exercise.

Digital network has the power to connect patient with families, friends, doctor, Healthcare workers. Use heart to connect with heart, use heart to beat heart disease. Telehealth telemedicine power of digital network. No one should have to feel alone, pandemic or not. Power of digital health to improve awareness, prevention and management of CVD globally is the goal of 2021.

With the wishes and best of luck for healthy heart, happy heart, connected heart. Love, listen and take care of your heart.

Prof. (Dr.) Jeewan Kumar Mitra
Lakhanpur, Tarapur (Bihar)

डॉ. अमरेन्द्र के दो गीत



डॉ. अमरेन्द्र
लाल खाँ दरगाह लेन, सराय,
भागलपुर ८१२००२ (बिहार)
मो. 8340650679, 9939451323
वेबसाइट : www.dramrendra.com

1
कौन करेगा गीतों का श्रृंगार, हमारे बाद ।
सब तो सजा रहे हैं कोठी
सपने, महल, अटारी
तुलसी चौरा पीछे रोती
रजनीगंधा प्यारी
रुक जाए न गंधों का व्योपार, हमारे बाद ।
ये जो फूल, चटक रंगों के
पीछे नागफनी है
अब तो प्यार यहाँ पर साथी
केवल महाजनी है
रोएगा सिसकी भरभर के प्यार, हमारे बाद !
साँसों में संगीत न होगा
अधरों पर न छन्द
लुटी मिलेगी दिल की बस्ती
मन के द्वारे बन्द
कितना सूना होगा यह संसार, हमारे बाद !

२
सबको अपने अपने जन की सुध आए फिर
अमरेन्द्र ऐसा कोई इक गीत लिखो तुम ।

बिन पावस के मोर नृत्य हो आँगन आँगन
हिचकी पर हिचकी खाए परदेसी साजन
बिना पठाए पाती प्रीतम दौड़े आए
साफ साफ मोटे अक्षर में प्रीत लिखो तुम ।



साँसों में कस्तूरी की खुशबू लहराए
मन गोकुल का गाँव लगे, ऐसा मुसकाए
चाहे जो भी लिखे छन्द मधुपुर के यश में
यमुना की पागल लहरों की जीत लिखो तुम ।

महकेंगे कचनार प्यार के, ये महकेंगे
बिन फागुन तन मन पलाश के ये लहकेंगे
लेकिन पहले टोडी, शाबरी, गुर्जरी में तो
रूठे पाहुन को प्राणों का मीत लिखो तुम ।

डॉ. अमरेन्द्र एक परिचय

काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध,
आलोचना की विधाओं में अब तक सत्तर से
अधिक पुस्तकों का सृजन ।

तीन दर्जन से अधिक प्रसारित रेडियो नाटक
की पांडुलिपियाँ इधर उधर पड़ी हुई ।

प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं, पुस्तक और ग्रन्थों में
दर्जनों लेखों का प्रकाशन ।

गौरी घोष की 2 कविताएं

है अनादि अनन्त अखण्ड

है अनादि अनन्त अखण्ड
श्याम रूप में, मन में बसे
शत-शत प्रणाम अर्पण चरणों में
धन्य हुई मैं मन ये कहे
है अनादि.....

हे विराट पूजा कैसे हो
आपकी, मैं न जानूँ
केवल हृदय प्रतिपल पुष्प बन
स्वयं समर्पित मैं मानूँ
मन है मन्दिर मेरा स्वामी
आप वहीं हैं बसे

है अनादि.....
मन मन्दिर के द्वार पे
मैं आठों पहर सेवा में
आपकी महिमा का सुमिरण
कर डूबी रहती ध्यान में
दासी हूँ प्रभु चरण कमल की
करूँ वही जो आप कहें
है अनादि अनन्त अखण्ड
श्याम रूप में मन में बसे द्य

आई न गवनवाँ की बारी.....

आई न गवनवाँ की बारी
बालापन में लगन भया
तब से राह मैंने देखा किया
पहर केसरिया सारी
आई ना.....

काहे न लेने आए मोहे
ना ही प्रीतम बुलावे मोहे
मैं तो जग में ऐसे रहूँ
सर ऊपर कटार दोधारी
आई ना.....

तेरी आस में देहरी पे खड़ी मैं
आशा नैनों में लिए बही मैं
बीती उमरिया आके देखो तो
कैसी है रहनी हमारी
आई ना.....

जग में रहूँ मैं पर जग में नहीं मैं
जल में प्यासी मीन सी हूँ मैं
ये तो तलैया बड़ी साँकरी
अब सागर में रहने की बारी
आई ना.....



गौरी घोष
तेघड़ा लखनपुर (बेगूसराय)

ससुराल गेंदा फूल

बंदनवार से बिदाई तक साथ निभाती है
ससुराल और गेंदा फूल यही अर्थ बताती है।
सच मानिए ससुराल और गेंदा फूल
दोनों साथ पूर्ण होती है।
ससुराल ना हो तो नारी अधूरी
बगिया में गेंदा ना हो, तो बगिया अधूरी।
गेंदा सर्व देव प्रिया और सर्व सुलभ है
नारियों की स्वभाव जितनी सरल है।
कहीं भी जी उठती है
नारियों की तरह ढल जाती है।
गेंदा ही एक ऐसा फूल है
जो ससुराल के साथ कदमताल करती है।
ससुराल कमियों के बाद भी स्वीकारती है
गेंदा अल्पना ना बनाने वाली नारी की।
कमियां भी छुपा लेती है
रगोली बन सज जाती है।
नारंगी, पीली, लाल और खुशबू भीनी-भीनी
आकर्षक और सकारात्मकता से सनी।
गेंदा मुरझाती नहीं है कई दिनों तक
जैसे नारी नहीं थकती महीनों, सालों तक।
सबको खुश रखना गेंदा
और स्त्रियां ही जानती हो जैसे।
स्त्रियां ससुराल में सबकी चहेती
अपने भूमिका से होती है।
गेंदा भी निभाती है भूमिकाएं।
हर वर्ग के लोगों से अटूट, आत्मीय रिश्ता
बच्चों के लिए कॉर्क बन जाती है
कभी रंग बन कर इठलाती है।
गेंदा सौंदर्य प्रसाधन बन युवतियों की सहेली बन जाती है
फिर जाती है घर के मजबूत स्तंभ के पास, औषधि बन कर।
सबको दुलारती, खुश करती,
ये विदा हो जाती।
निर्मालय बन कर पुनः वापस आने
वैसे ही तैयार फिर कोई स्त्रियां ससुराल आने।

स्मिता घोष
तगेपुर सुरखीकल, भागलपुर
हालवासी : नॉएडा, उत्तर प्रदेश

अर्थहीन जीवन शैली

नत जीवन के संघर्षों से
जब टूट चुका हो अन्तर्मन,
तब सुख के मिले समन्दर का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥
जब फसल सूख कर जल के बिन
तिनका –तिनका बन गिर जाये,
फिर होने वाली वर्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥
सम्बन्ध कोई भी हों लेकिन
यदि दुःख में साथ न दें अपना,
फिर सुख में उन सम्बन्धों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥

छोटी-छोटी खुशियों के क्षण
निकले जाते हैं रोज़ जहां,
फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥
मन कटुवाणी से आहत हो
भीतर तक छलनी हो जाये,
फिर बाद कहे प्रिय वचनों का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥
सुख-साधन चाहे जितने हों
पर काया रोगों का घर हो,
फिर उन अनगिनत सुविधाओं का
रह जाता कोई अर्थ नहीं ॥ ...!!



हरिशंकर दत्ता
द्वारका, नई दिल्ली

युवा वर्ग से

क्या लिखूं

क्या लिखूं तुझपर
कुछ लफ्ज भी तो नहीं
आसमान लिखूं तुझे
धरती खुद को
तो दोनों की ही दूरी बहुत है
अपनी अपनी मज़बूरी बहुत है
क्या लिखूं तुझपर
कुछ लफ्ज भी तो नहीं
नदी लिखूं तुझे
सागर खुद को
तो दोनों की ही कद अलग है
अपनी अपनी जद्दोजहद अलग है
आग लिखूं तुझे
पानी खुद को
तो दोनों के ही अस्तित्व अलग है
अपने अपने कर्तव्य अलग है ।

लोग

लोग हर मोड़ पर रुकते क्यों हैं
रुक कर संभलते क्यों हैं
इतना ही गर डरते हैं खोने से
तो घर से निकलते क्यों हैं
न रौशन, दीपक न चिराग़ नाम मेरा
फिर वो मुझसे जलते क्यों हैं
जो खुद ही दूर गए हमसे
हम उनके लिए इतना मचलते क्यों हैं
अक्सर ठोकर खाते हैं जब सड़कों पर
फिर जमीं पर चलते क्यों हैं
घर बनाया जब सर छुपाने की खातिर
छत पर फिर हम टहलते क्यों हैं
लोग हर मोड़ पर रुकते क्यों हैं
रुक कर संभलते क्यों हैं ।



साकेत घोष
पिता : स्व प्रदीप कुं० घोष
भीखनपुर, भागलपुर

अजीत कुमार सिन्हा की 2 कविताएं

वक्त की मार

मन की व्यथा अब किसे सुनाऊँ
वक्त ने ही जब साथ छोड़ दिया
रहा नहीं अपनों में अपनापन
क्या बात करूँ अनजानों से ।

चिर-परिचित की सेवा करते
नहीं थकाया अपने तन को
आज वही संग छोड़ गया
समझाऊँ कैसे अपने मन को ।

न जाने भूल कहाँ हुई
सोच के मन घबराता है
दिल दिमाग भी डर-डर कर
आगे को कदम बढ़ाता है घ
ढलती उम्र में आँखों ने अब
अशक बहाना छोड़ दिया
किसे दिखाऊँ आँसू अपने
अपनों ने जब छोड़ दिया ।



जीवन दर्शन

समय की...
इस अनवरत बहती धारा में...
अपने चंद सालों का...
हिसाब क्या रखें...!!

जिंदगी ने..
दिया है जब इतना..
बेशुमार यहाँ..
तो फिर ..
जो नहीं मिला उसका
हिसाब क्या रखें...!!

अपनों ने दिया है...
इतना प्यार यहाँ..
तो कड़वी ..
बातों का..
हिसाब क्या रखें...!!

दिन हैं, उजालों से..
इतने भरपूर यहाँ..
तो रात के अँधेरों का..
हिसाब क्या रखें...!!

खुशी के दो पल..
काफी हैं..खिलने के लिये..
तो फिर.. उदासियों का..

हिसाब क्या रखें...!!

हसीन यादों के मंजर..
इतने हैं जिंदगानी में..
तो चंद दुख की बातों का..
हिसाब क्या रखें...!!

मिले हैं फूल यहाँ..
इतने किन्हीं अपनों से..
फिर काँटों की..
चुभन का हिसाब क्या रखें .. !!

चाँद की चाँदनी ..
जब इतनी दिलकश है..
तो उसमें भी दाग है..
ये हिसाब क्या रखें...!!

जब खयालों से..ही खुशियां..
भर जाती हैं दिल में..
तो फिर मिलने.. ना मिलने का..
हिसाब क्या रखें .. !!

कुछ तो जरूर..
बहुत अच्छा है..सभी में
दोस्तो..
फिर जरा सी.. बुराईयों का..
हिसाब क्या रखें...!!

अजीत कुमार सिन्हा
तगेपुर, जगदीशपुर
(भागलपुर)

अजय कुमार सिंह की 2 लघु-कथाएँ

भावना का तुष्टीकरण

माँ और पापा से पता चला कि माँ दो सन्तान (एक पुत्र और एक पुत्री) के पक्ष में थी जबकि पापा एक सन्तान (पहली पसन्द बेटी) के पक्ष में थे। मैं पैदा हुई, पापा ने जश्न मनाया और घी के लड्डू बाँटे। फिर पापा ने स्वयं परिवार कल्याण का ऑपरेशन भी करा लिया।

मेरी परवरिश में कोई कमी नहीं हुई, मैंने अभाव कभी नहीं देखा। समय बीतता गया, मैंने यादवपुर यूनिवर्सिटी से बी.टेक., एम. बी.ए. किया। अति सम्पन्न घर के एक आई.आई.टी.यन राजकुमार (मृदुल) के साथ मेरी शादी कर दी गयी। सिर्फ मैं ही नहीं, दोनों पक्ष के सभी लोग प्रसन्न हैं। मेरी खुशीयों के लिए पापा कुछ भी न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं।

चूँकि मृदुल की पोस्टिंग बंगलोर में है, मैंने भी वहीं की एक कम्पनी में जॉइन कर लिया।

सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था। तभी एक सड़क दुर्घटना में पापा चल बसे। माँ अकेली पड़ गयी। घुटनों के दर्द से वह परेशान है। मैं माह में दो बार उससे मिलने आती हूँ और उसकी सारी व्यवस्था करके जाती हूँ। उसके मन में कहीं न कहीं इस बात की टीस है कि उसे बेटा नहीं है। उसका बेटा आकर उसे ले गया, फलां का बड़ा बेटा बहुत लायक है, उसकी बहु उसका ख्याल रखती है आदि आदि बातें वह हमेशा दुहराती है।

मैं छुट्टी लेकर उसके पास आई हूँ। उसका वही डायलॉग चल रहा है। इस बार मैंने माँ का भी टिकट ले लिया है। हमदोनों बंगलोर पहुँचे। पूरे दिन के लिए एक नर्स और कामवाली रख दिया है। शाम को मैं आफिस से आ जाती हूँ, फिर सब कुछ अपने हाथों से करती हूँ। मृदुल भी उनका काफी ध्यान रखता है। किसी भी तरह माँ की सेवा सुश्रुषा में कोई कमी नहीं होती। छुट्टियों में उन्हें लेकर पार्क और मंदिर जाती हूँ। सब कुछ के बावजूद माँ की भावनाओं का तुष्टीकरण किस स्तर तक होता है, यह तो माँ ही बता सकती है।

स्कूल टॉपर

राघव अपनी पत्नी (रीमा) और एकमात्र सन्तान (रोमित) के साथ रह रहा है। वह गोरखपुर में बड़ा अधिकारी है। गांव में अकेली रहने वाली उसकी माँ गम्भीर रूप से बीमार हुई, लोगों ने लाद फाद कर उसे राघव के पास पहुँचा दिया। वह ठीक तो हुई लेकिन वह उपेक्षा की शिकार है। ऑफिस जाते वक्त उसने पुत्र से पूछा, कब आओगे बेटा? कभी भी, तुम्हें इससे क्या मतलब? खामखाह घर से निकलने के समय मूड खराब करती हो। हैलमेट, चावी और लंच पैकेट लेकर पोर्टिको पहुँची पत्नी ने वही प्रश्न दुहराया। शाम सात तक वापस आ जाऊंगा। माँ अन्दर ही अन्दर रो पड़ी। राघव के आने के पहले एक ऑटो रिक्शा बुलाया गया, माँ गांव के लिए रवाना हुई, उसे किसी ने रोका भी नहीं।

पापा, आपने कहा है कि आप स्कूल टॉपर थे।

बिल्कुल, कोई शक है क्या? आखिर बात क्या है?

बात यही है कि आपके टॉपर होने में दादी माँ का भी सहयोग, वलिदान और त्याग रहा होगा?

हाँ, लेकिन यह सब बातें तुम क्यों पूछ रहे हो?

क्या इसके बदले दादी के लिए यही पुरस्कार है? जो सलूक आप उसके साथ करते हैं, वह उसी की हकदार है? इस बात से मैं बहुत दुखी हूँ पापा।

जिस पत्तल में खाते हो, उसी में छेद करते हो?

आपने सप्ताह भर पहले समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि छेदी शर्मा (एक किसान का बेटा) जिसने गांव के स्कूल में पढ़ा, आई.ए.एस. परीक्षा में दूसरे स्थान पर रहा। राघव का पिल्ली चमका।

इसके माध्यम से तुम क्या कहना चाहते हो?

आप अपनी थाली अपने पास रखिये, मैं तो चला दादी के पास। दादी ने बताया था, वहां भी हाई स्कूल है।

दोनों की घिघी बंधने लगी। दोनों रोने लगे।

हाँ, अगर आपलोग मुझे आश्वस्त करें कि वह अब यही रहेगी, उसे उचित प्यार और सम्मान मिलेगा साथ ही साथ कभी तिरस्कृत नहीं किया जाएगा तो मैं अपना निर्णय बदल सकता हूँ। एक कहावत तो आप जानते ही होंगे कि जो बोओगे, वही काटोगे। अगले ही रोज पापा दादी को गोरखपुर ले आये।

अजय कुमार सिंह

जगदीशपुर, भागलपुर

रंजय सिन्हा के दो आलेख

अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन एक झरोखे से

श्री गणेश हुआ था सन् २००७ में, सबों के अथक प्रयास से।
अमरेश्वर जी के कृषि विहार से, जयदेव दा के जय घोष से।
श्री सी आर सिन्हा जी सरीखे कई बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद से।
प्रवीण घोष की प्रवीणता, गुड्डन की निपुण कार्य शैली व अनिमेष जी के अनायास प्रयास से।
निरूपम जी की विविधता, प्रशांत जी की निरंतरता व मानस जी के हुंकार से।
संजय जी की कार्यकुशलता, अभय दा व अनेकों के साथ-सहयोग से।
अमित की अमित छाप, नवीन की नवीनतम व सौरव स्वरूप नवभाल से।
अमरेन्द्र, अभिनंदन जैसे कई युवा के दिन-रात अग्रसित कदम ताल से।
सुशोभित हो रहा आज। ठट्ठै, अजीत बाबू व निहार जी के प्रखर, निरंतर चाल से।
फले-फूले विकसित हो हम हर हाल चिरकाल गौरवान्वित हैं हम,
आज पूरा समाज चहू दिशा में हो रहे विकास से।
रे रंजय तू धन्य हो गया पूरे समाज के आशीर्वाद से।
नाम कई है, काम कई अभी करना हमें इस राह पे।
आओ हम सब प्रण लें कि अनवरत बढ़ते रहें करते रहे हर कार्य वो, बिना रुके बिना थके
निज फर्ज समझ अग्रसर हो मंजिल की ओर तन-मन-धन प्रभु कृपा से।



AAROGYAM

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् Health is Wealth. Jaan hai to Jahan hai.

All these sayings in Sanskrit, English and Hindi indicate and authenticate single motto of life to keep and maintain health is of prime and paramount importance irrespective of caste, creed, gender etc. During this pandemic the utmost need of a person is having advices and suggestion from the medical professionals' commonly known and called Doctors who are worthy for any day round the year but to dedicate and celebrate a day commemorating their services epitomizes bringing such section of any Society, fortunately we have measured, delved so yielded it rich both in quality as well in quantity when we explored to bring them on one platform for common cause to which they have befittingly responded rising from occasion holding their hands and breaths, making shoulder to shoulder bonding it such way as if made for each other. We have witnessed so far verities of such professionals at a call of the Society ranging to every section and divisions of Medical Sciences to our benefits in their spell bound session elaborately explaining to make things easier to understand in their own respective ways with single motto to serve the Society with all their expertise. We are really in awe of such sessions of Allopath to Ayurveda to Naturopath to Psychopath to Yoga; all in tandem with latest developments to be discussed at length with ease though contradictory yet with rich reason and logic, one really must be amazed and amused at such variations and deliberations to enjoy the process forgetting the pain for better tomorrow. We owe a lot for them hence to celebrate a day for such faces of God are self-explanatory. In such adverse and odd situations we must believe in process of accessibility, adoptability and adaptability nurtured, matured and adept enough to run as per the situation taking it as an opportunity to move ahead learning from past shaping future cumulatively and calculatively thwarting and overcoming all hurdles honing our virtues bringing at fore endeavoring, auguring and augmenting giving impetus to very destiny and desire.

Rightly said that येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मरू । ते मृत्युलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति

Last but certainly not the least to conclude symbolizing, emphasizing and upholding the occasion in true sense both in letter and spirit would be to say relevant to all time applicable to one and all:

चसर्वे भवन्तु सुखिनः । सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु । मा कश्चित् दुःख भागभवेत् ।

चशान्तिः शान्तिः शान्तिःम

Ranjay Kumar Sinha
Native: Sujapur, Presently: Delhi

आशीष कासिद की तीन गजलें

गज़ल - 1

चाहा नहीं कभी कि मुझे मालोज़र मिले
जो भी मिले बशकले मता-ए-हुंनर मिले

महबे सफर था मुझको खबर तक न हो सकी
कब धूप साथ-साथ चली कब शजर मिले

शम्सो क्रमर की चाह मुबारक उन्हीं को हो
अपनी तो आरजू है नज़र से नज़र मिले

या मैं तमाम राह अकेले ही तय करूँ
या फिर तुम्हारे जैसा कोई हमसफ़र मिले

ऊँचाईयाँ सभी को कहाँ हो सकीं नसीब
मिलने को हर किसी को यहाँ बालोपर मिले

बज़्मे-सुखन में आज कई बाहुनर भी हैं
क्योंकर किसी को दाद हरिक शेर पर मिले

'कासिद' मेरे हुनर का मुझे कद्रदाँ मिला
जैसे गुले हँसी को कोई दीदावर मिले।



आशीष कुमार सिन्हा
रानीकिता (बाँका)

गजल - 2

मैं पहले ही उनका कहा मान लेता ।
बुजुगो का वो मशविरा मान लेता

तू उलझा है अब तो उलझता न जाए
खतावार था तो खता मान लेता

बहुत ग़ौर से उनकी आँखों में देखा
मैं कैसे उन्हें बेवफ़ा मान लेता

अगर पोंछ देती इबादत ये आँसू
तो पत्थर को मैं देवता मान लेता ।

जो तुम होते मुंसिफ़ तो ऐ मेरे 'कासिद'
सजा जो भी देते सजा मान लेता ।

गजल - 3

घर बिल्कुल सुनसान हुआ
जब से कन्यादान हुआ

बरसों को बीमार मरा
सबको इतमीनान हुआ

उन बिन ईद-दिवाली क्या
फ़्रीका हर पकवान हुआ

जब से वो बिछड़े हमसे
जीवन-पथ सुनसान हुआ

खूब गिरा हूँ मैं "कासिद"
अब चलना आसान हुआ

अखिल भारतीय राठी कायस्थ संगठन के स्थापना दिवस
३१ अक्टूबर पर विशेष। गौरवशाली १५ वर्ष

VIJYA MILAN 2007



VIJYA MILAN 2008





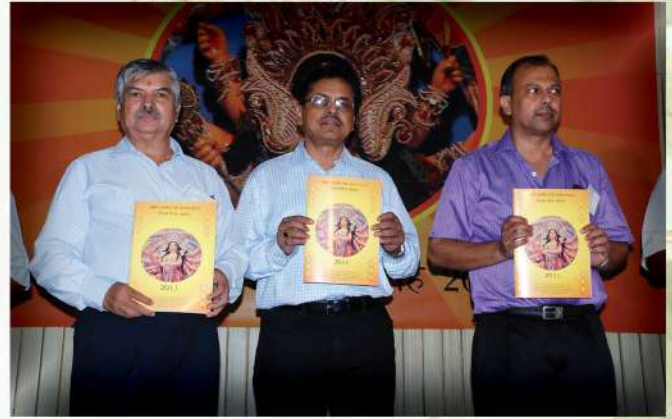
VIJYA MILAN 2010





VIJYA MILAN 2011





VIJYA MILAN 2012



VIJYA MILAN 2015



VIJYA MILAN 2017





VIJYA MILAN 2018





VIJYA MILAN 2019



राष्ट्रीय समाज (सोशल मीडिया के झरोखे से)

Logo of MPT (Madhya Pradesh Television) and other media organizations.

25 जनवरी, 2021
राष्ट्रीय मतदाता दिवस
25 जनवरी, 2021



राष्ट्रीय मतदाता दिवस
25 जनवरी, 2021
मेरा मत मेरा अधिका

कालजा म शुरू हागा आगका का पढ़ाई
जय अंग जय अंगिका

कैथी लिपि का संरक्षण समय की मांग
प्रस्तावित है वर्ना का जुड़ाव संस्कृति और संस्कार के लिए अक्षरों, डीएम

सुखद
प्रदेशीय का पानी साफ होने से जलपान जीवन की संरक्षा में मददगार
कोरोना काल में घट गई डाल्फिन की मृत्यु दर
जय अंग जय अंगिका

प्रज्ञा नीरज सिंह और उपासना दार
किशोर न्यायबोर्ड सदस्य नियुक्त

इक्वांडो में पदक जीतकर
गैटे खिलाड़ी सम्मानित

GURUPNISHAD SAMMAN
PROUDLY PRESENTED TO
Narendra Kumar Sinha
on the 2nd Annual Day
to recognise his/her commendable endeavour in his/her respective domain.
Date Dec. 11, 2020

डॉ. प्रसन्न कुमार घोष को इंटरनेशनल एक्सचेंज प्रोग्राम के लिए चुना गया

बांका की बेटी ने अमेरिका में अपने गीत से जिले का नाम किया रोशन

प्रतियोगिता
हिन्दुस्तान संघ



14 minutes ago
65th Railwek Award 5 FEB 2021 BY GM ECRLY HWY

Government of Bihar
Ministry of Education
17th Annual Day Function

257 वर्ष पूर्व राठी कावयस बंगाल से जगतपुर लोकप्र आये रो मारन, उसक बाद हुआ मांदर स्थापन
17वीं शताब्दी में शुरू हुई थी मां की आराधना

Lecture Series-2
Dr. Prakash Singh

टीएमबीयू में स्नातक स्तर पर होगी अंगिका की पढ़ाई
गंगाजल काव्यस संघ

Sinha new MD of OMFED

TATHYA
BHUANESWAR, APR 30

A senior management professional with a degree in Dairy Technology from NDRRI Karnal, Ashish Chandra Sinha, on Friday assumed the charge of Managing Director OMFED.

Sinha succeeds incumbent R Raghuprasad. Sinha is General Manager of NDDI, was posted at OMFED as an officer on Special Duty for the past four months.

He started his career as an in-plant trainee at M/s Lipton India. Subsequently he joined Indolane



Business Head altogether for 28 years.

Sinha is a recipient of "Turn around Management Award" at COMFED and other honours during his academic and professional career.

In the last three assignments, he ensured business growth from Rs.125 crore to Rs.750 crore, Rs.45 crore to Rs.170 crore and Rs.1.25 crore to Rs.100 crore. He is credited for launching around three underperforming business units with commercial and operational strategy into profit making units restoring profitability winning market share and generating year-over-year revenue gains and profits at

ग्राम दीदी ने पुलिस कर्मियों को बीच बांट मास्क

हिंदी रिपोर्टर | ब्रह्मपुर

ग्राम दीदी भागलपुर की और ने भागलपुर और काठज जिलों में कोरोना प्रभावी के बांधने के मास्क का वितरण किया गया।

ग्राम दीदी ने भागलपुर के मास्क का वितरण किया गया।

ग्राम दीदी ने भागलपुर के मास्क का वितरण किया गया।

GOVERNMENT OF ODISHA
FISHERIES & ANIMAL PRODUCTION DEVELOPMENT DEPARTMENT

NOTIFICATION
No.FA-2020-0277-2020-2021, 4228, FA-2020, Dated the 23rd March, 2021

Shri Ashish Chandra Sinha, General Manager, (Bhuvanagar Nagar, Paphos, Fisheries & Animal Production Development) OMS to Chief Secretary, Odisha Fish Producers' Federation, Ltd (OMFP), Bhubaneswar, Odisha in contractual basis on the terms and conditions as decided by the Board of Directors Administration of OMFP for a period of 03 (Three) years or until further orders.

In the name of Government,
Ashish Chandra Sinha
A.S. Secretary to Government

ब्रह्मिका व श्रेया का राज्य युवा संसद के लिए पदचन

समाग्य/भागलपुर। राष्ट्रीय युवा संसद प्रतिनिधित्व के चयन के प्रथम चरण में भागलपुर के क्षेत्र के प्रथम महिला युवा संसद का अंगुणन किया गया।

प्रथम चरण में भागलपुर के क्षेत्र के प्रथम महिला युवा संसद का अंगुणन किया गया।

प्रथम चरण में भागलपुर के क्षेत्र के प्रथम महिला युवा संसद का अंगुणन किया गया।

राकेश सिन्हा को मिला भोजपुरी सिने अवार्ड

भागलपुर। शाहकुमार प्रकाश चौरा मंत्र के दिग्गज नरेन्द्र चंद्र सिन्हा के पुत्र राकेश सिन्हा अयोध्या में हुए भोजपुरी सिने अवार्ड से सम्मानित हुए, यह अवार्ड उन्हें जुग-जुग जियो को सल्लख के लिए नवीयान दिग्गज के रूप में दिया गया, राकेश सिन्हा को इस भोजपुरी फिल्म में फूड-जुग जियो को सल्लख का प्रयास किया गया, राकेश सिन्हा इससे पहले खोदी किष्कान पर आवा सौरखल 100 भाइयों की लाइकी का निर्देशन कर चुके हैं, यह सौरखल धरारा में बेटी के जन्म होने पर रघु लामो की परंपरा पर आधारित है, उन्होंने बताया कि हिंदी फिल्म मिट्टी का प्रोजेक्ट तैयार है।



ग्राम दीदी ने लोगों में बांट मास्क

भागलपुर। ग्राम दीदी की और ने कांचा एवं भागलपुर के विभिन्न स्थानों पर कोरोना वायरस से रोग को रोकने के लिए 95 मास्क का वितरण किया, ग्राम दीदी ने कांचा में कांचा कि बंधन के अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर अत्यान्त के कर्मियों, शिक्षिका, सफाईकर्मी, पुलिस व आम लोगों को मास्क बांट कर, भागलपुर के कर्मियों, कर्मियों, पंढरा सतत विभिन्न-विभिन्न पर मास्क का वितरण किया गया, जो अखिल, जो कांचा जलान, अखिल दास आदि का वितरण करा।

एवीआइसी को मिला राज्य स्तरीय अर्थियन पर्यावरण मित्र सम्मान

जयपुर, ब्रह्मपुर। राज्य स्तरीय अर्थियन पर्यावरण मित्र सम्मान 2020 के लिए एलीवी बंगाली इंटर कॉलेज को चुना गया है। यह सम्मान लगातार पांचवी बार मिला रहा है। विद्यालय के शिक्षक डा. प्रमन कुमार शेष के नेतृत्व में अर्थियन पर्यावरण मित्रों। विद्यार्थियों के साथ जीव विज्ञान संस्था, जल संरक्षण के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य के लिए यह सम्मान दिया जाता है। एलीवी बंगाली इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य स्वर्णलक्ष्मी बोस ने बताया कि पर्यावरण शिक्षण केन्द्र लखनऊ, पर्यावरण वन एवं जलसम्पद पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार और विद्यो के संयुक्त संयोजन में अर्थियन एवं पर्यावरण मित्र कार्यक्रम विभिन्न स्कूलों में चलाना जा रहा है। एलीवी इंटर कॉलेज के शिक्षक व पर्यावरण प्रभारी डा. प्रमन कुमार शेष के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने प्रयोगशाला में उपलब्धतापूर्ण कार्य किया। विद्यालय के डॉक्टर जयंत सिंह, अमर, अशोक शीवावसरा, गौरव, अनुपम सिंह, अमय कुमार सोनकर व अमय सोनकर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सिटी

जबसे आप शुरू करते हैं बच्चे पर विश्वास, उसी दिन से होने लगता है चमत्कार

सिटी। जबसे आप शुरू करते हैं बच्चे पर विश्वास, उसी दिन से होने लगता है चमत्कार।

सिटी। जबसे आप शुरू करते हैं बच्चे पर विश्वास, उसी दिन से होने लगता है चमत्कार।

T.D. AWARDEE

Dr. Ubroto Kr. Ghos

T.D. AWARDEE। Dr. Ubroto Kr. Ghos।

T.D. AWARDEE। Dr. Ubroto Kr. Ghos।

प्रमोद खबर

प्रमोद खबर। प्रमोद खबर।

प्रमोद खबर। प्रमोद खबर।

प्रमोद खबर। प्रमोद खबर।

मंगन शाह रहमतुल्ला अलेखी का उम्र 30 से, रात 12.06 बजे पहली चादरपोशी

मंगन शाह रहमतुल्ला अलेखी का उम्र 30 से, रात 12.06 बजे पहली चादरपोशी।

मंगन शाह रहमतुल्ला अलेखी का उम्र 30 से, रात 12.06 बजे पहली चादरपोशी।

मंगन शाह रहमतुल्ला अलेखी का उम्र 30 से, रात 12.06 बजे पहली चादरपोशी।

ग्राम दीदी ने बांट मास्क

भागलपुर। शाहकुमार प्रकाश चौरा मंत्र के दिग्गज नरेन्द्र चंद्र सिन्हा के पुत्र राकेश सिन्हा अयोध्या में हुए भोजपुरी सिने अवार्ड से सम्मानित हुए, यह अवार्ड उन्हें जुग-जुग जियो को सल्लख के लिए नवीयान दिग्गज के रूप में दिया गया, राकेश सिन्हा को इस भोजपुरी फिल्म में फूड-जुग जियो को सल्लख का प्रयास किया गया, राकेश सिन्हा इससे पहले खोदी किष्कान पर आवा सौरखल 100 भाइयों की लाइकी का निर्देशन कर चुके हैं, यह सौरखल धरारा में बेटी के जन्म होने पर रघु लामो की परंपरा पर आधारित है, उन्होंने बताया कि हिंदी फिल्म मिट्टी का प्रोजेक्ट तैयार है।

एवीआइसी को मिला राज्य स्तरीय अर्थियन पर्यावरण मित्र सम्मान

जयपुर, ब्रह्मपुर। राज्य स्तरीय अर्थियन पर्यावरण मित्र सम्मान 2020 के लिए एलीवी बंगाली इंटर कॉलेज को चुना गया है। यह सम्मान लगातार पांचवी बार मिला रहा है। विद्यालय के शिक्षक डा. प्रमन कुमार शेष के नेतृत्व में अर्थियन पर्यावरण मित्रों। विद्यार्थियों के साथ जीव विज्ञान संस्था, जल संरक्षण के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य के लिए यह सम्मान दिया जाता है। एलीवी बंगाली इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य स्वर्णलक्ष्मी बोस ने बताया कि पर्यावरण शिक्षण केन्द्र लखनऊ, पर्यावरण वन एवं जलसम्पद पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार और विद्यो के संयुक्त संयोजन में अर्थियन एवं पर्यावरण मित्र कार्यक्रम विभिन्न स्कूलों में चलाना जा रहा है। एलीवी इंटर कॉलेज के शिक्षक व पर्यावरण प्रभारी डा. प्रमन कुमार शेष के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने प्रयोगशाला में उपलब्धतापूर्ण कार्य किया। विद्यालय के डॉक्टर जयंत सिंह, अमर, अशोक शीवावसरा, गौरव, अनुपम सिंह, अमय कुमार सोनकर व अमय सोनकर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ने भी बजट को ले सौंपे सुझाव

बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ने भी बजट को ले सौंपे सुझाव।

बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ने भी बजट को ले सौंपे सुझाव।

बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ने भी बजट को ले सौंपे सुझाव।

ग्राम दीदी ने बांट मास्क

भागलपुर। शाहकुमार प्रकाश चौरा मंत्र के दिग्गज नरेन्द्र चंद्र सिन्हा के पुत्र राकेश सिन्हा अयोध्या में हुए भोजपुरी सिने अवार्ड से सम्मानित हुए, यह अवार्ड उन्हें जुग-जुग जियो को सल्लख के लिए नवीयान दिग्गज के रूप में दिया गया, राकेश सिन्हा को इस भोजपुरी फिल्म में फूड-जुग जियो को सल्लख का प्रयास किया गया, राकेश सिन्हा इससे पहले खोदी किष्कान पर आवा सौरखल 100 भाइयों की लाइकी का निर्देशन कर चुके हैं, यह सौरखल धरारा में बेटी के जन्म होने पर रघु लामो की परंपरा पर आधारित है, उन्होंने बताया कि हिंदी फिल्म मिट्टी का प्रोजेक्ट तैयार है।

इंग्लैंड के सुप्रीमकोर्ट में लड़ा गया वा बुडिया का केस

इंग्लैंड के सुप्रीमकोर्ट में लड़ा गया वा बुडिया का केस।

इंग्लैंड के सुप्रीमकोर्ट में लड़ा गया वा बुडिया का केस।

इंग्लैंड के सुप्रीमकोर्ट में लड़ा गया वा बुडिया का केस।

एवीआइसी को मिला राज्य स्तरीय अर्थियन पर्यावरण मित्र सम्मान

जयपुर, ब्रह्मपुर। राज्य स्तरीय अर्थियन पर्यावरण मित्र सम्मान 2020 के लिए एलीवी बंगाली इंटर कॉलेज को चुना गया है। यह सम्मान लगातार पांचवी बार मिला रहा है। विद्यालय के शिक्षक डा. प्रमन कुमार शेष के नेतृत्व में अर्थियन पर्यावरण मित्रों। विद्यार्थियों के साथ जीव विज्ञान संस्था, जल संरक्षण के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य के लिए यह सम्मान दिया जाता है। एलीवी बंगाली इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य स्वर्णलक्ष्मी बोस ने बताया कि पर्यावरण शिक्षण केन्द्र लखनऊ, पर्यावरण वन एवं जलसम्पद पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार और विद्यो के संयुक्त संयोजन में अर्थियन एवं पर्यावरण मित्र कार्यक्रम विभिन्न स्कूलों में चलाना जा रहा है। एलीवी इंटर कॉलेज के शिक्षक व पर्यावरण प्रभारी डा. प्रमन कुमार शेष के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने प्रयोगशाला में उपलब्धतापूर्ण कार्य किया। विद्यालय के डॉक्टर जयंत सिंह, अमर, अशोक शीवावसरा, गौरव, अनुपम सिंह, अमय कुमार सोनकर व अमय सोनकर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ग्राम दीदी ने बांट मास्क

भागलपुर। शाहकुमार प्रकाश चौरा मंत्र के दिग्गज नरेन्द्र चंद्र सिन्हा के पुत्र राकेश सिन्हा अयोध्या में हुए भोजपुरी सिने अवार्ड से सम्मानित हुए, यह अवार्ड उन्हें जुग-जुग जियो को सल्लख के लिए नवीयान दिग्गज के रूप में दिया गया, राकेश सिन्हा को इस भोजपुरी फिल्म में फूड-जुग जियो को सल्लख का प्रयास किया गया, राकेश सिन्हा इससे पहले खोदी किष्कान पर आवा सौरखल 100 भाइयों की लाइकी का निर्देशन कर चुके हैं, यह सौरखल धरारा में बेटी के जन्म होने पर रघु लामो की परंपरा पर आधारित है, उन्होंने बताया कि हिंदी फिल्म मिट्टी का प्रोजेक्ट तैयार है।

ग्राम दीदी ने बांट मास्क

भागलपुर। शाहकुमार प्रकाश चौरा मंत्र के दिग्गज नरेन्द्र चंद्र सिन्हा के पुत्र राकेश सिन्हा अयोध्या में हुए भोजपुरी सिने अवार्ड से सम्मानित हुए, यह अवार्ड उन्हें जुग-जुग जियो को सल्लख के लिए नवीयान दिग्गज के रूप में दिया गया, राकेश सिन्हा को इस भोजपुरी फिल्म में फूड-जुग जियो को सल्लख का प्रयास किया गया, राकेश सिन्हा इससे पहले खोदी किष्कान पर आवा सौरखल 100 भाइयों की लाइकी का निर्देशन कर चुके हैं, यह सौरखल धरारा में बेटी के जन्म होने पर रघु लामो की परंपरा पर आधारित है, उन्होंने बताया कि हिंदी फिल्म मिट्टी का प्रोजेक्ट तैयार है।

योजनाओं को वीडियो में पिरो रहीं सुमोना

योजनाओं को वीडियो में पिरो रहीं सुमोना।

योजनाओं को वीडियो में पिरो रहीं सुमोना।

योजनाओं को वीडियो में पिरो रहीं सुमोना।

ग्राम दीदी ने बांट मास्क

भागलपुर। शाहकुमार प्रकाश चौरा मंत्र के दिग्गज नरेन्द्र चंद्र सिन्हा के पुत्र राकेश सिन्हा अयोध्या में हुए भोजपुरी सिने अवार्ड से सम्मानित हुए, यह अवार्ड उन्हें जुग-जुग जियो को सल्लख के लिए नवीयान दिग्गज के रूप में दिया गया, राकेश सिन्हा को इस भोजपुरी फिल्म में फूड-जुग जियो को सल्लख का प्रयास किया गया, राकेश सिन्हा इससे पहले खोदी किष्कान पर आवा सौरखल 100 भाइयों की लाइकी का निर्देशन कर चुके हैं, यह सौरखल धरारा में बेटी के जन्म होने पर रघु लामो की परंपरा पर आधारित है, उन्होंने बताया कि हिंदी फिल्म मिट्टी का प्रोजेक्ट तैयार है।

ग्राम दीदी ने बांट मास्क

भागलपुर। शाहकुमार प्रकाश चौरा मंत्र के दिग्गज नरेन्द्र चंद्र सिन्हा के पुत्र राकेश सिन्हा अयोध्या में हुए भोजपुरी सिने अवार्ड से सम्मानित हुए, यह अवार्ड उन्हें जुग-जुग जियो को सल्लख के लिए नवीयान दिग्गज के रूप में दिया गया, राकेश सिन्हा को इस भोजपुरी फिल्म में फूड-जुग जियो को सल्लख का प्रयास किया गया, राकेश सिन्हा इससे पहले खोदी किष्कान पर आवा सौरखल 100 भाइयों की लाइकी का निर्देशन कर चुके हैं, यह सौरखल धरारा में बेटी के जन्म होने पर रघु लामो की परंपरा पर आधारित है, उन्होंने बताया कि हिंदी फिल्म मिट्टी का प्रोजेक्ट तैयार है।

ग्राम दीदी ने बांट मास्क

भागलपुर। शाहकुमार प्रकाश चौरा मंत्र के दिग्गज नरेन्द्र चंद्र सिन्हा के पुत्र राकेश सिन्हा अयोध्या में हुए भोजपुरी सिने अवार्ड से सम्मानित हुए, यह अवार्ड उन्हें जुग-जुग जियो को सल्लख के लिए नवीयान दिग्गज के रूप में दिया गया, राकेश सिन्हा को इस भोजपुरी फिल्म में फूड-जुग जियो को सल्लख का प्रयास किया गया, राकेश सिन्हा इससे पहले खोदी किष्कान पर आवा सौरखल 100 भाइयों की लाइकी का निर्देशन कर चुके हैं, यह सौरखल धरारा में बेटी के जन्म होने पर रघु लामो की परंपरा पर आधारित है, उन्होंने बताया कि हिंदी फिल्म मिट्टी का प्रोजेक्ट तैयार है।

व्रत-त्योहार कथा

अपने राढ़ी समाज में अलग-अलग महीनों में अलग-अलग व्रतों-त्योहारों की परम्परा रही है, जिनका समाज में बहुत ही महत्व है । वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी ये व्रत-त्योहार हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । कई बर बंगला भाषा की जानकारी के अभाव में अपने समाज की महिलायें चाहकर भी व्रत-कथा का पाठ नहीं कर पातीं । इसी परेशानी को दूर करने का प्रयास इस स्तंभ द्वारा किया गया था, जिसकी काफी संतोषजनक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं । इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए इस बार ओरण्य षष्ठी, जिसे जामाई साठ के नाम से भी जाना जाता है, की कथा का हिन्दी लिप्यांतर प्रस्तुत है । आशा है, पूर्ववत् आपका सहयोग मिलत रहेगा । धन्यवाद—संपादक

ओरण्य (जामाई) षष्ठी

एक देशे एक वामनी छिलो, तार तीन छेले आर तीन बो छिलो । छोटी बो बोड़ोई नोला, से सब जिनिस चूरी करे खेतो, आर वाड़ीर कालो वेड़ालेर नामे दोष दितो । सेई बेड़ाल छिलो माँ षष्ठीर वाहन, कोरे से रोज-रोज माँ षष्ठी के गिये बोले दितो ।

किछु दिन पोरे छोटी, बो पोयाति होलो दश मास दश दिने एकटि चांदेर मतो छेले हलो राते छेले कोले कोरे छोटी बौ सुये छिलो, सोकाल बेला उठे देखे छेले नेई । तखनि सोकले चारिदिके खुजलो, किन्तु छेले कोथाउ पाउया गेलो ना ।

एमोन कोरे छोटी बौउयेर सात छेले, आर एक मेये होलो, किन्तु सवाई गेलो, खूँजे आर पाउया गेलो ना । बाड़ीते सवाई छोटी बौ के राक्षसी बोलते लागलो । छोटी बौ ताई सुने मोनेर दुखे उ घेन्नाय वने चोले गेलो ।

वने बोसे-बोसे छोटी बौ खूब काँदछे, देखे माँ षष्ठीर बोड़ो दया होलो । तिनी बूड़ी वामूनिर वेप्र धोरे छोटी बौ के जिगेश कोरलेन, तुई काँदछिस केनो माँ, तोर कि हये छे ? छोटी बौ बल्ले “माँ ! आमि बोड़ो पापिष्ठा, आमार सात छेले आर एक मेये होये छिलो, तार एकटिउ नाई । संसारे सोकलेई आमाय घेन्ना कोरे, सेई जन्चे बने एसेछि ।”

माँ षष्ठी बोललेन, “उ अभागीर बेटी तूई सब जिनिस चूरी कोरे खेये बेड़ालेर नामे दोष दितिस केनो ? सेइ जन्चेई तो आमार बेड़ाल तोर छेलेदेर निये आमाके दिये छे ।”

तोखन छोटी बौ काँदते-काँदते माँ षष्ठीर पा जोड़िये धोरे बल्ले, “माँ खमा कोरो, आर कि कोल्ले आमार पापेर खंडन होवे ता बोलो ।”

माँ षष्ठी तोखन बल्लेन—“जा, उई उखाने एकटा मोरा पोचा बेड़ाल पोड़े आछे, एक हांडि दोई एने, उई बेड़ालेर गाये डेले दिये, जिबे कोरे आबार हाँड़िते तूले निये आय । तोवे तोर छेले पाबि ।”

छोटी बौ छेलेर लोभे ताई कोरले । तोखन माँ षष्ठी तार छेलेदेर आर मेये के एने दिलेन, दिये बोल्लेन, “एदेर कोपाले ई दोइयेर फोंटा दाउ ।

आर कोखनउ चूरी कोरे खेये बेड़ालेर नामे दोष दिउ ना, बेड़ाल के लाथि मेरो ना, छेले देर बाँ हाते मेरो ना, मोरे बोले गाला गाली दिउ ना ।

जेष्ठ मासेर शुक्ल षष्ठीते पिटूलिर कालो बेड़ाल गोड़े, पिटूलिर कोंगन गोड़े, फल मूलेर बाटा साजिये, छ टा पान, छ टा सूपारि, छ टा कोला, आर बाँस पाताय होलूदेर नेकड़ा जोड़िये, छ गाछा सूतो पाकिये ताते बाँधवे, एई सूतो के साटू सूतो बोले । तार पोर तेल-हलूद दिये ओरण्य षष्ठीर पूजो कोरवे । पूजोर पर सेई साटू सूतो प्रत्येक छेलेर कोपाले छूँइये डान हाथे बंधे देवे । तार पर कोथा सूने फल-मूल किंवा फलार खावे, भात खेयो ना ।

एई सब कोल्ले पुआतीदेर छेले पिले मोरे ना । एई कोथा बोले माँ षष्ठी चोले गेलेन । तोखन छोटी बौ छेले-मेये निये धोरे एलो, एसे सोवाई के एई सोब आश्चर्यो कोथा बोल्ले । सोबाई आश्चर्यो होय गेलो । तोखन सोब जायेरा छोटी बौउयेर काछ थके षष्ठीर पूजोर नियम जेने निले, तार पोर थके तारा नियमित षष्ठीर पूजो कोरते लागलो ।

छोटी बौउ छेले मेयेदेर खूब घटा कोरा बिये दिये बौउ-जामाई आनले, जेष्ठ मासे षष्ठीर दिन जामाईयेर कोपाले दोउयेर फोंटा दिये आम-काँठालेर वाटा दिले ।

तार पोर अन्य-अन्य बौउयेरा छेले-मेयेदेरे बिये दिये मेये-जामाई धोरे आनले ।

क्रोमे ए दिन टा जामाई वा षष्ठी बाटा दिन होय उठलो ।

छोटी बौउये चारि दिके सूख्याति होते लागलो । सोबाई ओरण्य षष्ठीर पूजो कोरते लागलो ।

—प्रस्तुति : सावित्री घोष
शिप्रा सनसिटी, गाजियाबाद

शीतला माता-महात्म

—आराधना घोष

शिप्रा सनसिटी, गाजियाबाद

वंदेऽहं शीतलाम देवी,
राजमस्याम् दिबंगराम् ।
मार्जनी कलशोदेताम्;
शूर्पलंकृत मस्तकाम् ॥

हमारे देश में अति प्राचीन काल से ही शीतला माता की उपासना और आराधना होती आयी है । शीतलामाता को आरोग्य की देवी माना जाता है । देश के हर क्षेत्र में किसी-न-किसी रूप में शीतला माता की पूजा होती है । महामारी के समय लोग शीतला माता की शरण में लोग आते हैं, मान्यतानुसार देवी की अनुकंपा से लोग रोग मुक्त होजाते हैं । चेचक आदि से रोगमुक्त होने पर शीतलामाता की पूजा, उपासना का विधान अति प्राचीनकाल से चला आ रहा है ।

शीतला माता व्रत कहीं-कहीं चैत्र से आषाढ़ मास तक कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है । इस कारण ये तिथियां शीतला अष्टमी के नाम से प्रचलित हैं ।

बंगाल में शीतला माता की पूजा 'शीतल शोष्ठी' के नाम से प्रचलित है । यह माघ मास के शुक्लपक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाता है । शीतला माता को शीतल (बासी) भोजन भोग लगाया जाता है । भोग गोटा उड़द के साथ, सात बैंगन, सात सैम, सात बथुआ, सात शोजिना फूल और सात बेर (सभी साबुत होते हैं) से तैयार किया जाता है । इस भोग को बनाने का भी एक विशेष विधान है । पंचमी तिथि को ही यह बनाया जाता है और इसे एक बार चूल्हे पर चढ़ाने के बाद दुबारा न उसे चलाते हैं, और न ही जिस पात्र में यह पकाया जाता है, उसका ढक्कन खोल कर देखा जाता है । भोग पूजा के समय ही निकाला जाता है । इसे गोटा शैद्दो (शीझौना) बोला जाता है । शीतल षष्ठी के दिन माता को भी शीतल भोग देते हैं और घर में सभी उस दिन शीतल भोजन ही ग्रहण करते हैं ।

शीतोल षष्ठी-ब्रोत

सोमय—माघ मासे शुक्ल पक्षे षष्ठीरो दिन मेयेराऽ एई षष्ठीरो ब्रोत पालोन कोरे ।

ब्रोतेर द्रोव्य ऊ विधान—दोई, हलूद, कोड़ाई, फोऽल, मिष्टान्न इत्यादि पूजोय प्रयोजन होय । दोई उ होलूदे सादा सूतो छूपिये छेले-मेयेदेर हाते बंधे दिते होय । आगेर दिन भात आर गोटा सैदो कोरे रखे दिये षष्ठी पूजोर दिन सेई भात आर गोटा सैदो खावाई विधान ।

ब्रोतो कोथा—कोनो एक देशे एक बूढो वामून छिलो आर छिलो तार स्त्री बिन्दी ठाकरून । बिन्दी ठाकरून देवतारो ऊपोर खूब निष्ठा । से छेले बाऊ नाति, नातनीदेर निये वेश सूखेई दिन काट छिलो । एक बार माघ मासे शीतोल षष्ठीरो दिन खूब कोन-कोने ठोंडा पोड़ाय । बिन्दी ठाकरून शीते कातोर होय ब्रोत कोरते पारलो ना । से वेश कोरे लेपा चोपा दिये बिछानाय पोड़े रोईलो । तार नाती-नातनी आर बोऊरा ताके डेके-डेके ब्रोत करार कोथा मोने कोरिये दिलो । बिन्दी ठाकरून किंतु बिछानाय आर लेप छेड़े उठलो ना, आर बोललो—“आमि शीते आर उठते पाच्छि ना । जा कोरते होय ता तोमरा कोरो, आमार जोन्ये चारटि गोरुम भात रेन्धे राखो, आर चान कोरार जोन्ये एकटू गोरुम जोऽल कोरे दियो । एई शीते शीतोल षष्ठीरो पूजोरो नियोम पालोन कि कोरे कोरवे ।” बोऊरा तादेर शाशूडीर कोथा मोतोई काज कोरलो ।

बिन्दी ठाकरून उ गोरुम जोले चान कोरे गोरुम भात खेलो, अथच एई दिन घोरे उलून जालावते नेई । एकटू पारेई खोबर एलो जे घोरे आगून लेगे तार मेय जामाई पूड़े मोरेछे । मेये जामायेर शोके बिन्दी ठाकरून हाय-हाय कोरे कांदते लागलो । रात्रिरे से किछुतेई घूमते ना पेरे, जेगेई बोसे, रोइलो । तारेई मोद्धेय सुनते पेलो के जेनो बोलछे, “तोर बोड़ ओहंकार होये छे, ताके सेई ओवजा कोरार पापेर, आज तोर एई दूर्दशा । ताके येमोन अवहेलना कोरे छिस, तेमोन एखोन तार फोल भोग कोरो ।” एई कोथा बिन्दी ठाकरून कांदते-कांदते माँ षष्ठीर काछे बार-बार, खोमा चाईते लागलो । बोललो—“दोहाई माँ षष्ठी, एबारे आमाय खोमा कोरो, ऐमोन काज आमि आर कोखुनो कोरबो ना ।” बिन्दी ठाकरून ओनेक काकूति-मिनती कोराते तार उपोर मां षष्ठीर दोया होलो । माँ षष्ठी तोखोन बोलने “तूई एखुनि मानोत कोर, जे सामनेर बोछोरे माघ मासे शूक्लो षष्ठीरो दिने तोर मेय जमाईयेर कल्याणेर जोन्ये उपोस कोरबि, आर आमार पूजो दिबि, जीवोनो आर कोखोनो एमोन दूर्बुद्धि कोरबि ना । तोर मेये जमाई के एखुनो दाह कोरा होयनि । जारा मृत देह निये जाच्छिलो-आमार ईच्छे भय पेये तारा बोनेर धारे मृतदेहे फेले सोबाईपालिये गेय छे । तुई आमार पूजो कोरे घोटेर जोऽल आर निर्मलोय निये, लोकजोन उठवार आगेई भोर बेला, सेई बोनेरधारे गिये आमार नाम कोरे मृत देहेर ऊपोर जोऽल छिटिये निर्मोल छाड़िये दिबि, ताहलेई तोर मेये-जामाई बेचे उठबे ।”

बिन्दी ठाकरून माँ षष्ठीर आदेश मोते सोकाल होतेई, बोनेर धारे गिये, तार मेये जमायेर मृत देह देखते पेलो । तादेर ऊपोर फूल-जोल छाड़तेई, तारा बेचे उठे बिन्दी ठाकरून के प्रणाम कोरलो । बिन्दी ठाकरून एई देखे खूब आनन्द पेलो । से तादेर के निजेर बाड़ि ते साँगे कोरे निये एलो ।

पोरेर बोछोर आवार बिन्दी ठाकरून माघ मासेर शूक्ल पक्षे षष्ठीर दिन उपोस कोरे मेये जमाईयेर मोंगोलेर जोन्यो शीतोल षष्ठीर पूजो दिलो । वामूनीरो मेये जमाईके बेचे उठते देखवार पोर थेके सोकोलेई शीतोल षष्ठीर ब्रोत कोरते लागलो ।

ब्रोतेर फोऽल-माघ मासे शुक्लपक्षे शीतोल षष्ठी ब्रोतो पालोन कोरले संसारेई मोदे थेकेइ शोक-ताप पते होय ना ।

—प्रस्तुति : मृदुला सिन्हा

❁ वीरा अष्टमी व्रत कथा (आश्विन शुक्ल पक्ष की अष्टमी) ❁

पूर्व काले धर्म देव नामे एक ब्रह्मोण छिलेन। तार कोनो सन्तान आदि छिलो ना। एयीजोन्ये तिनि एवं तार प्तोनी दूजने सर्वदायी विशन्नमना होये थाकतेन। एक दिन ब्रह्मोण द्वितीय बार विवाह कोरवेन स्थिर कोरो तार स्त्री के जानालेन। ब्रह्मोणेर मनोवासना जेने तार पतिव्रता पोल्नी ताके विवाहेर वासना छेड़े भगवती दुर्गा देवीर श्री चरण कमल आराधना कोरते ओनुरोध कोरलेन। कारण एक मात्र आध्यशोक्तिर इच्छतेयी मर्त्यवासिरा पुत्र, पौत्र, धन संपद लाभ कोरे थाके। ब्रह्मोण निष्ठावती स्त्रीर कथामोत शुद्धचिते जग-जननीर पादपद्म पूजो कोरते लागलेन तिनि देवीर होम यज्ञ प्रभृति कर्म सुवईनिष्ठा व भक्ति सह कारे प्रतिदिन कोरतेन। देवी ब्रह्मोणेर एकांतिक भक्ति के संतुष्टा होये ताके दर्शन दिये बोललेन हे जितेन्द्रीय धर्मदेव तोमाके वीराअष्टमी व्रत आचरोनेर विधान बोलछि मोन दिये सुनो आश्विन मासेर शुक्ल पक्षेर अष्टमी तिथि ते अर्थात महा अष्टमीर पुण्य प्रभाते सज्या त्याग कोरे शौच इत्यादि शेषे स्नान कोरे शुद्ध वस्त्र परिधान कोरे पिटुली गुलो दिये सुन्दोर अष्टदल पद्म आँकोवे। तार उपरे तीर्थवारीपूर्ण एक टी तामार घोट स्थापना कोरवे तारपोर धुप, दीप, नैवेद्य, आठ रोकोमेर फल, आठ रोकोमेर फूल दिये आमार (महिष मर्दनीर) यथा विधिते पूजो कोरवे। पोरो अष्टग्रांथी युक्त ककुमाण्ल डोर (पुरुषेरा दाड़ बांन्हते, नारीरा वाम बांन्हते) बांन्हवे एवं आमा के भक्तिसः प्रणाम कोरवे। ऐरपोरे ब्रह्मोण के दक्षिणा सह भोज्य दान कोरवे। आठ वोच्छेर येई व्रत कोरवार पोटे व्रतेर उद्धापन कोरवे। उद्धा पोनेर समय आठ जोन ब्रह्मोण के वस्त्र व दक्षिणा सह आठ टी कोलसी दान कोरवे। येई विधाने वीरा अष्टमी व्रत पालोन कोरले अविलम्बो तोमार जगत विख्यात पुत्र जन्म ग्रहण कोरवे।

ब्रह्मोण के उपरी उक्त कोथा-गुली बोले परमेश्वरी दुर्गा देवी अन्तरहीता होलेन। ब्रह्मोणेर कोथामत विधि अनुयायी ब्रह्मणी, वीरा अष्टमी व्रत पालन कोरलेन। येई व्रतेर फोले तार पुत्र संतान लाभ होलो।

नारीरार येई व्रत कोरले सुसंतानेर जननी होन एवं स्वामीर सोहागिनी होये थाकतेन। पुरुषेरा येई व्रत कोरले सुसंतानेर पिता होन एवं तेजस्वीता लाभ कोरे थाकेन।

—आराधना घोष
शिप्रा सनसिटी, गाजियाबाद

जीताष्टमी व्रत



प्रस्तुति : कनुप्रिया घोष

त्रेता युगेर चम्पक नगरे सुभद्रा नामे ऐक धार्मिक ब्राह्मणेर ऐक कोन्या छिलो । ऐक दिन राज्ये खूब अकाल वृष्टि देखा दिले राजा घोषणा कोरलेन जे, तारं पितार श्राद्धेर जोन्ने जे आतोप चाल तोयरी कोरे देबे ताके तिनी ऐकटि सोनार ताल पुरस्कार देबेन । किन्तु केउ साहस कोरलो ना, शुधु साहस कोरलो सेइ ब्राह्मणेर मेये सुभद्रा । से उपवासी थेके खूब भोक्ती भोरे दिवाकोरेर आराधना कोरते लागलो । तार उपासनार सूर्य देव प्रोसोन्न होये वोर दिलेन जे, तार मोनेर वासना पूर्ण होवे । सूर्यदेव तार घोरे किरण दान कोरलेन एवं सेई तापे चाल तोयरी होलो । सुभद्रा राजा के आतोप चाल दिये पुरस्कार पेलो तार काछ थेके ।

एदिके ऐक दैव घटना घोटे छे । सुभद्रार यौवनेर रूप सौन्दर्य देखे दिनमनि तार देहे तेज दान कोरलेन एवं तार फोले सुभद्रार गोर्भे ऐक छेले जनमालो । नाम राखा होलो 'जिमूतवाहन' ।

शिशु बोड़ो होये ऐक दिन निजेर पिताके देखवार जोन्ने जिद धोरलो । तोखोन सुभद्रा छेलेर हाथ धोरे, जे पोथ दिये सूर्य देव रोज उदय गिरि जान, सेई पोथे गिये दांडालो एवं सूर्येर रोथ असतेई माये पोये रोथ धोरलो टेने । सूर्य देव तोखोन ध्याने सोमोस्त जेने छेलेके आलिंगन कोरे बोललेन—“वत्स जीमूतवाहन ! जोगोते सोवाई आश्विन मासेर कृष्ण पोक्खेर अष्टमी ते—विशेषतः मेयेरा तोमार पूजा कोरबे बोट मूलेर प्रांगणे किंवा देवमन्दिरे । जे नारी आगेर दिन हविष्य कोरे पोर दिन उपवासी होये तोमार पूजा कोरबे ओ रात्रि जागरण कोरबे, से जिवतपुत्री होबे अर्थात् तार छेले पूले अकाले कोखोनोउ मोरबे ना । जिमूतवाहन आनन्दित होये पिता के प्रणाम कोरलो । सूर्य देव पोरे सुभद्रा के बोललेन—“सती ! लोके पुत्रे सोंगे तोमाके ओ पूजा कोरबे, एखोन गृहे फिरे जाओ ।”

ऐक दिन वटगाछेर नीचे इन्द्र माता अदिति जीमूतवाहन पूजो कोरछेन । एमोन सोमोय सेई गाछे जे शकुनी वास कोरतो, सेओ देखा-देखी पूजो कोरलो । ता देखे ऐक सियाली ताके जिज्ञासा कोरलो—“सखी ! तूमी की कोरछो ।”

शकुनि बोललो—“सखी आमी जिमूतवाहनेर ब्रोत कोरछी । ए ब्रोत कोरले संतानगोण चिरंजीवी होय । ब्रोतेर दिन उपवासी थाकते होय ।”

सियाली शकुनिर काछ थेके सोब जेने उपवासी थाकलो । सारा दिन कंटे गालो, रात्रे से आर थाकते पारलो ना । रात्रे प्रोथोम प्रोहोरे माछ खेये खिदे दूर कोरलो, द्वितीय प्रोहोरे से कोतोकगुलो पोका माकोर खेलो, तृतीय प्रोहोरे खेलो मेठो ईदूर । तारपोर चतुर्थ प्रोहोरे सियाली खेलो मोड़ार मांस ।

तार पोर सियालीर ऐक बोछोरेर भेतोर जे कटि संतान होलो सोब कटिई मोरे गेलो, ओ दिके शकुनि जीवतपुत्री होये रइलो । तार किछुइ होलो ना देखे सियालीर प्राण रागे हिंसाय ज्वोले गेलो ।

ऐकदिन सियाली रेगे जेमनई शकुनीके मारते जाबे अमनि गाछ तोलाय जेखाने ऐकटी कड़ाई छिलो, तार मोध्ये पोड़े गेलो । ऐक धोपा सेदिन कोड़ाई टी आगुने चापिये खार सिद्ध कोरछिलो, सियाली आर शकुनि गरम खारेर मोध्ये पोड़े सोंगे सोंगे मारा गेलो । धोपा एसे व्यापार देखे सेई खारेर जोल नोदि ते फेले देलो ।

जीताष्टमी व्रत

घटना चक्रे एइ खारसिद्ध जोले दू टी सुन्दोर फूल जनमालो, एकटि नील पद्म आर एकटी श्वेत पद्म । फूल दूटि भांसते-भांसते कोर्नाटकनगरेर एकटि पुष्करिनीते एसे पोइलो सेई सोमोय कोर्नाटराजेर रानी कुमुदवती ओ तांर पात्रपत्नी प्रभावती ए सरोवरे स्नान कोरे छिलेन । कुमुदवती बोललेन-“सोखी प्रभावती । एसो आमरा फूल दूटी खाय ।”

फूल दूटी खाइया होले देवक्रमे दू जोनेई गोर्भ होलो एवं यथा सोमोय दू जोने प्रोसोव कोरलो, दू जोनेई मेये होलो रानीर मेयेर नाम चंपकमाला । आर पात्र पत्नीर मेयेर नाम होलो मनोरमा । मेये दूटी बोइो होले दूटीते खूब भाव होलो ।

किन्तु एई जोन्मे सियाली होये छे चम्पकमाला आर शकुनी होये छे मनोरमा । दूइ जोनेर बियेर बोयोस होले ऐक दिन कोनिकापूरीर राजार सोंगे बिये होलो चोम्पकमालार आर तार राजपुत्रेर सोंगे बीये होलो मनोरमार । खूब सूखे दिन काटते लागलो दू जोनेर ।

किछू दिन पोरे चोम्पकमाला आर मनोरमा दू जोनेइ गोर्भवती होलो । दोस मास दोस दिने दू जोनोई प्रोसोव कोरलो किन्तु सप्ताह मध्ये चोम्कमालार छेले मारा गेलो । मनोरमार छेले बेंचे रइलो । एइ रोकोम आर ओ कोयेकवार होलो ।

चम्पकमालार मोने ओत्योत हिंसा होलो । चुपी चुपी ऐक दिन मनोरमार छेले देर डेके से नाक केटे मनोरमा के पाठिये दिलो एइ बोले-“खूब भालो कामरांगा तोमाय पाठालाम ।” सेइ सोमोय मनोरमा जीमूतवाहनेर पूजा कोरछिलो । कामरांगा भेवे जेमोन से जीमूतवाहनेर उद्देशे निवेदन कोरलो, एमुनी छेलेदेर नाक आगेर मोतो होय गेलो । पोरेर वोछोर आबार जीताष्टमी व्रत कोर छे मनोरमा, एमोन सोमोय चोम्पकमाला गोपने मनोरमार छेलेदेर चोख ओपड़े सोखीर काछे पाठालो एइ बोले, “सुपारी पाठालाम, नियो ।” मनोरमा ऐक मोने पूजा कोरछिलो सूतरां से सोरोल मोने सुपारी भेवे जेमोनी जीमूतवाहनेर चोरणे निवेदन कोरलो एमुनी छेलेरा आबार चोख फिरे पेलो । चोम्पकमाला क्रोमे-क्रोमे सोमोस्त ओंग केटे केटे पाठाते लागलो आर जीमूतवाहनेर कृपाय सोब जोड़ा लेगे जेते लागलो । शेषे ऐक दिन चोम्पकमाला मनोरमार छेले देर मेरे फेले उदखले गुंडिये नाडू तोयरी कोरे पाठालो । से दिनओ जीमूतवाहनेर दोया ते मनोरमा छेलेरा बेंचे उठलो ।

किछुतेई जोखोन चोम्कमालार हिंसे पूर्ण होलो ना तोखोन से निजे ऐकदिन मनोरमार बाड़ाते गिये ताके जिज्ञासा कोरलो-“सखी तोमार छेलेरा सोकोलेई बेंचे आछे आमार सातटी छेले केनो मेरे गेलो ।”

मनोरमा बोललो-“तूमी गोत जोन्मे जिमूतवाहनेर व्रत निये भोंगे कोरे छिले सेई पापे एइ जोन्मे तूमी पूत्रहीना होये छो ।”

चोम्पमालार मोने हिंसार आगून जोले उठलो । से ठीक कोरलो रेवा नदीर तीरे अग्निकुण्ड जोले सोखी के नीये गीये ताके ओउ मारबे नीजे ओ मोरबे । तार जे कोथा सेई काज । ऐक दिन सोब आयोजन कोरे सोखी के निये चोम्पकमाला चोल्लो रेवा नदीर तीरे ।

शून्य दीये होर पार्वती जेते जेते सेखाने थेके शोंकोरी देखते पेलेन, ऐकटी रोमोनी आगुने पूड़े आत्महोत्या कोरते जाछे । तोखुनी तीनी महादेव के बोललेन, “नाथ, आत्महत्या महापाप । आपनी एइ पाप थेके एइ रोमनी के रोक्खा कोरून ।

महोदेव बोललेन-“एइ रोमनी गोत जोन्मे महापाप कोरे छिलो । व्रत आरम्भ कोरे भोंग कोरे छिलो, सेइ महापापे ओर सोमोस्त छेले मारा गये छे एइ जोन्मे । किन्तु ओर सोखी व्रत भोंगो कोरे नी बोले तार सोब छेले बेंचे आछे । ओ ताई देखे हिंसाय पूड़े मोरे । प्रोधमे सोखीर छेलेदेर मारबार चेष्टा कोरेछिलो किन्तु ता ना परे एखोन आत्महोत्या कोरछे । सुतरां ओके रोक्खा कोरा उचित नेई ।”

शोंकोरी तोबोउ ओनेक अनुरोध कोरे महादेव के पाठालेन । शोकांर छोद्म वेशे गिये चोम्पमाला के बोललेन-“बाछा आत्महत्या महापाप । तूमी सोखीर उपोर हिंसा ना कोरे एखोनेइ गृहे फीरे जाओ एवं भोक्ती भोरे यथा नियमे जीताष्टमी व्रत कोरो । ताहाले तोमार दीर्घजीवी छेले होबे । आर कोनओ दुख तोमार थाकबे ना ।

चोम्पमाला तोखोन बाड़ी फीरे एसे खूब भोक्ती भोरे जीताष्टमी व्रत कोरलो । क्रोमे तार ओनेकगुली दीर्घजीवी छेले जानमालो । ईह जोगतेर सुख भोग कोरे अस्ते से स्वर्गलाभ कोरलो ।

सम्पर्क : W/o मानस कुमार घोष
जीरोमाइल, भागलपुर (बिहार)

जय मंगलवारी कथा



रत्नद्वीपे हीरापति नामे एक सौदागर वास कोरतो/तार सात छेले छिलो, किन्तु एकटि ओ मेये छिलो ना/सेई देशे एक बनिक वास कोरतो। नाम छिलो धनपति एवं से छिलो सातटि मेयेर पिता, तार एकटि ओ छेले छिलो ना। हीरापति कोटिपति धनी सौदागर। संसारे तार अभाव बोलते किछु नेई/विपुल अर्थ सम्पद, मणि-मुक्ता, कारु कार्य खर्चित विराट प्रसादेर से मालिक/वेश सुखे स्वाच्छन्दे दिन काट छिलो तार/स्त्री रत्नावती ओ महानन्दे संसारे दिन काटाच्छिलो।

एक दिन दुपुरे माँ मंगलचण्डी बूढ़ी भिखारिनीर वेशे तादेर बाड़िते उपस्थित होलेन/अन्दरे गिये बोललेन—कोथाय गो माँ। दूटी भिक्षा पावो। रत्नावती एकटि पात्रे किछु भिक्षा एने बोललो—केन पावे ना वाछा/एई नाओ। दाड़ाउ माँ/आमि जारतार हाथ थेके तो भिक्षा निर्ई ना। ता तोमार छेले मेये कटि मा/सातटि छेले सुधु रत्नावती बोललो। मेये नेई/ना। ओ ताहाले तो तोमार हाथ थेके आभार भिक्षा नेउया हवे ना। आमि जाई तबे/तुमि दुपुर बेलाय एसे यदि भिक्षा ना निये जाओ तबे आभार मने बड़ो अशान्ति थेके जाबे बाछा। आभार किछुरई आभाव नेई संसारे—केवल एकटि मेये छाड़ा/ता किरबो बोलो/सबई भगवानेर इच्छा।

एई रकम कातरता देखे रत्नावतीर ऊपर मायेर दया होलो/माँ ताके बोललेन अच्छा माँ/तुमि ए भिक्षे अन्य कोनो भिखारिके दिये दिओ। आमि तोमाके एई फूलटि दिये गेला। ज्येष्ठ मासेर शुक्लपक्खे जय मंगलवारे व्रत करे एई फूल धोया जल खेओ/ सतेरटि हिसाबे सुपारी, धान, दूर्वा, फूल, पैता ओ कापोड़ दिये मंगलचण्डीर पूजा कोरे वामुनके दक्षिणा सह आभ, सुपारी ओ कांठाल दान कोरे आर दई चिड़े मेखे अर्धक वामुन के दिये बाकिटा निजे खाबे/ताहाले तोमार मनेर दुख दूर होवे/बछरेर मध्येई सावित्रीर मतो सुन्दर एकटि मेये पावे। एई आर्शिवाद करे जाच्छि/ तोखोन आवार आमि एसे तोमार काछे भिक्षे नेवो।

कथा शेष करे माँ कोथाय जेनो अदृश्य होये गेलेन, रत्नावती भक्ति भरे फूलटि निये अन्दरे चोले गेलो। एदिके बनिक धनपतिर बाड़िते माँ मंगलचण्डी एक दिन सेई रकम बूढ़ी भिखारिनी सेजे उपस्थित होये छेन। धनपतिर स्त्री भिखारिनी के एकटि रूपोर थालाय करे भिक्षा दिते जाउया। मात्र माँ बोललेन- माँगो, आभार एकटि निवेदन आछे। आमि जार तार काछे कोखोना भिक्षे नीये ना। जार छेले मेयेते संसार आलो। केवल तार काछेई भिक्षे निए। तोमार कयटि छेले मेये माँ।

कलावती एकटा दीर्घ सांस फेले बोललो वाछा आमार कपाले तो विधि छेले लेखेननि। आमि सात सातटि मेयेर माँ कि कोरबो बोलो भाग्ये जा थाके ताईतो होवे। ता तो बुझि। किन्तु आमि तो ताहाले तोमार हाथ थेके भिक्षे निते पारी ना। जाई तबे अन्य कोन जायगाय।

ओगो वाछा, दुपुर वेलाय बाड़िते एसे फिरे जेओना भिक्षे ना निये ताते जे आमार अकल्याण हवे। एई कथाय तार ऊपर मायेर दया होलो। तिनी तखन ताके एकटि फूल दिये बोललेन देखो माँ ज्येष्ठ मासेर शुक्ल पक्खेर जय मंगलवार व्रत करे एई फूलटि धुए जोल खेओ ताहाले मोनेर वासना पूर्ण होवे तखन आमि आवार भिक्षे नेवो। व्रतेर अन्यान्य नियम ओ बोले माँ अदृश्य होये गेलेन। कलावती मनेर दुःखे धीरे-धीरे अन्दरे चोले गेलो।

माँ मंगलचण्डीर कृपाय वत्सरेर मध्येई रत्नावती ओ कलावती परस्पर मेये ओ छेले होलो। खूब धूमधाम कोरे दूजोनेर बाड़िते आमोद आह्लाद होलो। बूड़ीर वेषे माँ मंगलचण्डी ओ आवार तादेर काछे थेके भिक्षा निये आर्शिवाद कोरे गेलेन एवं जावार समय छेलेटि नाम राखलेन जयदेव आर मेयेटि नाम राखलेन जयावती।

कालक्रमे जयदेव ओ जयावती दिने-दिने बेड़े चोललो। वाणिज्य पुत्रे हीरापति ओ धनपति एक दिन विधातार इच्छाय बन्धुभावे मिलित होलो। दूटि परिवारेर मध्ये वेश घनिष्ठ संबंध स्थापित होलो एवं तार मध्येई जयदेव ओ जयावती खूब मेशामेशि कोरलो दूजोनेते।

जयदेव एखन वेश बड़ो हयेछे। एक दिन से सोकाल वेलाय पुष्प उद्याने दूटि श्वेत पायरा निये खेला कोरे छिलो। एमन समय एकटि पायरा तार हाथ थेके उड़े गेलो। ये तखन सेई पायराटि के लख्य करे पिछु-पिछु छुटते लागलो। अनेक दूर गिये पायराटि जेखाने एकटि बागानेर मध्ये पुकुरे धारे जयावती जय मंगलवारे व्रत कोरछिलो सेई खाने गिये बोसलो जयावती ओ संगे-संगे पायराटिके कोले तुले निलो। किछु पोरे खोज कोरते-कोरते जयदेव सेखाने एसे उपस्थित होलो। पायराटिके जयावतीर कोले देखे से बोललो। आमार पायरा दाउ।

जयावती तार दिके चेये बोललो ओ आपनि उड़े एसे आमार काछे बसेछे आर तो आमि तोमाके ए पायरा दिवो ना। देवे ना। ताहाले

तोमार एई सोब आमि पुकुरेर जोले फेले देवो । सेकि ए जे जय मंगलवारेर ब्रतेर जिनिस ।

ए ब्रत कोरले कि होय इच्छासरे जयावती उत्तर दिल ये ए ब्रत पालोन कोरे तार कखनो कोनो दुःख थाके ना जोले डोबे ना आगुने पड़े ना । खोड़ाय काटे ना, हाराले पाय आर मरे गेले बेंचे उठे ।

वटे—जयदेव एकटू विद्रूपेर हासि हेसे चोले गेलो । मोने मोने बोले उठलो से आच्छा पोरे देखा जाबे तोमार बहादुरीटा । माँ मंगलचण्डी एक दिन सदागरओ बनिक के स्वप्न देखिये बोललेन—आमार इच्छा तोमारा जयदेव ओ जयावतीर परस्परें संगे विये दिये सवाई सुख भोग कर ।

तारपर एक दिने शुभ दिन हीरापति ओ धनपति जयदेव ओ जयावतीर विये दिये दूजने वैवाहिक बन्धन आबद्ध होलो । रत्नद्वीपे से दिन कि आनन्देर घटा । कलावती ओ रत्नावती आनन्दे वर वधुके निये कतो आमोद-प्रमोद करछे । चारिदिके गान बाजना, साजगोज विराट हैचे ।

पौर दिन जयदेव जयावती के निये पालकी चढ़े बाड़ीर पथे जाच्छे । हठत खनिक दूरे आसतेई जयदेव लक्ष्य करलो जयावती मोने मोने विड़विड़ कोरे कि येन बोले नमस्कार करलो जयदेव ताड़ाताड़ी जयावती के जिज्ञासा कोरलो जया तुमी मोने-मोने की बोले नमस्कार कोरले ?

आज आमार जय मंगलवारेर ब्रतेर दिन की ना ताई पूजो कोरते ना पेरे मोने-मोने पूजो करे नमस्कार कोरलुम । ए ब्रत कोरले की होय । एक बार तो बियेर आगे तोमाय बोले छिलाम ए ब्रत जे कोरे, से मंगले थाके जले डोबे ना, आगुने पड़े ना, खोड़ाय काटे ना । हाराले फिरे पाय मोरे गेले बेचे उठे किछुखने चुपचाप कोरे गिये नदीर धारे एक जाय गाय एसे हठात जयदेव बोललो—जया एखाने बड़ो डाकातेर भय । तुमी शीगीर सोब गहना गांठी खुले दाड । एई बोले जयावतीर सब गहना गुलि खुले निये एकटा पुटुली करे नदीर मध्ये फेले दिलो । सांगे-सांगे पुटुलिया एकटा राघव वीयाल गिले खेये फेललो । बर कने बाड़ि आसतेई पाड़ा लोकेरा बोलते लागलो-मांगो मेयेके एकखानि गहनाओ देयनि । जानि ना केमोन घोरे मेयेर संगे धनपति छेलेर विये दिये छे ।

बऊ भात होवे आज छेलेर माछ धोरते गेलो—धोरे आनलो सेई बोयाल माछटि । किन्तु माछटि केऊ कूटते पारलो ना । जयदेव बोललो एई माछ जया कूटवे । सोबाई हेंसे उठलो । जया माँ मंगलचण्डीर नाम स्मरण कोरे सेई माछटि बँटिर गाये ठेकाले ओमानि खान-खान होये काटा होये गेलो माछ । तार पेट थेके सेई गहनार पुतुलि पेये गहनगुलि परे एलो से । सबाई अवाक् होये गेलो ।

साँधवे के एखन एई माछ जया साँधवे-जयदेव बोललो । माँ मंगलचण्डीर नाम स्मरण कोरे जया रेंधे फेललो सेई माछ । सबाई खेये सुख्याति कोरलो । तारा बोललो, हीरापतिर मेयेर जयावती नाम सल्लि सार्थक होयेछे । सोब दिकेई तार जय-जयकार । किछुकाल पोरे जयावतीर एकटि छेले होलो । हीरापति आदोर कोरे नातिर नाम राखलो जयन्त जयदेव सुयोगमत ऐक दिन जयन्त के निये गिये कुमोर देर पोने फेले रेखे चोले एलो । माँ मंगलचण्डीर दयाय कुमारेरा से दिन पोने आगुन धोरालो ना । जयन्त के कोले कोरे निये माँ मंगलचण्डी जयावती के दिये एलेन ।

आर एक दिन जयदेव जयन्त के मेरे फेले पुकुरेर घाटेर सिंङि नीचे रेखे एलो । माँ मंगलचण्डी छेले के बाँचिये जयावतीर कोले दिये एलेन एवं ताके खूब सावधान कोरे दिलेन । तार पोर एक दिन जयदेव जयन्त के एकटि निर्जन प्रांतेर निये गिये खाड़ा दिये कंटे येमोन फिरे आसछे, ओमनि पथे । जयावीर संगे तार देखा होलो । जयावती काँदते-काँदते ताके बोललो—तुमि आमार एकि सर्वनाश कोरले । तारपोर छुटे गिये छेलेर मुण्ड आर धड़ एक करे माँ मंगलचण्डीर नाम स्मरण कोरतेई जयन्त बेंचे उठे माँ, माँ बोले डेके उठलो ताके । जयावती जयदेव के बोललो एखनो तोमार माँ जयमंगलचण्डीर ऊपर विश्वास होय ना ?

जयदेव लज्जित ओ अप्रतिभ होये बोललो हाँ जया, आमार विश्वास होयेछे चोलो आज थेके आमरा माँयेर महिमा जोगोते प्रचार कोरि गिये । मायेर कृपादृष्टिते तारा खूब सुखे संसारे कोरते लागलो । छेले मेये धन रत्न हाथी, घोड़ा प्रभृति ऐश्वर्य तादेर संसारे सतगुने बेड़े गेलो । तारपोर मायेर इच्छाय ऐक दिन स्वर्ग थेके पुष्पकरथ एलो एवं सेई रथे चोड़े जयदेव ओ जयावती अमरावतीते चोले गेलो ।

सोनार माँ मंगलचण्डी रूपोर बेला
केलो माँ मंगलचण्डी एतो बेला
हाँसते-खेलते सोनार दोलाय दुलते
तेल हल्दी माखते आधारे घाट कोरते
अपुत्र के पुत्र दीते, असरणे सरण दीते
अराज्ये राज दीते, अबीये बीये दीते
निर्धनेर धन दीते, अन्धेर चक्षु दीते,
अन्तकाले स्वर्ग पते करो ना हेला ।

प्रस्तुति : कनुप्रिया घोष

व्रत-त्योहार

ईतू पूजार व्रत

प्रस्तुति : कनुप्रिया घोष

एक देशे एक गरीब वामून वास कोरतो । तार स्त्री ओ दूटि कन्या छिलो । वामूनेर ऐकदिन पिठे खाबार साध होलो । से अति कष्टे भिक्खे करे चाल, गुड़, नारकेल, एने वामनीके दिये बोलले-आज पिठे तोयारि करो, किन्तु देखो, येन एकटिओ पिठे काउके दिओना । एइ बोले वामून रान्ना घोरैर पिछूने लूकिये रइलो ।

एदिके वामूनी रान्नाघोरे गिये पिठे करते वसलो । येमोन एक एकटि कड़ाते दियेछे, अमनि शब्द होलो-छांक, छांक, छांक । सेई शब्द सुने वामून ऐकगाछि दाड़िते गांटे दिते लागलो, एई भावे प्रति छांक एकटि कोरे गांट दिये, वामुनि कोतोगुली पिठे गइलो । तारपोरे आर कोनो शब्द ना पेये वामुन वाड़िर मध्ये गिये वामनीके वललो-वामूनी पिठे निये आय । वामूनी अतशत जाने ना जे वामून लूकिये कतोगुलि पिठे हयेछे ता गुने रेखेछे । वामूनी ताड़ाताड़ी पिंडे पेटे एक घटि जोल दिलो, परे पाथोरेर खोराय कोरे पिठे दिले । वामून पिठे ऐक-ऐकटि कोरे गुने देखे जे दूटि कोम । वामूनीके जिज्ञासा कोरलो-वामूनी! दूटो पिठे कोम केनो ? वामूनी बोललो-कोम होवे केनो, तूमि भूल कोरे छो । वामून रेगे बोललो-ना, कोम आछे । आमि लूकिये सोब गुनेछि । वामूनी तोखोन बोललो-पिठे तोयरी करार सोमोय मेये दूटि वायना धोरे छिलो-ताई दूजोनके दूटि पीठे दियेछि । वामून खूब रेगे गेलो । बोललो-उदेर दूटिके उदेर मासीर बाड़ि रेखे आसि, सेखाने भालो थाकवे ।

भोरवेला वामून मेये दूटिके निये चोललो । से दिन कार्तिक मासेर सोंक्रान्तिर आगेर दिन । ऐक गोभीर वने गिये मेये दूटिके सेखाने फेले वामून पालिये गेलो । मेये दूटि सेई वोनेर मोध्ये खूब कांदते लागलो कातोरभावे उभयेई भोगवानके डाकते लागलो ।

पोरदिन भोरे पथ वेये चोलछे तो चोलछे; चोलते-चोलते देखते पेले सामने एकटि वाड़ि । मेये दूटिके देखते पेये वाड़िर गिन्नी जिज्ञासा कोरले-के वाछा तोमारा ? मेये दूटि कांदते-कांदते सोब कथा ताके जानालो । वामूनेर मेये जेने गिन्नी तादेर वाड़िर भेतोरे निये गेलो । मेये दूटि भेतोरे गिये देखे जे, वाड़िर मेयेरा माटिर सरार काछे घटे रेखे कि पूजा कोरछे । तारा गिन्नी के जिज्ञासा कोरले-मां, ओरा कि पूजा कोरछे ? गिन्नी बोललो-एर नाम ईतू पूजा । आगेर दिन उपवास ना कोरले एइ पूजा होय ना । मेये दूटि बोललो-आमरा काल थेके किछू खाय नी । तोखोन गिन्नी तादेर पूजार जोगाड़ कोरे दिलो । मेये दूटि कार्तिक सोंक्रान्ति के ईतू पूजा कोरलो ।

भोक्तेर ओधीन देवता । मेये दूटिर अविचलित भक्ति देखे भगवान सूर्यदेव ओदेर निकटे एसे बोललेन-हे कन्यादूटि । आमि तोमादेर पूजाय सोन्तुष्ट होयेछि-तोमरा वर प्रार्थना कोरो । कन्या दूटि हाथ जोड़े करे बोलले-देव ! आमादेर पिता अति गरीब, ताके धोन ओउ पुत्रदान कोरून । तथास्तु बोले सूर्यदेव अन्तर्हित होलेन ।

एई भावे प्रीति रोविवारे मेये दूटिर सूर्यदेवेर निकट वोर लाभ कोरते लागलो । एदिके वामूनेर कोपाल फिरलो । तार संसार उथले उठलो-धोने-पुत्रे लोकखीलाभ होलो । वामनीर मोने किन्तु सुख नेई, दिनरात कन्या दूटिर जोन्य कांदते थाकेन । एइभावे दिन जाय ऐकदिन कोन्या दूटि तादेर बाड़ि फिरे एलो । आर वामून ओ वामनी आदोर करे दू मेयेके कोले तूले निले । तादेर एखोन आर अभाव नेई-काजेई ओदेर यत्न देखे के ! कन्या दूटि किन्तु सेई थेके ईतूपूजा त्याग कोरेनी । ऐकदिन तादेर पूजा देखे वाप जिज्ञासा कोरलो-तोरा कि पूजा कोरछिस ? मेयेरा तोखोन सव कथा खूले बोललो । वामूनेर तोखोन ज्ञान होलो । तारपोरे वामून मेये दूटिके सूपात्र देखे विये दिलो । आर सेदिन थेके वामनीओ ईतूपूजा आरम्भ कोरलो । देखते देखते जोगते ईतूपूजार प्रचार होलो । तखन हते देश शुद्ध सकले ईतु देवीर पूजा करे मनर सुखे वास करते लागलो ।

सम्पर्क : W/o मानस कुमार घोष
जीरोमाइल, भागलपुर (बिहार)



शिवरात्री व्रत

बहु काल पुरे वाराणसी ते ऐक व्याध बास कोरतो। दिन रात से सुधू जीव होत्या कोरेई बेड़ाते । सेई व्याध ऐक दिन बोने शिकार कोरते बेड़िये छे । सारा दिन घूरे घूरे ओनेक पोशुपाखी मेरे छे । तार पोरे सांंध्या घोनिये आसतेई से बाड़ीर पोथे रउना दिलो ।

किछु दूर आसतेई रात्रि होय गालो । सारा दिन किछु खाय नी । तार ओपोर से दिन पोरिश्रम कोरे छे विस्तर । पोशुपाखीर प्रोकाण्ट दूटि बोझा होये छे । से आर चोलते पारछे ना । कि आर कोरे ऐकटि गाछ तोला देखे से भावलो । एखून आर जाइया सांभोव नेई । एखानेई रात काटाते होय । किन्तु एईभावे गाछेर नीचे थाका सांगोत नेई । हिंस्र जानोयार आसते पारे ।

काजेइ प्रोथमे से पोशुपाखीर बोझा दूटो के गाछेर डाले झूलिये बंधे राखलो । तार पोरे निजे सेई गाछेर ओपोरे उठे बोसे रयलो । एई गाछ टी छिलो एकटि बेल गाछ आर सेई गाछेर नीचे छिलो सिवेर एकटि लिंग मूर्ति । व्याध एपास-ओपास कोरार सोमोय सिसिरेर जोले भेजा एकटि बेलपाता गाछ थेके खोसे एई लिंग मूर्तिर माथाय पोड़लो ।

सेई दिनटि छिलो शिवरात्रि पूण्य तिथि । शिवेर माथाय बेलपाता पोड़ते शिव तो महाखुशी । एई व्याध निजेर ओजांतेई शिव चर्तुदशी ब्रोतेर फोल पेये गेलो । पोर दिन भोर बेला सेई व्याध गाछ थेके नेमे मोरा पोशुपाखि गुलि नियो बाड़ीते गिये हाजिर होलो ।

ब्याधेर बोउ रान्ना कोरे ताके खाबार जोन्नो डाकलो । ब्याध चान कोरे खेते बोसलो, आगेर दिन पूरो उपवास गेछे, तारओपोर पोरिश्रम । ताड़ा-ताड़ि से खाबार मूखे तूलते गेलो, एमोन सोमोय ऐक अतिथि एसे हाजिर । ब्याध मूखेर ग्रास नामिये रेखे हठात की खेयाले अतिथि आप्यायोने बेड़िये एलो । तार पोरे अतिथि के योत्न सोत्कारे खायिये शेषे निजे ओन्न जोल मुखे दिलो ।

ब्रोतेर फोल तो से आगेई पेये गिये छिलो, एबार ओतिथि के खाइये शेषे निजे खाउयार दोरुण तार पोरिणाम काजटि ओ आपना थेकेई होय गेलो ।

किन्तु एर पोरे ऐक आश्चर्य काण्ड । ब्याध भीषोण भावे ओदृश्य होये पोड़लो शेषे मोरेउ गेलो । योम दूतेरा ताकेनेबार जोन्नो एसे हाजिर । ओ दिके आबार एसे हाजिर होयेछे शिवेर चेलारा । दूई दोलेय दारुण युद्ध बेधे गेलो । शेष पोयोन्तशिवेर चेलारा योमेर दूत देर होठिये ताके नियो एलो कैलाशे । योमेर दूतेरा सेखान पोयन्त ओ धाओया कोरलो ।

पाहाराय छिलो नोन्दी । से तादेर ब्याधेर शिवरात्रि ब्रोत कोरार कोथा बोललो । तोखोन तारा मूख गोमड़ाकोरे जोमेर काछे फिरे गेलो । योम सोब सुने बोललेन-“ह्यां, जे लोक शिवेर ओथवा बिष्णूर भोक्त किंवा जे लोक शिव चर्तुदशीब्रोत कोरे किंवा जे लोक वाराणसी ते मोरे तार ओपोर आमार कोनो ओधाकार थाके ना ।” तार पोर थेके एई ब्रोतेर कोथा सोकोल देशे छोड़िये पोड़लो ।

—प्रस्तुति : वसुन्धरा

मकान नं. 304/22, शक्तिनगर, गुड़गांव, हरियाणा

अशोक षष्ठी व्रत

अशोकेर वोन । सेखाने ऐक मूनि वास कोरेन । ऐक दिन खूब भोरवेला घूम थेके उठेई तिन देखेनकि, छोटो एकटि भारी सुन्दरी मेये अशोक गाछेर तोलाय पोड़े पोड़े कांदछे । मेयेटिर मोत एमोन सर्वसुलोक्खना कया सोचराचोर दैखा जाय ना ।

तिनि मेयेटिके कोले कोरे आश्रमे निये एलेन । तारपोरे ओतिशोय यत्न सहकारे मानुस कोरे तुलते लागलेन । अशोक गाछेर तोलाय कूड़िये पेयेछेन बोले मेयेटिर नाम राखलेन अशोका । जाक मेयेटि आसते-आसते वेशबोड़ो होलो क्रोमे तार देहे यौवनेरसोमोस्त लोक्खनगुलि प्रकाश पेटे लागलो । ताई तनि मेयेटिर बिये देबार जोनोव्यस्त होये उठलेन । ऐक दिन सोकाले घूम थेके उठेई देखते पेलेनेऐक राजपुत्र किछु लोकजोन निये तार कूटिरेर सामने दाँछि ।

मूनिर मोने आनन्द धोरे ना । तनि राजपुत्र के तार संकोल्पर कोथा बोललेन एवं अशोकाके एने राजपुत्रे हाते सोम्प्रदान कोरलेन एरपोरेअशोकार आंचले कोतोकगुलि अशोक फूल आर अशोक बिचि दिये बोललेन, ऐई फूलगुलि शुक्रिये राखिश मा, आर चैत्र मासे अशोक षष्ठीर दिनएगुलो खेये निस आर अशोकेर बिचिगुलि एखान थेके श्वसुरवाड़ि पर्यन्त पोथे छोड़ाते छोड़ाते जास, बूझलि ? आमार इच्छे एखान थेके तोर श्वसुर-वाड़ि पर्यन्त अशोकेरऐक बीथिपथ तोयरी होक, जाते कोनो दिन विपद होले आमाके एशे तूई खबोर दिते पारिस । आर ऐक कथा मा, अशोक षष्ठीर दिन किन्तु कोखनोई भात खाबि ना ।

मूनि एईसोब बोलार पोरे अशोका मूनि के प्रोणाम कोरे हातिर दोलाय उठे श्वसुरवाड़ि दिके चोललो । अशोका मुनिर कोथामोते सारा पथेर दूई धारे अशोक बिचि छोड़ाते छोड़ाते गेलो ।

ओदेर दिनगुलि सुखे काटते लागलो । ऐक ऐक कोरे अशोकार सात छेले आर ऐक मेये होलो । छेले मेयेसा बोड़ो होलो । तादेर बियेओ होये गेलो । चैत्र मास, अशोक षष्ठीर दिन । सेई दिने आबार श्वसुरेर श्राद्ध । संझार सोमोय अशोका वोउदेर डाके बोललो, आज अशोक षष्ठीरदिन । आमि भात खाबो ना । तोमरा आमाके चारटि मूंग कोलाई फुटिये दियो ।

वोउरा ताई कोरलो । अशोका खेये देये शुये पोड़लो । पोरदिन घूम थेके उठे देखे एतो बेला होलो, तबू वउरा दोर खुलछे ना केनो ? अशोका दोरे-दोरे गिये छेले आर वउदेर नाम धोरे डाकलो । एकि, कोनो साड़ा नेई जे । शेष पर्यन्त दोर भांगते देखे कि, सोब मोरे पोड़े रये छे ।

कि होलो, किछूइ बूझते ना पेरे अशोका कांदते बोसलो । शेषे ऐक सोमय अशोक-बीथी धोरे हांटते-हंटते मुनिर आश्रमे गिये हाजिर होलो । सोब सुने मुनि ध्याने बोसलेन । ध्यान भग्न होले तनि बोललेन, कि जानिस मा, तोर वउमारा तोके जे घूटेर आगुन मूंग कलाई सिद्ध कोरे खाइये छिलो, सेई घूटेर भेतोरे एकटा धान छिलो । सेई धान फूटे खोई होय गिये सेई मूंग कलाईयेर हांडिते पोड़े छिलो । तार फोलेई ऐई ओघटन ।

मूनि बोललेन, कोनो चिन्ता करिस नि मा, आमार कमंडुलू थेके जोल निये जा । निये गिये सबार गाये छिटिये दिले सोब ठीक होय जाबे । तोबे मोने राखिस, मा, प्रति बोछोर चैत्र मासेर शुक्ला षष्ठीर दिन मूंग कलाई आर अशोक फलेर कलि दिये मा षष्ठीर पूजो कोरे छयटि मूंग कलाई आर अशोक कलि दोई दिये प्रथमे खेये निये पारे अन्य सोब खाबि । अशोका फिरे एसे कोमंडुलू जोल छिटिये दिते सवाई बेंचे उठलो । क्रोमे देशे-देशे ऐई कथा ओ अशोक षष्ठीर महात्म्य छोड़िये पोड़लो ।

—प्रस्तुति : वसुन्धरा

मकान नं. 304/22, शक्तिनगर, गुड़गांव, हरियाणा

षष्ठी (छठी) पूजा का महत्व एवं पूजन-विधि

भगवती षष्ठी को शिशुओं की अधिष्ठात्री देवी भी कहा जाता है। मूल प्रकृति के छठे अंश से उत्पत्ति होने के कारण इन्हें छठी देवी भी कहा जाता है। जिन दम्पतियों को संतान नहीं होती, वह उन्हें संतान देती है। संतान को दीर्घायु बनाती हैं एवं बच्चों की रक्षा करना इनका स्वाभाविक धर्म है। इन्हें ब्रह्मा जी की मानस पुत्री एवं भगवान कार्तिकेय की पत्नी के रूप में भी जाना जाता है। इनका एक और नाम देवसेना भी है। साथ-ही-साथ इन्हें विष्णुमाया तथा बालदा के नाम से भी कई स्थानों पर जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि माता षष्ठी अपने योग के प्रभाव से हर वक्त शिशुओं के आसपास ही वृद्धमाता के रूप में अप्रत्यक्ष रूप से मौजूद रहती हैं और उनकी रक्षा एवं भरण-पोषण करती हैं। ये बच्चों को स्वप्न में कभी हँसाती हैं, तो कभी रुलाती हैं, कभी खेलाती हैं, तो कभी अपना वात्सल्य प्रदान करती हैं। बच्चों के छठे दिन जो छठी मनाई जाती है, उसमें षष्ठी देवी की ही पूजा की जाती है। साथ-ही-साथ अन्नप्राशन जैसे मांगलिक कार्य पर भी इनकी ही पूजा की जाती है।



प्रस्तुति : प्रियंवदा सिन्हा
W/o भरत कुमार दास
आनंदबाग, भागलपुर

पूजन-सामग्री : 7 कुड़िया, 1 बड़ी ढकनी, पीला बड़ा कपड़ा, अदरक, 1 गुड़ चक्की, भूजा, 1 बाँस पत्ता, ताड़ पंखा, दही, दुबड़ी (दूब), हल्दी, धान, काला कलाई (साबुत दाल), करमी डोंग, अरुवा चावल, 11 कौड़ी, गीली मिट्टी, झुनझुने, कॉपी-कलम, काजल व कजरौटी (दादा एवं नाना घर के अलग-अलग, जो घर पर ही तैयार किये जाते हैं)

षष्ठी पूजन-विधि : सबसे पहले घर के किसी कोने को अच्छी तरह से साफ करने के बाद वहाँ दीवार पर घर जैसे आकृति बनाई जाती है, और उसमें मिट्टी की सात खड़ी रेखाएँ खींच कर 7 कौड़ियाँ चिपका दी जाती हैं (चित्र 1)। उसके बाद इस आकृति को पीले कपड़े से ढंक दिया जाता है। ऐसा करने के लिए गीली मिट्टी से कपड़े को चारों ओर से चिपका दिया जाता है। और उस पर 7 सीधी खड़ी रेखाएँ खींची जाती हैं। ठीक उसके नीचे धान और कलाई दाल (साबुत) की एक परत बिछाई जाती है और 7 कुड़ियों को उल्टा कर एक गोलाई में रख दिया जाता है। बीच वाले कुड़िया को ढकनी से ढँक दिया जाता है और इनपर सिंदूर व चौरठ (चावल का पीसा घोल) का हाथ से छाप लगाया जाता है (चित्र 2)। एक डलिया में भूजा, चक्की, अदरक, गुड़ आदि रख दिया जाता है। साथ-ही-साथ घर में षष्ठी में जो भोजन बनाया जाता है, उसे एक थाल में सजा कर वहीं रख दिया जाता है। यहाँ पर यह ध्यान देना जरूरी है कि चावल-दाल के साथ सात तरह के शाकाहारी व्यंजन बनाए जाते हैं।

षष्ठी पूजा में शिशु के पीसी माँ को अहम स्थान है। अगर पीसी नहीं हो तो यह काम दादी या मौसी करती है। षष्ठी के दिन दादा पक्ष के लोग तथा बरहै दिन (एक दिन बाद) नाना पक्ष के लोग पूजा-विधान में हिस्सा लेते हैं।

पूजा की विधि : पूजन में सबसे पहले शिशु की माँ को संकल्प करना होता है। इसके लिए दाहिने हाथ में अरुवा चावल व कलाई दाल तथा दूसरे हाथ में धान, दूब, बाँस पत्ता, करमी डोंग आदि रखना होता है। साथ-ही-साथ एक दीया जलाना होता है, तो अंत तक जलता रहता है। सबसे पहले सभी षष्ठी माता (बारह महीनों के तेरह महीने का साठ पूजा जाता है) को प्रणाम किया जाता है।

चैत मासे अशोक षोष्ठी दूर्बाय नमः

वैशाख मासे नील षोष्ठी दूर्बाय नमः

ज्येष्ठ मासे जामाई षोष्ठी दूर्बाय नमः

आषाढ़ मासे दूर्बाय नमः

सावन मासे लोटोन षोष्ठी दूर्बाय नमः

भादो मासे चापड़ा षोष्ठी दूर्बाय नमः
 आश्विन मासे दुर्गा षोष्ठी दूर्बाय नमः
 कार्तिक मासे दूर्बाय नमः
 अगहन मासे मूला षोष्ठी दूर्बाय नमः
 पूस मासे दूर्बाय नमः
 माघ मासे शीतोल षोष्ठी दूर्बाय नमः
 फागुन मासे षोष्ठी दूर्बाय नमः
 बारह मासे तेरो षोष्ठी दूर्बाय नमः
 नैहरार षोष्ठी दूर्बाय नमः
 सोसरालेर षोष्ठी दूर्बाय नमः
 सोब छेलेर मेयेर नाम धोरे षोष्ठी दूर्बाय नमः ।

इसके लिए माँ साठ व मोखा (घर के द्वार पर) में सिंदूर लगाती है । फिर बच्चे को एक पीले कपड़े में लपेटकर उसे बाँस के पंखे पर लिटा दिया जाता है । फिर एक दीया पास में ही रखकर तुरत जला कर तुरत बुझा दिया जाता है (चित्र 3)। फिर शिशु को माँ की गोद में दे दिया जाता है । पीसी शिशु को काजल लगाती है, जो उसे तुरत बनाना होता है (कई बार कुछ घंटों पहले बने काजल को ही दीये से सेकती (गर्म) है) । फिर शिशु की माँ को भी काजल लगाता है (और मजाक स्वरूप ऐसा करने के लिए कुछ चीजों की मांग भी करती है) । उसके बाद घर के कम से कम पाँच पुरुष शिशु को आशीर्वाद एवं चुमावन करते हैं । उसके बाद अन्य सदस्य भी आशीर्वाद एवं चुमावन करते हैं ।

इसके ठीक दूसरे दिन पाँच अभाती (महिलायें) भूखे पेट बरहै पूजन करती है, जिसमें शिशु को माँ की गोद में रखकर माँ के लटों को साठ से छुआकर उसे पानी डाल कर पीले कपड़े को उतार दिया जाता है । उसके बाद पाँचों अभाती शिशु का चुंबन करती हैं और आशीर्वाद देती हैं । इसके बदले माँ सभी अभातियों को मिठाई, भूजा, चक्की व गुड़ उन्हें आँचल में देती है । और षष्ठी पूजन सम्पन्न होता है ।



(चित्र 1)



(चित्र 2)



(चित्र 3)

रीति-रिवाज

लड़का-आशीर्वाद : विधि विधान

दही-01 कढ़ाई
कपड़ा
तौलिया
सेविंग किट
डायरी-कलम

गले की चेन या घड़ी यथासंभव
5 प्रकार का सूखा मेवा या फल
5 प्रकार का फल
खोआ की मछली
बक्सा या बी.आई.पी.

शुभ लग्न : पात्र के लिए

पाटवस्त्र (धोती+गमछा) लड़का की माँ के लिए
पटोरी या सिलक साड़ी, लाल पाड़ा एवं ब्लाउज
करधनी — 01
काठमाला — 01
जाम कौसा — 01
डलिया रंगाकर

जाम में 25 पान, 25 सुपाड़ी, चॉदी का पान, चॉदी
या पीतल की कटोरी एवं एक टुकड़ा चंदन
अंगूठी — 01
धान माला — 01
जाम में मिठाई — 11, 21, 51 आदि
डलिया में मिठाई — यथा शक्ति
सिंदूर, दूब, धान

दही कढ़ाई ;इस पर लौंग से मछली या स्वस्तिक बनाया जाता है ।

डलिया से सेव, केला, नारंगी, अनार, बेदाना आदि फल इच्छा एवं शक्ति के अनुसार सुसज्जित पैकिंग में दिया जाता है ।
लग्न लेकर ब्राह्मण एवं नाई के साथ इच्छानुसार कन्यापक्ष के लोग भी जा सकते हैं ।

लड़का पक्ष से वरमुट्ठी कौड़ी ;संख्या 5 या 7 जब तक नहीं आयेगा, लड़की थुबड़ा नहीं खा सकती है । नहीं आने पर पंडित
की सलाह लेकर विकल्प में बताये गये मार्ग पर चला जा सकता है ।

विवाह के विधानी सामान

लड़का विवाह

थुबड़ा:	खांचा खचली	—	01
धोती	सूपती मोनी	—	01
गंजी	चटकीनी	—	01
उबटन मसाला	मोर पटवासी विधानी	—	12
थाली	छोटा कलश ढक्कन सहित	—	09
गिलास	छोटी कुढ़िया ढक्कन सहित	—	09
सूप	हड़िया ढक्कन सहित	—	02
लाल धान	सरपोस	—	02
डोंमी बर्तन	ढकनी	—	05
चंगेरी — 02	कढ़ाई छोटा	—	01
डलिया छोटा — 01			

नान्दी मुख

धोती नान्दी मुख कर्ता का — 05	आईना छोटा — 10
गंजी नान्दी मुख कर्ता का — 01	कंधी छोटा — 10
साड़ी विदकरनी — 01	काठ किया — 10
गण साड़ी — 01	पीतल कटोरी छोटी — 10
साया बिदकरनी — 01	गुड़ड़ा-गुड़डी जोड़ी — 05
ब्लाउज बिदकरनी — 01	थैली-थैली मसालावाला
शंख	कजरौटी — 01
लहठी	सरोता — 01
जाला सूता	हिंगोरी — 01
बिहौती सिन्दूर	सिंधोरी — 01
पीतल किया (बड़ा)	कौड़ी — 03 दर्जन
बेतुआ	

तब्बक का सामान

चौंदा, तांबा, गुड, सरसों, काला तिल, तोला, पत्थर, मधु, दही, धान, दूब, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, हर्रा, अनार, केला, अरबा चावल, कवर तिल का लड्डू, नेचा, धनियाँ जायफल, खिसाड़ी, फुलबडी, छोलन, कौड़ी, बिहोती साड़ी, साया, ब्लाउज, मलमल कपड़ा मीटर आधा मीटर ;जनमगॉठ के लिए

अष्टमंगला बक्सा

साड़ी, साया, ब्लाउज, श्रृंगार प्रसाधन आदि

संदेश

चूड़ा, उखड़ा, खड़पूड़ी, तिल का लाडू, टिकरी, लड्डू, बतासा, गाजिया आदि

पष्ठी पूजन या साठ पूजन

राढ़ी कायस्थ और बंगाली कायस्थ दोनों समाज की महिलायें पूर्ण श्रद्धा के साथ पष्ठी पूजन का कार्यक्रम आयोजित करती हैं। यह पष्ठी पूजन कई प्रकारों का होता है, जिसमें कुछ प्रमुख निम्नंकित हैं :

1. नील पष्ठी : यह पष्ठी पूजन शिवपूजन के उद्देश्य से किया जाता है। इसमें बेलपत्र, धतूरा फूल, अपराजिता फूल आदि का उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य फूलों का प्रयोग भी किया जाता है। घी का दिया जलाकर संध्या में तुलसी चौरा के पास पूजन-अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है।
2. जमाय पष्ठी: ज्येष्ठ जेठ मास में आयोजित यह अनुष्ठान दमाद या जमाय के लिए किया जाता है। इसीलिए इसे जमाय पष्ठी कहा जाता है। यह बच्चों के लिए भी किया जाता है। इसे वर गाढ पष्ठी भी कहा जाता है। इसमें बड़ गाछ की पूजा की जाती है। दूध के संदेश से छोटी-छोटी गुड़िया बनायी जाती है और नये नये फलों— जैसे आम, लीची, जामुन, खीरा, खजूर, ताड़ कुआ आदि के साथ पूजन कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसमें बॉस का पंखा, ठेकुआ खबौनी कच्चा चला बॉच का डलिया बॉस का पत्ता, दूध दही, हल्दी सं रंगा हुआ कपड़ा आदि सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसमें महिलाये कथाएँ सुनती हैं। फिर सभी सामग्री बर गाढ से सटायी जाती हैं। बड़ी महिलायें अपने से छोटी को दही और हल्दी का टीका लगाती हैं। फिर पीला कपड़े का टुकड़ा कलाई में बाँध दिया जाता है। दोपहर में चूड़ा खया जाता है और रात में पूड़ी-सब्जी/धान और दूध का प्रयोग इस अनुष्ठान में सर्वथा वर्जित है।
3. अशोक पष्ठी: चैत्र चैत मास में आयोजित इस अनुष्ठान को चैती अथावा वा संती पष्ठी भी कहा जाता है। इसमें चैती दुर्गा पूजा और वासंती नवरात्र का आयोजन भी होता है। भगवान श्री राम और देवी सीता की मंगल कामना हेतु आयोजित इस अनुष्ठान का अशोक पष्ठी इसलिए कहा जाता है कि रावण ने सीता जी को अपहृत कर 'अशोक वाटिका' में ही कैद कर रखा था। इस पूजन कार्यक्रम में अशोक के फूलों का होना अनिवार्य माना जाता है। इसमें अशोक के फूल की कली को दही या केला में मिलाकर खाया जाता है।
4. चापरा पष्ठी: यह अनुष्ठान आषाढ मास में आयोजित होता है।
5. दुर्गा पष्ठी: आश्विन मास में दुर्गा पूजा में यह अनुष्ठान आयोजित होता है।
6. लोटन (लोटन) पष्ठी: यह सावन मास में आयोजित होता है। इसमें जिसे महिला को जितनी संतान होती है, उतने बच्चों के लिए खोआ का 14-14 लोटन बनाया जाता है।
7. शीतल पष्ठी: यह माघ मास में शुक्ल पक्ष के पष्ठी दिन आयोजित होने वाला अनुष्ठान है, जिसमें दही, हल्दी, कलाई, फल संदेश आदि के साथ पष्ठी देवी का पूजन होता है। सरस्वती पूजा के दूसरे दिन शिला पट्ट की पूजा की जाती है। उस रोज घर में चूल्हा नहीं जलाया जाता है और बासीखाना खाया जाता है। सरस्वती पूजा के रोज ही कलाई, सफेद सीम, सफेद बैंगन, रंगीन आलू, मिलाकर बनाया जाता है। जिसे दाल या डुप्फ या सिझौना कहते हैं। रात में ही चावल, सब्जी, बारा, पापड़ आदि बनाया जाता है और उसी दिन थोड़ा-थोड़ा निकालकर रख दिया जाता है जिसे दूसरे दिन पहले खाया जाता है।
8. मूलाषष्ठी: यह पूस मास में आयोजित होता है। इसमें पूजा के समय बारह मास तौरों पष्ठी दुखाय नमः ससुराल-नैहारा दुबाय नमः आदि कहा जाता है।

लिखा- पढी का मजमून

कन्या – पक्ष

!! श्री प्रजापतये नमः !!

ॐ स्वस्ति सकल मंगल मंगलाय गुण सागर गुणगारिष्ठ श्री.....ग्राम..... जिला.....
..... हालवासी..... को ग्राम जिला
..... हालवास का सविनय नमस्कार ।

निवेदनायन च कुशलायन च विशेष जो मेरी पुत्री/पौत्री/भतीनजी आयुष्मती आपके
पुत्र/पौत्र/भतीजा आयुष्मान् आत्मज श्री से चल
रहा था, सो हम लोगों को सब तरह से पसंद और स्वीकार है ।

अस्तु आपसे निवेदन है कि दोनो पक्षों द्वारा विवाह की शुभतिथि एवं शुभ समय का निर्धारण कर लेने पर आप
पात्र, ब्राह्मण एवं बारातियों के साथ निर्धारित विवाह-स्थल पर पधारकर विवाह संपन्न कराने की कृपा करें ।

स्थान : विनीत / निवेदक

दिनांक :

गवाह के हस्ताक्षर :

1.

2.

3.

4.

5.

नोट- लिखा पढी का मजमून की पंक्तिया बेजोड़ी (11,13,15,17 आदि होनी चाहिए)

वर-पक्ष

!! श्री प्रजापतये नमः !!

ॐ स्वस्ति सकल मंगल मंगलाय गुण सागर गुणगारिष्ठ श्री.....ग्राम..... जिला.....
..... हालवासी..... को ग्राम जिला
..... हालवास का सविनय नमस्कार ।

निवेदनायन च कुशलायन च विशेष जो मेरी आत्मज/पौत्र/भतीजा आयुष्मान् सुपुत्र
...का शुभ विवाह प्रस्ताव आपकी सुपुत्री/पौत्री/भतीजा आयुष्मती..... से चल रहा था, सो हम
लोगों को सब तरह से पसंद और स्वीकार है ।

अस्तु दोनों पक्षों द्वारा शुभविवाह की तिथि एवं शुभ समय का निर्धारण कर लिए जाने पर हम पात्र, बाह्मण एवं
बारातियों के साथ निर्धारित विवाह-स्थल पर पहुँचकर विवाह संपन्न करायेंगे

स्थान : विनीत / निवेदक

दिनांक :

गवाह के हस्ताक्षर :

1.

2.

3.

4.

5.

Complied by Mrs. Smita Das, Faridabad

लोटोन षष्ठी व्रत

एक ग्रामे एक घोर कायेत छिलो, कायेत-वेश कादम्बिनी छिलो घरनी गिन्नी । छेलेमेये-नाति-नातनीते संसार तार भोरपूर । पूजो पार्वनेर कोनटिई से वाद देय ना सारा वोछोर ।

श्रावनेर शुक्ना षष्ठीते भक्ति ओ यत्न करे कादम्बिनी षष्ठी-पूजोर आयोजोन कोरेछे । पाड़ार गिन्नीवानी मेयेरा सवाई निजेर निजेर छेलेमेये निये तार वाड़ीते पूजो देखते एशेछे । तादेर मोध्ये छिलो विमलिर पिसि बोले ऐकटि आधावयसी मेयेलोक । स्वभाव-चरित्रर तार एमनितेई भालो छिलो ना, तार मोध्ये आवार एकटू आधटू लोभओ छिलो । सवाई पूजो टूजो देखे जोखोन प्रसाद निये वाड़ी चोले गेलो तोखोन ओ विमलिर पिसि आर उठते चाय । ना । किछूखन वादे कादम्बिनीर डाक पोड़लो भेतोर वाड़ीते सेते । से तोखोन ठाकूरघरेर सामने विमलिर पिसिके देखे बोललो-“ह्यांगा ! एकटू थाकवे एखाने ? आमि एकखुनि आसछि । जेन किछूते मूख देये ना ।”

विमलिर पिसि माथा नेड़े बोललो-“जाओ, आमि तो रयेछि ।”

हठात विमलिर पिसिर चोखे पोड़लो षष्ठीर आसनेर काछे एकटा वोड़ो कोटो रयेछे । ताड़ाताड़ि खूले देखे जे तार मोध्ये रयेछे छःटि सोनार लोटोन । एमोन समय तार काने एलो कार जेन पायेर आओयाज । ताड़ाताड़ि तिनटि कोन ओ रकमे तूले निये येमोन कोटो छिलो, तेमनि रेखे दिलो से ।

ईतिमोध्ये कादम्बिनी एसे पोड़लो तार सामने; मोने एकटू सौन्देह होलो ओ से विशेष आर किछू बोललो ना । किछू प्रसाद दिये विदाय दिलो ताके ।

किन्तु पोरे जेखोन कादम्बिनीर चोखे पोड़लो जे कोटो थेके तिनटि लोटोन उधा ओ होयेछे, तोखोन से चेपे धोरलो विमलिर पिसिके । तवू ओ किन्तु से ताके स्वीकार कोराते पारलो ना ।

कोयेकदिन पोरेर घोटना । विमलिर पिसिर तिनटि छेले ऐकसोंगे वोड़ो रोगे पड़ेछे, वांचवार कोन आशा नेई । एमोन अवशथाय ऐकदिन राते से स्वपन देखलो, ऐकटि सधवा मेये ताके बोलछे, “हतभागि ! आमि के जानिश ? जार सामने थेके कादम्बिनीर कोटोर तिनटि लोटोन चूरि करेछिस, आमि सेई षष्ठीदेवी । जोदि निजेर कोल्याने चास, शीग्रगिर लोटोन फिरिये दिये आय ।

ताई सोकाल होते ना होतेई से लोटोन तिनटि निये छूटे गेलो कादम्बिनीर वाड़ी । सेखाने गिये नाके-काने वारवार खत दिये लोटोन तिनटि फिरिये दिलो एवं स्वप्नेर कोथा खूले बोललो ।

कादम्बिनी सोब शुने तोके धमके बोललो, “ह्यांगा, तूमि मायेर चोखे धूलो दिते पारवे कोखनोउ ? मा जे भीसोन शाशित देबेन । आर कोखनोउ जेनो एमोन काज जीवने कोरो ना; आर एबार थेके मा षष्ठीर व्रत कोरो । देखबे ताहले तोमार छेले पूले सोब भालो थाकवे आर कोतो धनरोत्नेर मालिक होबे तूमि ।”

विमलिर पिसि कादम्बिनीर काछे थेके षष्ठी पूजोर नियम जेने निले जे, प्रीति वोछोर श्रावण मासेर शुक्लाषष्ठीर दिने घोलमूखुनिते वांशपाता वेंधे जोले पूंतते होबे आर जेटि छेले तादेर कल्याने ततटि जालि झिडे ओ कलाई भिजान दिये मा षष्ठीर पूजो करते होबे खूब भक्तिभावे । पूजोर शेषे व्रत कथा शुने तबे जोल खेते होय ।

विमलिर पिसि दोड़े एलो वाड़ीते एवं ठाकूरघोरे निरिविलिते गिये मा षष्ठीर नामे माथाखूड़े बोलते लागलो-“हे मा षष्ठी । आमार छेलेदेर दया कोरो वांचिये तोल मा ! आमि आजीवन तोमार व्रत पालन कोरवो एबार थेके ।”

मायेर अपार कृपाय विमलिर पिसिर छेलेरा अल्पदिनेई भालो होये गेलो । तारपोरे थेके विमलिर पिसि कादम्बिनीर संगे लोटोन षष्ठीर व्रत कोरते लागलो वोछोर वछोर ।

षष्ठीर लोटोन लूटे वा चूरि हयेछिलो बोले एई व्रतेर अपर नाम होलो लूटोन षष्ठी । एई व्रत कोरले कखनोउ पूत्रशोक होये ना ।

—प्रस्तुति : कनुप्रिया घोष

बनौना पूजन

सामग्री : केला, खीरा, झिंगली, चना एवं फल (पाँच तरह का) । आम्र पल्लव (आम का डंठल पत्ता लगा हुआ), दूर्वा (दुबड़ी), फूल, तुलसी पत्ता, गंगा जल, अगरबत्ती, दीप-धूप, पीला कपड़ा (1 मीटर), छोटा मिट्टी का गमला, इन्द्र देवता की हाथी पर विराजमान मूर्ति (न मिले तो सिर्फ हाथी की मूर्ति), अरवा चावल, धान, बाँस की सींक

पकवान : खबोनी, खाजा, मिठाई, गोजिया आदि ।

पूजन-विधि : नवविवाहित दम्पति द्वारा विवाह के पहले वर्ष में भादो पूर्णिमा के अगले दिन अपने सुखमय विवाहित जीवन की कामना के साथ पूजा जाने वाला बनौना पूजन भादो मास के ही मुख्य देवता इन्द्र को समर्पित है । चूँकि इस पूजन के मुख्य देवता इन्द्र हैं, अतः इसके प्रतीक के रूप में हाथी की पूजा की जाती है । सबसे पहले पूजा के लिए पीढ़ा या सिंहासन पर आसन बिछाकर हाथी को स्थापित कर पीला कपड़े का वस्त्र ओढ़ाते हैं । छोटे गमले में आम का डंठल गाड़ दिया जाता है और हाथी के बगल में रखा जाता है । सिंहासन के सम्मुख आम्र पल्लव से कलश स्थापना करते हैं, जिसके लिए धान व चावल पर कलश में पानी भर कर रखा जाता है । पुष्प, दूर्वा (दुबड़ी), पान-सुपाड़ी आदि पूजन-सामग्री का अन्य पूजा की तरह ही उपयोग होता है । भोग के रूप में इसमें मुख्य रूप से खीरा, औँकरी (भिँगोया चना) एवं झिंगली अनिवार्य रूप से प्रयुक्त होता है । कई बार झिंगली को गोल-गोल काठ कर बाँस सींक की मद से बाथी के सूँढ़ में भी फंसा दिया जाता है । इसके अलावा विभिन्न प्रकार के फल एवं पकवान, जैसे



खबोनी, खरपूड़ी, गुजिया, मिठाई इत्यादि भोग लगाते हैं । लड़की के मायके से

इस अवसर पर मिठाई एवं पकवान आने की भी परम्परा है । पूजन के समय लड़की अपनी बिहोती साड़ी, अपने समस्त जेवर एवं पटवासी (मुकुट) के साथ पहनती है एवं लड़का अपने पाठ वस्त्र के साथ मोर (मुकुट) पहनता है । पूजन के समय लड़का व लड़की का गेठ जुड़ा रहना चाहिए । लड़के की अनुपस्थिति में पीतल का लोटा या कलश के साथ लड़की का गेठ जोड़कर



पूजा सम्पन्न कराया जाता है । पंडित जी द्वारा पंचदेवता की पूजा के पश्चात इन्द्र देवता की पूजा/कथा कराई जाती है । पूजा/कथा सम्पन्न होने पर लड़का-लड़की हाथी और आम डंठल की पाँच बार परिक्रमा करते हैं तथा प्रत्येक परिक्रमा पर लड़की आम डंठल के गले लगती है । इस दिन लड़का-लड़की को अलोना (बिना नमक का) भोजन करना चाहिए ।



मनीषा घोष
D/o सुमंत घोष
मोहनपुर, देवघर

प्रस्तुतिद्वय

राखी
w/o प्रशांत कु. मजूमदार
उत्तम नगर, नई दिल्ली



**“AKHIL BHARTIYA RADHI KAYASTHA SANGATHAN”
NEW DELHI**

(Registration No.: S/63768/2008)

REGISTRATION FORMS

SR. NO.: /2021

Name of Head of the family (With blood group) _____

Nick Name if any _____

Father's/Husband's name _____

Grand Father's name _____

Spouce's name _____

(With blood group)

No. Of Children (With Blood Group): (i) Son(S) (ii) Daughter(S)

Village, taluka, district to which originally He/She belongs

(Ancestral home address)

Village, taluka, district where He/She stayed for longer time

(Previous Home Address) _____

Present Address _____

Contact details (Phone no.)

Mobile: _____ Residence: _____ Office: _____

E-mail ID: _____

ANY other information: _____

(Like working with, designation etc.)

House: _____ Self/Rented/Official quarter

Gotra: _____

Remarks, if any _____

Date: _____

Signature: _____

Notes:

- 1) Registration fee: Rs 100/- only
- 2) Annual subscription fee: Rs 500/- only
- 3) Life membership (subscription) fee: Rs 10,000/- & Rs 5,000/- for senior citizen.
- 4) All above mention information shall be written in capital letters only.
- 5) All family members name shall be written with blood group.
- 6) Above-stated information can be used for useful purposes as required.
- 7) Also same can be put in our website www.abrks.com without further consent of members.
- 8) Details of children viz. name, age, education etc.
- 9) For marriageable (if any), hobby, service, business etc. may be submitted in the attached Annexure-I which can be used for matrimonial purposes.

FOR OFFICE USE:

1) Date of Receipt: _____ 2) Receipt No.: _____ 3) Amount: _____

4) Type of Membership: Annual/Life" _____ 5) Signature: _____

Annexure-I

(A) Daughter(s):

- 1) Name: _____
- 2) Age as on 1.11.20) _____
- 3) Educational Qualifications: _____
- 4) Any liking/choice for would be groom:
(viz. colour/range of salary/height etc.) _____
- 5) Details of service/business with phone nos. (if doing): _____
- 6) Earnings per month (optional): _____
- 7) E-mail address and website where her profile can be seen) (optional): _____
- 8) Hobby: _____
- 9) Any achievement: _____

(B) Son(s):

- 1) Name: _____
- 2) Age as on 1.11.20) _____
- 3) Educational Qualifications: _____
- 4) Any liking/choice for would be groom:
(viz. colour/range of salary/height etc.) _____
- 5) Details of service/business with phone nos. (if doing): _____
- 6) Earnings per month (optional): _____
- 7) E-mail address and website where her profile can be seen) (optional): _____
- 8) Hobby: _____
- 9) Any achievement: _____

Signature of the applicant: _____

Dated: _____

(Extra paper may be used to cover all its related matters)

Any wish/comment of head of the family wants to convey for matrimonial purposes of their children:



Please visit us at: www.abrks.com

- You may find members directory on the website along with introduction of Executive Body since its inception. Many useful information, picture gallery etc are available here.
- You may register for matrimonial section as well on the website.

Also connect with us at –



Facebook <https://www.facebook.com/abrks.delhi>



Instagram <https://www.instagram.com/abrksdelhi/>



Twitter <https://twitter.com/AbrksD>



YouTube Channel Name: ABRKS Delhi

ACCOUNT DETAILS OF :

AKHIL BHARTIYA RADHI KAYASTHA SANGATHAN, NEW DELHI,

A/C NO- 520101012470038

UNION BANK, VAISHALI BRANCH (08851),

IFSC CODE- UBIN0908851



REACH US !

C-5, 2nd Floor, RK Tower, Plot No. 21-22, Sector 4, Vaishali, Ghaziabad, UP

email : info@abrks.com

[f https://www.facebook.com/abrks.delhi](https://www.facebook.com/abrks.delhi) | [YouTube ABRKS Delhi](https://www.youtube.com/abrksdelhi) | www.abrks.com



डॉ. जे. पी. सिन्हा

M.B.B.S. (Hons.), D.Ortho (Patna),
M.S. (Surgery), FAIS, FAIGES, FACRSI

जनरल सर्जन, लेप्रोस्कोपिक सर्जन एवं हड्डी विशेषज्ञ

Pride HOSPITAL
TREATMENT WITH CARE
हटिया रोड, तिलकामांझी, भागलपुर (बिहार)

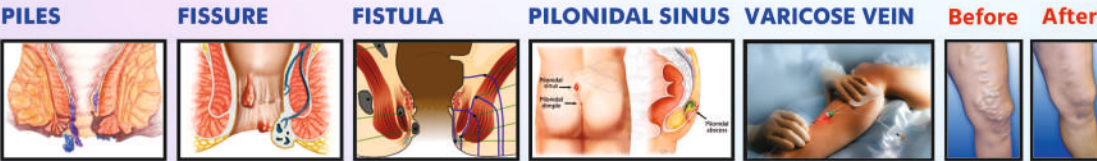


भागलपुर का एकमात्र लेजर मशीन द्वारा
बवासीर (पाइल्स), फिशर्स और फिसचुला का
आधुनिक तरीके से बिना चीर फाड़ के 1000 से
ज्यादा सफल ऑपरेशन।



Lasotronix
LASERS FOR GENERATIONS
लेज़र मशीन

गंभीर तरह के फिसचुला (भकंदर)
का भी 100 से ज्यादा सफल
ऑपरेशन।



लेज़र के फायदे

- ऑपरेशन के पश्चात कम से कम तकलीफ।
- रक्तस्राव व दर्द कम एवं कम समय में ही अस्पताल से छुट्टी।
- किसी भी पारंपरिक इलाज से बहुत प्रभावी एवं गुणकारी।
- फिर से होने की संभावना सबसे कम।



C - ARM

इस मशीन द्वारा कंप्यूटर
पर देखकर टूटे हड्डी का
प्लास्टर एवं ऑपरेशन।



LAPAROSCOPY

लेप्रोस्कोपी मशीन द्वारा
पित्त थैली की पथरी
(Gall stones) एवं

अपेंडिक्स का ऑपरेशन सुविधा, अंडाशय (ovary) के
गोले (cyst) एवं बंध्याकरण ऑपरेशन की सुविधा।



आयुष्मान कार्ड धारक रोगी
का मुफ्त में सर्जरी के एवं टूटे
हड्डी का मुफ्त ऑपरेशन की
व्यवस्था।
ऑपरेशन के बाद मुफ्तरहने
की सुविधा एवं दवा भी मुफ्त
डिस्चार्ज के बाद 15 दिनों की
दवा दी जाएगी।



प्राइड हॉस्पिटल

Empaneled with



Health ki Guarantee



Applied for empanelment with



प्राइड हॉस्पिटल की अन्य सुविधाएं

- हाइड्रोसील हर्निया, किडनी स्टोन, प्रोस्टेट का किफायती ऑपरेशन।
- A/C, Non A/C रुम, आधुनिक ऑपरेशन थिएटर, एक्स-रे, फार्मसी।
- आधुनिक ऑपरेशन थिएटर
- 24 घंटे फार्मसी, डिजिटल एक्सरे, पैथोलॉजिकल जांच की सुविधा एक ही छत के नीचे।
- एनएसवी (NSV) द्वारा बिना चीर फार पुरुष नसबंदी।
- व्यवहार कुशल एवं प्रशिक्षित एवं पारा मेडिकल स्टाफ़।

नई सुविधा • TMT की सुविधा • SPIROMETRY की सुविधा • आधुनिक ECG मशीन

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

सुन्दर लाल हजारी

आनन्द पटेल

क्लिनिक



0641-2610613

9931445932

9570712221

8434347073